संरक्षक सदस्य

श्रीमहन्त पू. स्वामी हरिहरानन्द सरस्वती, श्रीमहन्त विद्यानंद सरस्वती, स्वामी रविन्द्रानन्द सरस्वती, स्वामी देवानन्द सरस्वती, श्री प्रवीन अग्रवाल, श्री अनिल चौधरी, श्री बी.एन. तिवारी, डॉ. संजय सिन्हा, श्री नरेन्द्र सोमानी, श्री आर.के. सिंह, श्री प्रशान्त सोमानी, श्री राजेन्द्र सिंह, श्री शशिधर सिंह, श्री ब्रजकिशोर सिंह, डॉ. संजय पासवान (पूर्व केन्द्रीय मंत्री), स्वामी विवेकानन्द,

प्रधान सम्पादक/संस्थापक

महामंडलेश्वर

डॉ. स्वामी उमाकान्तानन्द सरस्वती जी महाराज

प्रबन्ध सम्पादक - प्रो. वीरेन्द्र अग्रवाल

कार्यकारी सम्पादक - **श्री प्रेमशंकर ओझा**

सम्पादक मण्डल - शत्रुघ्न प्रसाद, बालकृष्ण शास्त्री, श्रीमती राखी सिंह, अभिजीत तुपदाले, डॉ. दीपक कुमार, डॉ. हरेश प्रताप सिंह, श्री कुलदीप श्रीवास्तव, डॉ. सुखेन्दु कुमार, दिनेशचन्द्र शर्मा

आवरण सज्जा - आनन्द शुक्ला

व्यवस्था मण्डल - श्री वीरेन्द्र सोमानी, श्री संजय अग्रवाल, राजेन्द्र प्र. अग्रवाल (मथुरा वाले), श्री सुभाषचन्द्र त्यागी, श्री गोपाल सचदेव, श्री रविशरण सिंह चौहान, श्री महेन्द्र सिंह वर्मा, श्री राजनारायण सिंह, श्री अश्विनी शर्मा, श्री सुरेश रामबर्ण (मॉरीशस)

वित्तीय सलाहकार - श्री वेगराज सिंह

विधि सलाहकार - श्री अशोक चौबे

परामर्श एवं सहयोग-श्री राजेन्द्र अग्रवाल, श्री श्यामबाबू गुप्ता, श्री शिलेश्वर मानिकतला, श्री नरेन्द्र वाशनिक (निक्की), श्रीमती नैना बेनबीड़ीवाला

विज्ञापन व्यवस्था - श्री दयाशंकर वर्मा

प्रमुख संवाददाता - श्री मोहन सिंह

(प्रकाशन में लगे सभी व्यक्ति अवैतनिक है)

मूल्य - 25/-

वार्षिक चन्दा - 150/-

आजीवन - 3000/-

दिल्ली सम्पर्क सूत्र : 305-308, **प्लाट नं.** 9, **विकास सूर्या गैलेक्सी, सेक्टर-**4, **सेन्ट्रल मार्केट, द्वारका, नई दिल्ली-**110075

मोबाईल +91-8010188188

सम्पर्क सूत्र :

महामंडलेश्वर डॉ. स्वामी उमाकान्तानन्द सरस्वती जी महाराज

आदर्श आयुर्वेदिक फार्मेसी, कनखल, हरिद्वार (उत्तराखंड)

फोन- 01334-2626 00, मोबाइल-09897034165

E-mail: Umakantmaharaj@hotmail.com, swamiumakantanand@gmail.com

शाश्वत ज्योति

शाश्वत दर्पण

- **अर्न्तमन से** ❑ म.म. स्वामी उमाकान्तानन्द सरस्वती जी महाराज 2
- शिव कथा- **अविरल अमृत प्रवाह** ❑ म.म.स्वामी जी महाराज..... 3
- गीता काव्य- **गीता महिमा** ❑ माधव पाण्डेय निर्मल 8
- इतिहास-संस्कृति-**सूत्र साहित्य का संक्षिप्त परिचय** ❑ डॉ. देवेन्द्र गुप्ता 10
- ऐतिहासिक गाथा-**गोल मेज सम्मेलन** ❑ साभार 12
- हास्य व्यंग्य-**मुफ्त में ईमानदारी** ❑ दीपक भारतदीप 14
- मार्गदर्शिका-**जीवन में लक्ष्य का होना जरूरी क्यों** ❑ निर्मल पाण्डेय..... 16
- आयुर्वेद-**रास्ना खाइए-दर्द भगाइए** ❑ वैद्य दीपक 18
- ज्योतिष-**जानिए कैसे ? मणिबंध रेखाएं खोलती है आयु का राज** ❑ आचार्य कौशल पाण्डेय 20
- अंतर के खजाने-**खुशी पाने की चाह** ❑ मनोहर लाल 21
- प्रेरक प्रसंग-**स्वामी विवेकानंद के बताए इस फार्मूले से से कोई भी** ❑ स्वामी उमाकान्तानंद सरस्वती जी महाराज 23
- ऐतिहासिक धरोहार -**इसी जगह से रावण ने किया था देवी सीता का हरण** ❑ प्रो. वीरेन्द्र अग्रवाल 23
- व्यंग्य कहानी-**सन्यासी गृहस्थियों की सभा में** ❑ रितेश पाण्डेय 25
- धार्मिक आस्था-**हिन्दू धर्म में वृक्षों की पूजा क्यों ?** ❑ अतुल गर्ग 26
- मान्यता-**मोर पंख छिपे हुए शत्रुओं से बचाता है** ❑ लीलाशंकर पाण्डेय 27
- प्रेरक प्रसंग-**नागरिक का फर्ज** ❑ पंकज पाण्डेय 28
- प्रेरक प्रसंग-**माता-पिता की सेवा न करने का फल** ❑ पंकज पाण्डेय..... 28
- धर्म-कर्म-**श्रीराम जी का बन्धु प्रेम** ❑ स्वामी उमाकान्तानंद जी..... 29
- धार्मिक तर्क-वितर्क-**मंदिर का निर्माण क्यों** ❑ बृजेश ओझा 31
- धार्मिक तर्क-**धर्मकृत्यों में पुष्पार्पण क्यों** ❑ नरेश चौहान 32
- रोचक तथ्य-**भारतीय विद्यार्थी, एलोरा का 10 रोचक तथ्य** 33
- अध्यात्म-**मानव जीन का लक्ष्य** ❑ स्वामी उमाकान्तानंद जी 34
- घरेलू नुस्खे-**हकलाते है तो तेजपत्ते का सेवन कीजिए** ❑ अल्का सर्वत मिश्रा 38
- ज्योतिष-**सपने भी कुछ कहते है** ❑ कौशल पाण्डेय 39
- व्यंग्य-**दिन और रात** ❑ शैल अग्रवाल 40
- **चिन्तन** ❑ म.म.डॉ. स्वामी उमाकान्तानंद सरस्वती 41
- वंश-वंशावली-**पीढियों में अन्तर** ❑ रमन शर्मा 42
- प्रेरक प्रसंग-**विजेता हर काम को** ❑ ज्ञानी पंडित 44
- ऋषि चिंतन-**बुरा जो देखन मैं चला** ❑ पं. श्रीराम शर्मा 44
- आभास-**आजादी कितनी प्यारी है-एक ऊँट** ❑ साभार 45
- ऐतिहासिक गाथा-**वीरांगनाओं को सलाम** ❑ प्रो. वीरेन्द्र अग्रवाल..... 46
- **व्रत त्यौहार** 48

स्वामित्व-डिवाइन श्रीराम इण्टरनेशनल चैरिटेबल ट्रस्ट (रजि.) के लिए मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक- डॉ. स्वामी उमाकान्तानन्द सरस्वती द्वारा माँ गायत्री ऑफसेट प्रिन्टर्स, आर्यनगर, ज्वालापुर, हरिद्वार (उत्तराखंड) से मुद्रित तथा आदर्श आयुर्वेद फार्मेसी कनखल, हरिद्वार से प्रकाशित। साज सज्जा: स्वामिनारायण प्रिंटर्स, फोन- 09560229526, 011-45076240

अंतर्मन से.....

आत्मीय पाठकों/भक्तों,

जीवन में बहुत उतार-चढ़ाव है, आपाधापी है, संघर्ष है। लगता है कि जीवन में कोई आनन्द नहीं है। जीवन संग्राम तथा युद्ध भूमि जैसा प्रतीत होता है। हर आदमी अपने आप में परेशान है। अधिकतर लोगों की बड़ी-बड़ी कौन कहे, छोटी-छोटी आकांक्षाये भी अधूरी रह जाती है। हर आदमी की इच्छा होती है कि वह जीवन में कोई विशेष मुकाम हासिल करे लेकिन सबके लिये यह सम्भव नहीं हो पाता। आखिर इसका कारण क्या है?

वास्तव में जीवन एक पानी वाले जहाज की तरह है-जहाज बहुत बड़ा है, सुन्दर है, उसमें अधिकारी भी है। उसमें सारी सुविधाएं हैं परन्तु उसे सही दिशा में लें जाने वाला कोई कैप्टन नहीं है। इस अवस्था में जहाज का क्या होगा? ऐसा जहााज लक्ष्य तक कभी नहीं पहुँच पाएगा। या तो किसी खाड़ी में गिर जायेगा अथवा किसी टापू से टकरा कर नष्ट हो जायेगा। कैप्टन अर्थात् सही दिशा में ले जाने वाला गाईड।

मस्तिष्क में एक साथ हजारों विचार तरंगे आती है। उनमें से अधिकतर अनावश्यक और अलूल-जलूल होती है। विचारों को.सही दिशा देकर लक्ष्य तक पहुँचाने वाले कैप्टन के अभाव के कारण नियत लक्ष्य की प्राप्ति नहीं हो पाती। एक निश्चित लक्ष्य के अभाव में जीवन का जहाज भटकते-भटकते नष्ट हो जाता है।

जीवन में सफलता पाने का एक ही मूल मंत्र है कि अपने मन और विचारों को अवारा कुत्ते की तरह न भटकने दें। विचारों को नियंत्रित करें, उसे परिष्कृत करें, जीवन में एक निश्चित लक्ष्य तय करें और उसके लिए एक रोड मैप बनाएं। फिर लक्ष्य से सम्बंधित विचारों को इकट्टा करें। इसके लिये वैसे ही साहित्य का अध्ययन करें, वैसे ही लोगों के सम्पर्क में रहें, इरादा पक्का रखें और विश्वास रखें कि आपको लक्ष्य की प्राप्ति होगी ही।

सफल लोगों में मौलिक रूप से सामान्य तौर पर यह गुण पाया जाता है वो कभी नकारात्मक नहीं सोचते। एक कुशल वाहन चालक की तरह अन्जान जगह पर भी जाना हो तो पहले कहाँ जाना है ये तय करते है फिर वहाँ का नक्शा तय करते हैं और उसी आधार पर चलते हुये बड़ी आसानी से गन्तव्य तक पहुँच जाते हैं। जाग्रत रहते है। मेहनत करते है। दृष्टि हमेशा लक्ष्य पर रखते है। जीवन में सारा खेल विचारों का है। जार्ज बर्नाड शाँ कहा करते है थे कि लोग परिस्थितयों को अपने विफलताओं के लिए दोष देते है। मैं इसमें विश्वास नहीं करता। मैं मानता हूँ जैसा हम सोचेंगे परिस्थिति वैसी ही हो जायेगी। सेक्सपियर का कहना था कि आदमी की सफलता में उसकी नकारात्मक सोच और शंका बहुत बड़ी बाधक है। शंका के और भय के कारण हम जो कर सकते है वह भी नहीं कर पाते। पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य ने लिखा कि जो जैसा सोचता है और करता वह वैसा ही बन जाता है। भगवान बुद्ध का कहना था आदमी का भीतरी संसार जैसा होता है। उसका बाहरी संसार भी वैसा ही होता है और भीतरी संसार का मतलब है कि हमारे विचार। अपने देश के पूर्व राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के जीवन की एक घटना का जिक्र उन्होंने अपनी जीवनी में लिखा है कि मैं बचपन से आसमान में उड़ने का सपना देखा करता था। लेकिन पढ़ाई पूरी होने के बाद दो जगह आवेदन दिया एक दिल्ली जो सेना के लिए था और दूसरा देहरादून जो एयर फोर्स का था। देहरादून के इन्टरब्यू में २५ विद्यार्थियों में एक का चयन होना था। हमारा नौवां स्थान आया। मैं बहुत दुखी हुआ। ऋषिकेश पहुँच गया। गंगाजी में स्नान किया। सामने पहाड़ी पर बने स्वामी शिवानंद जी के आश्रम पहुँचा। उन्हें देखकर मैं बहुत प्रभावित हुआ। मुझे निराश देखकर उन्होंने कहा, ''दुखी मत हो। हमारे विचारों में एक अद्भुत इलेक्ट्रो मैगनेटिक शक्ति होती है जो रात के अंधेरे में जब हम सो जाते हैं तो वो विचार निकल जाते हैं और अनन्त तारों और ब्रह्माण्ड की शक्ति अपने में समेटे वापस आ जाते हैं और उसे पूरा करने में लग जाते हैं। अतः जो तुमने सोचा है उकी सृष्टि सुनिश्चित है।'' इतिहास गवाह है कलाम साहब सपना पूरा हुआ।

अतः जीवन में निराशाजन विचारों को स्थान न दें। अच्छा सोचें और लक्ष्य पर दृढ़ रहें। सफलता और जीवन में आनन्द अवश्य आयेगा।

स्वामी उमाकान्तानन्द सरस्वती

(स्वामी उमाकान्तानन्द सरस्वती)

शिव कथा-

अविरल अमृत प्रवाह

-महामंडलेश्वर डॉ. स्वामी उमाकान्तानन्द सरस्वती जी महाराज

गतांक से आगे

पार्वती का स्वप्न

ब्रह्माजी बोले-हे नारदजी! कुछ समय के बाद एक बार मैना ने हिमाचल के पास जाकर प्रणाम किया, फिर नम्रता से कहने लगीं-हे पतिदेव! पुत्री पार्वती अब विवाह योग्य हो गई है। अब किसी सुन्दर गुणयुक्त वर के साथ इसका विवाह होना चाहिए। इस गुणवती सुन्दर कन्या को इसके समान ही वर मिले तभी यह प्रसन्न रह सकेगी। हिमाचल बोले-हे देवि! तुम इस प्रकार का संशय ही मत करो। नारदजी के वचन कभी असत्य नहीं होते। यदि अपनी पुत्री से प्रेम रखती हो तो पुत्री को भगवान् रुद्र की प्रसन्नता के लिए तप करने के लिए कहो। जब भगवान् रुद्र ही प्रसन्न होकर इसे अपनी पत्नी बनाना स्वीकार कर लेंगे तो उनके बुरे लक्षण भी उत्तम एवं शुभ होंगे। इतना सुनकर मैना प्रसन्न हो गईं। किन्तु उमा की कोमलता देखकर मन व्याकुल-सा हो गया और आँखों से अश्रुधारा बह चली। मुख से वाणी न निकल सकी। तब सब के मन का भाव जानने वाली श्री उमाजी ने माता के

ब्रह्माजी बोले-हे नारदजी! कुछ समय के बाद एक बार मैना ने हिमाचल के पास जाकर प्रणाम किया, फिर नम्रता से कहने लगीं-हे पतिदेव! पुत्री पार्वती अब विवाह योग्य हो गई है। अब किसी सुन्दर गुणयुक्त वर के साथ इसका विवाह होना चाहिए।

भाव समझ कर उन्हें धैर्य देकर कहा–हे माताजी! मैंने आज रात एक विचित्र स्वप्न देखा है जिसमें मुझे एक तपस्वी ब्राह्मण के दर्शन हुए। उसने प्रसन्न होकर दया के द्वारा मुझसे कहा कि तू भगवान् रुद्र की प्राप्ति के अर्थ तप कर। श्री पार्वतीजी से इतना सुनकर मैना ने अपने पति को बुला कर श्री पार्वतीजी के स्वप्न का सारा वृत्तान्त सुना दिया।

शिव–चरित्र विवेचन

नारदजी बोले–हे ब्रह्माजी! यह तो आपने बड़ी ही अद्‌भुत कथा सुनाई। इससे तो मेरे हृदय में और भी प्रीति बढ़ी। हे ब्रह्माजी! जब मैं और हिमाचल भी अपने स्थान को चले गये तो क्या हुआ, वह कहिए। तब ब्रह्माजी बोले–हे नारद! तुम्हारे चले जाने पर मैना ने अपने पति के पास जाकर कहा कि हे स्वामी! मैंने मुनि के वचनों को नहीं समझा। आप किसी सुन्दर वर के साथ इस कन्या का विवाह कीजियेगा। इस कन्या के लिए सुन्दर वर होना चाहिए। ऐसा कहकर नेत्रों में आँसू भरे मैना पति के चरणों में गिर गई। तब उसे उठाकर गिरिराज बोले–हे देवि! मैं तुमसे सत्य कहता हूँ। तुम भ्रम को त्याग दो। नारद मुनि का वाक्य कभी असत्य नहीं होता। यदि तुम्हारी पुत्री पर ऐसा ही अधिक स्नेह है तो उसके पास जाकर तप करने का आदेश दो। थोड़े ही दिनों में शिवजी इस कन्या का पाणिग्रहण करेंगे और हमारे सभी अमंगल दूर होकर सब कार्य शुभ हो जायेंगे।

यह सुन मैना प्रसन्न हो पुत्री के पास आई और तप करने का आदेश देना चाहा। परन्तु गिरि–प्रिया स्नेहवश अपनी पुत्री से कुछ न कह सकीं, पर पार्वती देवी ने माता के अन्तर्भाव को समझ लिया। फिर तो पार्वती ने अपनी माता से कहा कि हे माता!

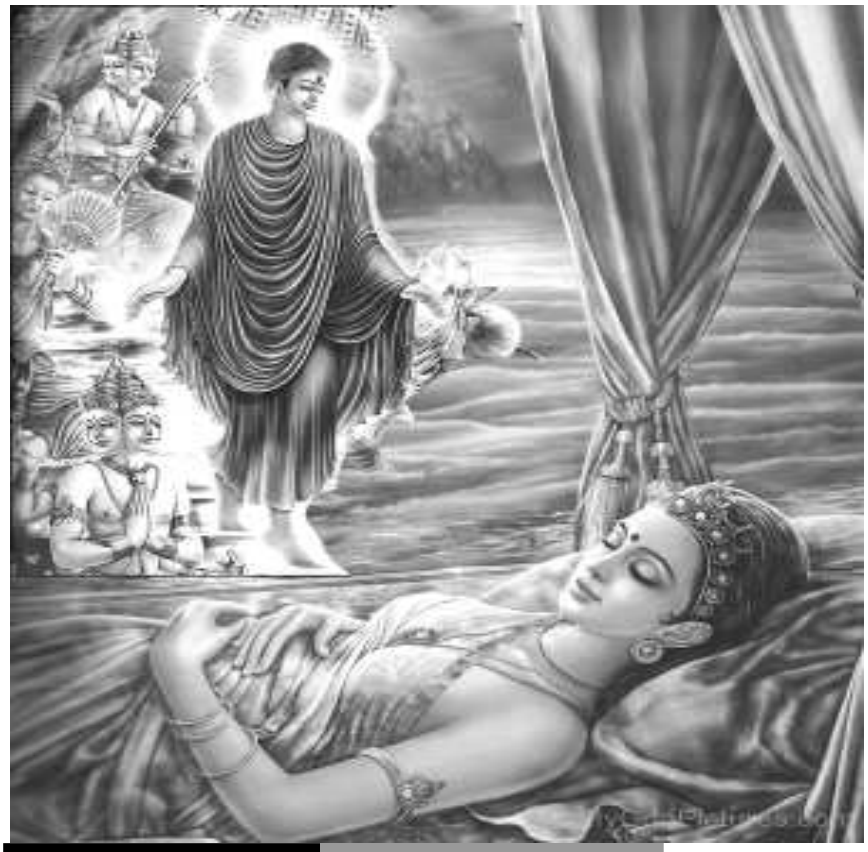

पार्वती ने अपनी माता से कहा कि हे माता! मैंने आज ही ब्रह्म–मुहूर्त्त में एक बड़ा सुन्दर स्वप्न देखा है। एक ब्राह्मण मुझे दया करके यह उपदेश दे रहा है कि हे पुत्री! तुम शिवजी की तपस्या करो। यह सुनकर मैना ने अपने पति को बुलाकर पुत्री का स्वप्न कह सुनाया।

मैंने आज ही ब्रह्म–मुहूर्त्त में एक बड़ा सुन्दर स्वप्न देखा है। एक ब्राह्मण मुझे दया करके यह उपदेश दे रहा है कि हे पुत्री! तुम शिवजी की तपस्या करो। यह सुनकर मैना ने अपने पति को बुलाकर पुत्री का स्वप्न कह सुनाया। उसे सुन गिरिराज को बड़ी प्रसन्नता हुई। उसने कहा–हे प्रिये! आज प्रातः मैंने भी एक स्वप्न देखा है। एक तपस्वी ब्राह्मण मेरे नगर के पास तप करने आया है। मैं अपनी पुत्री सहित उसके पास गया हूँ और उसकी सेवा के लिए मैंने अपनी पुत्री को उसे दे दिया है, परन्तु उसने स्वीकार नहीं किया है। फिर भी मैंने अपनी सुता को उसकी सेवा के लिए नियुक्त कर दिया है। अतः हे प्रिये! कुछ समय तक इसकी प्रतीक्षा करो। आगे जो होगा सो देखा जायेगा। हे मुनीश्वर! ऐसा कहकर गिरिराज चुप हो गये और मैना सहित उस समय की प्रतीक्षा करने लगे।

इस प्रकार जब बहुत समय व्यतीत हो गया, तब सती के वियोगी शिवजी अपने गणों को साथ लिए तप करने उसी नगर में आये। यह देख पार्वतीजी अपनी सखियों को साथ ले नित्य वहाँ आकर उनकी सेवा करने लगीं। परन्तु काम से पीड़ित होते हुए भी शिवजी में कोई विकार न आया। इसको

देख देवताओं ने कामदेव को उनके पास भेज दिया। शिवजी ने उसे अपनी नेत्राग्नि से भस्म कर दिया। फिर मुनि के वचनों को स्मरण कर अन्तर्धान हो गये।

शिव-हिमाचल सम्वाद

ब्रह्माजी बोले-हे नारदजी! कुछ समय के बाद नन्दीश्वर आदि मुख्य-मुख्य गणों को साथ लेकर तप करने की इच्छा से भगवान् हिमाचल प्रदेश में आये जहाँ पतित पावनी गंगा ब्रह्मलोक से गिर रही हैं, उसी स्थान को अपने तप के योग्य एवं सुन्दर समझ वहीं एकाग्रचित्त होकर सदाशिव आत्मचिन्तन करने लगे। उनके शुभ आगमन का वृत्तान्त उस समय हिमाचल को मालूम हो गया। हिमाचल भगवान् रुद्र के दर्शन के लिए वहाँ आये और आकर प्रणाम तथा पूजन किया। भगवान् शंकर हिमाचल से हँसते हुए कहने लगे-हे हिमाचल! मैं यहाँ तप करने को आया हूँ। आप इस प्रकार का प्रबन्ध कर दो कि कोई मेरे पास न आये। ब्रह्माजी बोले-हे नारदजी! इतना कहकर हिमाचल ने कहा कि आप स्वतन्त्र होकर यहाँ तपस्या करें, मैं सब प्रकार से आपकी सेवा करूँगा। आप निश्चिन्त रहें। यह कहकर हिमाचल अपने घर को चले आये। ब्रह्माजी बोले-हे नारदजी! कुछ दिनों के बाद पुष्प फल आदि लाकर हिमाचल भगवान् रुद्र के पास पहुँचे। वहाँ जगत के स्वामी भगवान् शंकर को प्रणाम करके श्रीपार्वती को भगवान् के सम्मुख ले जाकर हिमाचल कहने लगे-हे भगवन्! ये मेरी कन्या पार्वती है। यह आपकी सेवा करना चाहती है और आपका पूजन भी नित्य किया करती है। अब मैं इसे आपकी सेवा में लाया हूँ। कृपा कर इसे अपनी दासी जानकर सेवा में अंगीकार करें। यह

भगवान् हिमाचल प्रदेश में आये जहाँ पतित पावनी गंगा ब्रह्मलोक से गिर रही हैं, उसी स्थान को अपने तप के योग्य एवं सुन्दर समझ वहीं एकाग्रचित्त होकर सदाशिव आत्मचिन्तन करने लगे। उनके शुभ आगमन का वृत्तान्त उस समय हिमाचल को मालूम हो गया।

सुनकर सदाशिव ने अपने नेत्र खोले और सामने सम्पूर्ण गुणों से युक्त सुन्दर अंगोंवाली उमा को देखा तब हिमाचल से बोले कि हे हिमाचल! यह कन्या चन्द्रमा के समान रूपवती है, इसी कारण मैं इसका यहाँ आना पसन्द नहीं करता क्योंकि इस प्रकार की मायामयी स्त्रियों के आने से तपस्वियों की तपस्या में विघ्न पड़ जाते हैं। तब हिमाचल ने इस प्रकार के सदाशिव के वचन सुने तब उसका मन अत्यन्त व्याकुल एवं चिन्तातुर हो गया।

शिव पार्वती सम्वाद

भगवान् शंकर के वचन सुनकर पार्वतीजी बोलीं-हे योगिराज ! आपने जो कुछ पिताजी से कहा है उसका उत्तर मैं स्वयं देती हूँ। हे अन्तर्यामी! आपने एक महान् तप करने का निश्चय किया है। ऐसा तप क्या शक्तियुक्त नहीं? यही शक्ति सब कर्मों की प्रकृति मानी गई है। इसी से चराचर जगत् की रचना, पालन, संहार हुआ करता है। आप थोड़ा विचार करें। यह प्रकृति क्या है और आप कौन हैं? यदि प्रकृति न हो तो शरीर तथा स्वरूप किस प्रकार हो? इस प्रकार प्राणधारी सदा शक्ति का पूजन ध्यान-वन्दना आदि करें तो जगत् का क्रम सदा चलता रहे।

यह सुनकर सदाशिव बोले-हे पार्वतीजी! मैं तप द्वारा प्रकृति का नाश कर चुका हूँ, अब तत्त्व रूप में स्थित हूँ। साधु पुरुषों को प्रकृति का संग्रह करना उचित नहीं। तब इस प्रकार के वचन सुनकर लौकिक व्यवहार के अनुसार हँसकर श्रीपार्वतीजी कहने लगीं-हे योगिराज! आप किस प्रकार की बात कर रहे हैं, थोड़ा विचार कर कहें। यदि आपने प्रकृति का नाश कर डाला है तो आप किस प्रकार विद्यमान हैं? संसार तो प्रकृति से बँधा हुआ है। उसी प्रकृति के द्वारा संसार के सभी

कार्य सुनना, देखना आदि हुआ करते हैं। क्या आप प्रकृति का तत्त्व नहीं जान रहे? मैं ही प्रकृति हूँ। आप पुरुष हो। आप भी मेरी कृपा द्वारा सगुण होकर चेष्टावान हो नहीं तो किसी भी कार्य को करने में आप समर्थ न हो सकेंगे तब इस प्रकार सांख्यशास्त्र के अनुसार श्रीपार्वती के वचन सुनकर शिवजी बोले-हे हिमाचल कन्या! यदि मैं माया से रहित परमेश्वर हूँ तो आप श्रद्धापूर्वक मेरी सेवा करने में तत्पर होओ।

इतना कहकर तब सदाशिव हिमाचल से बोले-अब हमें तप करने की इच्छा है और तुम्हारी कन्या के लिए यह आज्ञा है कि वह नित्य आकर मेरे दर्शन किया करे। यह सुनकर हिमाचल प्रसन्न हुए और श्रीपार्वतीजी को साथ लेकर अपने घर चले आये। उसी दिन से श्रीपार्वतीजी नित्य ही भगवान् के दर्शन करने आने लगीं। सखियाँ भी साथ हुआ करती थीं। वहाँ आकर उनका षोडशोपचार (सोलह प्रकार) से पूजन करती और उनके चरणों का धोवन का नित्य चरणामृत लेतीं। इस प्रकार पूजन करके घर लौट आतीं। इसी प्रकार के पूजन आदि में पार्वतीजी को बहुत-सा समय बीतने लगा। कभी-कभी तो श्रीपार्वतीजी अपनी सखियों के साथ मिलकर काम-उत्पादक गायन भी करने लग जातीं।

एक दिन सदाशिव इस प्रकार श्रीपार्वतीजी को अपनी सेवा में तत्पर देखकर विचार किया-यह काली, उमा महेश्वरी तभी तप करेगी जब उसके अभिमान का बीज अंकुर नाश हो जायेगा और इसको ग्रहण भी मैं तभी करूँगा। तभी इसको अपनी पत्नी बनाऊँगा।

ब्रह्माजी बोले-हे नारदजी! ऐसा विचार कर भगवान् शिव अपने ध्यान में तत्पर हो गये। किन्तु उनके मन में श्री पार्वतीजी के लिए एक प्रकार की चिन्ता ने आकर निवास कर लिया। इसी कारण वे गिरिजा को नित्य ही देखते और पार्वतीजी भी बड़ी श्रद्धा एवं प्रेम से शिव-चिन्तन, पूजन एवं दर्शन नित्य करने लगीं। इतना देखकर तारकासुर से पीड़ित हुए मुनि तथा इन्द्रादिक देवताओं ने ब्रह्माजी से कहा और ब्रह्माजी ने कामदेव को आज्ञा दी। आज्ञा पाकर कामदेव वहाँ पहुँचा और अनेकों प्रकार की माया वहाँ फैलाने लगा, किन्तु भगवान् रुद्र उससे कभी चलायमान न हुए। प्रत्युत

नृसिंह तथा वाराह रूप धर कर मार डाला। तब पुत्रों के मर जाने से दु:खित होकर दिति ने फिर कश्यपजी से प्रार्थना की। उनकी सेवा के द्वारा उसे गर्भ रह गया। इन्द्र ने यह जानकर और उसके गर्भ में प्रवेश करके बालक के खण्ड-खण्ड कर दिये किन्तु दिति के व्रत के प्रभाव से गर्भ के बालक की मृत्यु न हुई।

काम को जलाकर भस्म कर डाला।

वज्रांग जन्म एवम पुत्र प्राप्ति का वर मांगना

नारदजी कहने लगे—हे ब्रह्माजी! वह तारकासुर कौन था जिसने आकर देवताओं को भी पीड़ित कर दिया और काम को सदाशिव ने क्यों भस्म कर दिया यह शिवजी की अद्भुत लीलाएँ हैं कृपा करके सुनाते चलिए।

ब्रह्माजी बोले—हे नारदजी! मरीचि के पुत्र कश्यपजी हुए हैं जिनकी दक्ष की दिति आदि तेरह कन्या स्त्रियाँ थीं, उन सब में दिति बड़ी थी। उससे हिरण्यकश्यप तथा हिरण्याक्ष दो पुत्र उत्पन्न हुए। इन दोनों को भगवान विष्णु ने नृसिंह तथा वाराह रूप धर कर मार डाला। तब पुत्रों के मर जाने से दु:खित होकर दिति ने फिर कश्यपजी से प्रार्थना की। उनकी सेवा के द्वारा उसे गर्भ रह गया। इन्द्र ने यह जानकर और उसके गर्भ में प्रवेश करके बालक के खण्ड-खण्ड कर दिये किन्तु दिति के व्रत के प्रभाव से गर्भ के बालक की मृत्यु न हुई। समय पूरा होने पर उसके गर्भ से उनचास बालक उत्पन्न हुए। ये सब मरुद्गण हुए और शीघ्र ही स्वर्ग में चले गये। उसके बाद दिति फिर कश्यप जी के पास पहुंची और उन्हें प्रसन्न करने

लगी तब कश्यपजी बोले—दिति! दस हज़ार वर्ष पर्यन्त तुम शुद्ध होकर तप करो। तब तुम अपनी इच्छानुसार पुत्र प्राप्त कर सकोगी। यह सुनकर दिति ने श्रद्धापूर्वक तप किया जब उसका तप पूर्ण हो गया तो पति के द्वारा फिर गर्भवती हुई और अब उसका अत्यन्त पराक्रमी वज्रांग नामक पुत्र उत्पन्न हुआ। उसे माता ने आज्ञा दी कि देवताओं से युद्ध करो।

तब माता की आज्ञा से युद्ध में सब देवताओं को जीतकर उनका राजा बन गया। दिति ने देखा कि मेरा ही पुत्र राजा बन गया है और सभी देवता उसके अधीन हैं। ऐसा देखकर वह अपने मन में अतीव प्रसन्न हुई। उसके बाद एक बार कश्यपजी को साथ लेकर वज्रांग देवताओं के बन्धन खोल दिये और कहने लगा—हे ब्रह्माजी! मुझे राज्य से तो कोई प्रयोजन भी नहीं था किन्तु यही इन्द्र अपने स्वार्थ में आकर मेरी माता के बालकों को मारता रहा है। तभी तो मैंने इसे जीतकर राज्य प्राप्त किया है। मुझे तो भोग विलास की इच्छा भी नहीं और ये देवता भी अपने कर्मों का फल पा चुके हैं। अब यह अपना राज्य मुझसे फिर से ले सकते हैं। यह सब मैंने अपनी माता की आज्ञा से किया है। हे ब्रह्माजी! आप मुझे सबका सार रूप तत्त्व का उपदेश करें जिससे मुझे सुख प्राप्त हो।

हे नारदजी! यह सुनकर मैंने उसे सात्विक भाव का तत्त्व समझाया और एक रूपवती स्त्री उत्पन्न करके वज्रांग को दे दी। उसके बाद हम दोनों वहां से चले आये तभी वज्रांग ने राक्षसों के स्वभाव को त्याग दिया। पर उसकी स्त्री के हृदय में सात्विक भाव न था। उसने काम-भावना से बड़े प्रेम से पति की सेवा की तब उसकी सेवा से प्रसन्न होकर वज्रांग

ब्रह्माजी बोले—हे नारद! इस प्रकार के वचन सुनकर द्वेषभाव से सदा दूर रहने वाला वज्रांग व्याकुल होकर मन में विचार करने लगा। देवताओं के साथ वैरभाव करना ठीक नहीं, इधर यह देवताओं के साथ बैर करना चाहती है। यदि केवल स्त्री की अभिलाषा पूर्ण कर दी तो सारे संसार के देवता एवं मुनिजनों को दुःख उठाना पड़ेगा।

बोला—हे प्राणप्रिये! कहो तुम क्या चाहती हो। यह सुनकर वह स्त्री कहने लगी—हे मेरे पतिदवे! यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो त्रिलोकी को जीतने वाला महापराक्रमी विष्णु को भी पीड़ित करने वाला मुझे पुत्र दीजिए।

ब्रह्माजी बोले—हे नारद! इस प्रकार के वचन सुनकर द्वेषभाव से सदा दूर रहने वाला वज्रांग व्याकुल होकर मन में विचार करने लगा। देवताओं के साथ वैरभाव करना ठीक नहीं, इधर यह देवताओं के साथ बैर करना चाहती है। यदि केवल स्त्री की अभिलाषा पूर्ण कर दी तो सारे संसार के देवता एवं मुनिजनों को दुःख उठाना पड़ेगा और यदि स्त्री की अभिलाषा पूर्ण न हुई तो मैं नरकगामी होऊंगा। इस प्रकार धर्म संकट में पड़कर उसने स्त्री की अभिलाषा पूर्ण कर देना ही उत्तम समझा। यह सब शिव माया थी। स्त्री के वचनों में आकर उसे वैसा पुत्र देने का वर दे दिया फिर स्वयंम् उसको पूरा करने के लिए अपनी इन्द्रियों को वश में रख कर वज्रांग ने बहुत वर्षों तक कठोर तपस्या की। ब्रह्माजी बोले—तब मैं ही प्रसन्न होकर उसके पास पहुंचा और उससे वर मांगने को कहा। तब उसने आकाश में मेरा दर्शन कर प्रणाम किया और अनेक प्रकार से स्तुति करने लगा फिर बोला—हे प्रभो! आप कृपा करके ऐसा पुत्र दें जो हमारा तथा अपनी माताजी का हित करने वाला तप स्वरूप एवम् सामर्थ्यवान् रूपवान् हो। इतना सुनते ही मैंने तथास्तु कह दिया फिर अपने लोग में चला आया।

-शेष अगले अंक में -क्रमशः

तीसरा अध्याय

त्याग सभी आशा-स्वार्थों को मुझे समर्पित कर्म करो।
आत्मनिष्ठ रहना अपने में इसी सत्य का मर्म धरो।।
ममता और संताप त्यागकर युद्धोन्मुख हो जाओ तुम।
श्रद्धा सहित बताये पथ पर अपने पाँव बढ़ाओ तुम।।

श्रद्धावान सभी दोषों से मुक्त हुए जो प्राणी है।
मुक्त समझ लो उन्हें कर्म-बंधन से, वे ही ज्ञानी है।।
मुझको जो दोषी माने वह मोह-भरम का मारा है।
मूढ़ बुद्धि उसकी होती है, उसका वही सहारा है।।

वशीभूत हैं सभी प्रकृति के वह ही कर्म कराती है।
प्रेरित हो गुण से स्ववृत्ति ही भला-बुरा करवाती है।।
ज्ञानवान भी नहीं स्वयं को कभी बचा पाता है।
तीन गुणों के ही प्रवाह में वह भी बहता जाता है।।

सभी इन्द्रियाँ विषयभोग के चक्कर में ही रहती हैं।
कर्म-चक्र में लिप्त रहें वे, सुख-दुख को भी सहती है।।
यही आत्मकल्याण मार्ग की बाधक शत्रु-समान है।
इनको वश में करना ही श्रेयस्कर कार्य महान है।।

अगर भला आचरणयुक्त कोई भी धर्म पराया है।
उससे उत्तम है स्वधर्म ही, जिसने भी अपनाया है।।
उसका अपना धर्म सदा होता है बेहतर हितकारी।
वही सुफलदाता होता है, जीते-मरते शुभकारी।।

जो जन श्रद्धासहित धर्म को जीवन में अपनाते हैं।
वैसे कर्त्ता कर्म फलों से स्वतः मुक्त हो जाते हैं।।
निजी धर्म का पालन करना उत्तम श्रेयस्कर है।
और उसी के पालन में मर जाना भी बेहतर है।।

अर्जुन, तेरा क्षात्र धर्म है, वर्ण-गुणों से अपना पावन।
इसका ही अनुसरण करो तुम, इसका ही करना है पालन।।
और पलायन युद्धभूमि से, जानो यह है धर्म पराया।
सोच रहा परधर्म निभाना, घेर चुकी है तुझको माया।।

अर्जुन ने पूछा केशव से, एक बात मुझको बतलायें।
अनचाहे भी पाप कर्म का प्रेरक कौन मुझे समझायें।।
कहा कृष्ण ने, सुनो ध्यान से, यह रहस्य समझाता हूँ।
क्यों ऐसा होता है, इसका कारण मैं बतलाता हूँ।।

-क्रमशः

सूत्र साहित्य का संक्षिप्त परिचय

(गतांक से आगे....)

❑ डॉ. देवेन्द्र गुप्ता

ब्रह्मचर्याश्रम

ऋणों से मुक्ति प्राप्त करना भी गृहस्थ का एक महत्वपूर्ण कर्त्तव्य माना जाता था क्योंकि इन ऋणों से मुक्ति वह गृहस्थाश्रम में ही प्राप्त कर सकता था। प्राय: सभी धर्मशास्त्रकारों ने तीन ऋणों की चर्चा की है, ये है-देवऋण, ऋषिऋण और पितृऋण। उनका विश्वास था कि जन्म लेते ही व्यक्ति तीन ऋणों से युक्त होता है। वह ऋषियों के प्रति ऋणी होता है जिन्होंने महत्वपूर्ण एवं धार्मिक साहित्य की परम्परा को अक्षुण्ण बनाये रखकर ज्ञान के क्षेत्र में योगदान दिया और अन्य लोगों को अपने अनुभवों से लाभान्वित किया। देवताओं के प्रति हम इसलिए ऋणी है, क्योंकि उनकी कृपा से ही हमारा जन्म होता है और उन्हीं के प्रसन्न रहने पर हम प्रगति कर सकते हैं। पितृऋण से तात्पर्य पूर्वजों के ऋण से है। पूर्वजों ने वंश परम्परा को बनाये रखा और हमें जन्म दिया। अत: उनका ऋण चुकाना हमारा कर्त्तव्य है। इन ऋणों से कैसे उऋण हुआ जाए, इस सम्बन्ध में शास्त्रकारों का कथन है कि वेद के स्वाध्याय द्वारा ऋषियों की पूजा कर, सोमयज्ञ के सम्पादन से इन्द्र की पूजा कर और प्रजा

ऋणों से मुक्ति प्राप्त करना भी गृहस्थ का एक महत्वपूर्ण कर्त्तव्य माना जाता था क्योंकि इन ऋणों से मुक्ति वह गृहस्थाश्रम में ही ही प्राप्त कर सकता था। प्राय: सभी धर्मशास्त्रकारों ने तीन ऋणों की चर्चा की है, ये है-देवऋण, ऋषिऋण और पितृऋण। उनका विश्वास था कि जन्म लेते ही व्यक्ति तीन ऋणों से युक्त होता है।

उत्पत्न्न कर अपने पूर्वज पितरों को प्रसन्न कर ऋणों से मुक्त हो सकते हैं। वास्तव में इन ऋणों से मुक्ति के मूल में भाव यह था कि समाज से लाभ उठाने वाले व्यक्ति अपने देवों, पितरों तथा ऋषियों आदि के प्रति श्रद्धावनत् रहे औप विनीत रहे तथा कुल और समाज के प्रति उत्सर्जित होकर सदाशयता का दृष्टिकोण खें। इसलिए एक स्थान पर मनु का कथन है कि बिना वेद का अध्ययन किये, बिना पुत्रों को उत्पन किए तथा बिना यज्ञों का अनुष्ठान किये मोक्ष की च्छा रखने वाला द्विज नरक को प्राप्त करता है। महाभारत के अनुसार जो व्यक्ति तीनों ऋणों से उऋण होने के पश्चात् अन्य आश्रमों का आश्रय लेता है वह परम सिद्धि प्राप्त करता है। वास्तव में देवऋण तथा ऋषिऋण तो अन्य आश्रम

से भी उऋण हो सकते थे लेकिन पितृऋण से मुक्ति गृहस्थाश्रम में ही सम्भव था। इसी गृहस्थाश्रम को अन्य आश्रमों का आधार और आश्रमों में श्रेष्ठ माना गया था।

पंचमहायज्ञ

गृहस्थाश्रम के अन्तर्गत व्यक्ति का सर्वाधिक महत्वपूर्ण कर्त्तव्य पंचमहायज्ञों का सम्पादन माना जाता था। ये पंचमहायज्ञ थे–ब्रह्मयज्ञ, पितृयज्ञ, देवयज्ञ, भूतयज्ञ और मनुष्ययज्ञ। इन यज्ञों को सम्पन्न करने के लिए किसी विधि–विधान या पुरोहित की आवश्यकता नहीं होती थी, अपितु इन यज्ञों को गृहस्थ स्वयं अपनी पत्नी तथा पुत्रों की सहायता से प्रतिदिन सम्पन्न करता था। अब प्रश्न उठता है कि इतने सीधे–सादे होने पर भी इन्हें महायज्ञ क्यों कहा गया? इसका कारण सम्भवत: यह रहा होगा कि जहाँ अन्य यज्ञ किसी निश्चित उद्देश्य की पूर्ति के लिए किये जाते थे वहीं ये यज्ञ बिना किसी लोभ के नि:स्वार्थ भाव से प्रतिदिन किये जाते थे। अत: व्यक्ति के दैनिक जीवन में इनकी महत्ता के कारण इनको महायज्ञ कहा गया।

वास्तव में इन यज्ञों का मुख्य उद्देश्य पापों का नाश तथा पुण्य की प्राप्ति था। विष्णु के अनुसार व्यक्ति अपने दैनिक कार्यों को करते–करते समय जाने–अनजाने रूप में जीव हिंसा करता रहता है जैसे अग्नि जलाने में कूटने–पीसने में घर की सफाई करने में तथा पानी भरने आदि में अनेक प्रकार के जीवों की हत्या हो जाती है। अत: इन पापों से छुटकारा पाने के लिए प्राचीन ऋषियों ने इन पंचमहायज्ञों का विधान किया था। जो भी हो इतना निश्चित है कि इन महायज्ञों ने गृहस्थ के जीवन को परिष्कृत करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इन्होंने उसके हृदय में पितरों की पुण्यस्मृति को अक्षुण्ण रखते हुए जहाँ एक ओर उनके प्रति कृतज्ञता की भावना का नैत्यिक प्रदर्शन करवाया, वहीं दूसरी ओर

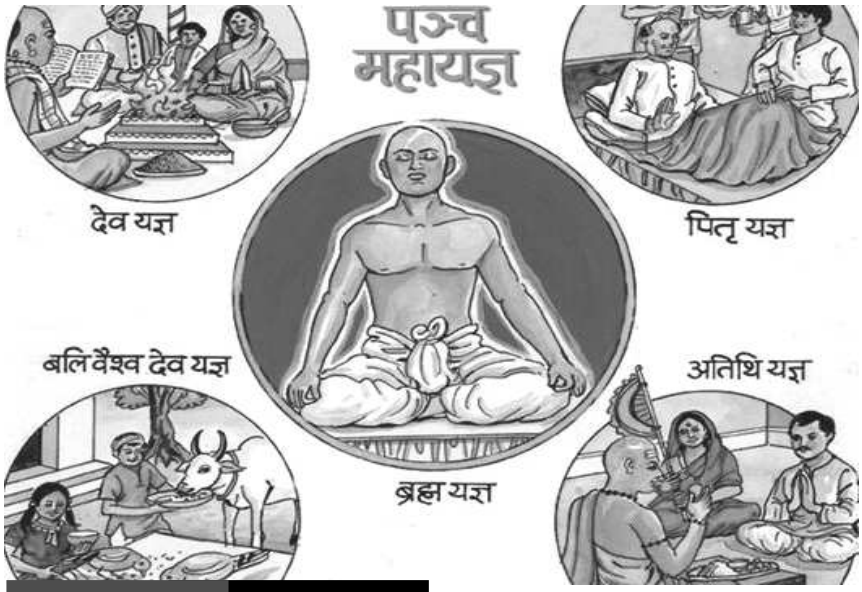

गृहस्थाश्रम के अन्तर्गत व्यक्ति का सर्वाधिक महत्वपूर्ण कर्त्तव्य पंचमहायज्ञों का सम्पादन माना जाता था। ये पंचमहायज्ञ थे–ब्रह्मयज्ञ, पितृयज्ञ, देवयज्ञ, भूतयज्ञ और मनुष्ययज्ञ। इन यज्ञों को सम्पन्न करने के लिए किसी विधि–विधान या पुरोहित की आवश्यकता नहीं होती थी।

उनके धार्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यों को नित्य अग्रसर करने का स्मरण दिलाया। इन्हीं के द्वारा एक ओर जहाँ मनुष्य ने देवताओं के प्रति सम्मान प्रकट करना प्रारंभ किया वहीं दूसरी ओर समाज के गुरुतम् कार्य अध्ययन अध्यापन को प्रोत्साहित किया। जहाँ मनुष्य यज्ञ ने उसके हृदय में मनुष्यमात्र के प्रति उदारता, बन्धुता एवं सहयोगिता की भावना जागृत की वहाँ भूतयज्ञ ने समस्त प्राणिमात्र के प्रति भी उसके उत्तरदायित्व को जागरूक किया। इस प्रकार इन महायज्ञों से मनुष्य के मन और मस्तिष्क का परिमार्जन होता था और उसकी अन्तर्निहित शक्तियों का उन्नयन होता था। इन यज्ञों का वर्णन निम्नलिखित है।

ब्रह्मयज्ञ: इस यज्ञ से तात्पर्य वेदों के स्वाध्याय से था। व्यक्ति ब्रह्मचर्याश्रम में जो ज्ञान प्राप्त करता था उसको कहीं भूला न दे, उसके लिए यह यज्ञ किया जाता था। इसी कारण समावर्तन संस्कार के अवसर पर आचार्य उसे स्वाध्याय में प्रमाद नहीं करने का उपदेश देता था। इस यज्ञ के अन्तर्गत व्यक्ति प्रतिदिन वैदिक ग्रन्थों का अध्ययन करता था। इसमें वेदों के अतिरिक्त अन्य विषयों का भी अध्ययन किया जाता था। आश्वलायन के अनुसार गृहस्थी को स्वाध्याय के लिए ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, ब्राह्मण, कल्प, गाथा, नाराशंसी, इतिहास एवं पुराण आदि का अध्ययन करना चाहिए। किन्तु मनोयोगपूर्वक जितना स्वाध्याय किया जा सके उतना ही करना चाहिए। उन्होंने इसकी विधि का वर्णन करते हुए लिखा है कि ब्रह्मयज्ञ करने वाले व्यक्ति को पूर्व, उत्तर या उत्तर पूर्व–दिशा में इतनी दूर चले जाना चाहिए कि जहाँ से घरों की छतें न दिखाई पड़ें, जब सूर्योदय होने लगे तो उसे यज्ञोपवीत अपने हाथ के नीचे डाल लेना चाहिए, एक पूत स्थल पर बैठ जाना चाहिए, अपने दोनों हाथों

को स्वच्छ करना चाहिए, तीन बार आचमन करना चाहिए, हाथ को जल से दो बार धो लेना चाहिए, अपने अधरों पर जल छिड़कना चाहिए, सिर को, आँखों को, कान छिद्रों को, कानों को, हृदय को छूना चाहिए। दर्भ की एक बड़ी चटाई बिछाकर उस पर पूर्वाभिमुख हो पद्मासन में बैठ जाना चाहिए और तब वेद का पाठ प्रारम्भ करना चाहिए। आपस्तम्ब के अनुसार नित्य स्वाध्याय तप है। चाहे वह खड़े होकर स्वाध्याय करे या बैठकर या सोकर, वह तप ही करता है, क्योंकि स्वाध्याय तप ही है। अन्यत्र आपस्तम्ब ने शतपथ ब्राह्मण को उद्धत करते हुए कहा कि स्वाध्याय एक प्रकार का दैनिक यज्ञ है, जिसमें ब्रह्म ही यज्ञ का साधन है। जिस प्रकार दर्शपौर्णमास आदि में पुरोडाश साधन होता है। जो मेघगर्जन होती है, जो विद्युत चमकने पर वज्रपात होने पर तथा आंधी चलने पर भी अध्ययन करें अन्यथा ये वषट्कार रूप शब्द व्यर्थ हो जायेंगे। बौधायन के अनुसार प्रतिदिन वेद का स्वाध्याय 'प्रणव' से करें। इसी स्वाध्याय रूपी ब्रह्मयज्ञ में वाणी ही जुहू है। मन उपभृत है, चक्षु ध्रुवा के स्थान पर होता है, बुद्धि स्रुवा का कार्य करती है, सत्य अवभृथ है और स्वर्गलोक यज्ञ की समाप्ति है। जितना स्वर्गफल व्यक्ति इस धनधान्यपूर्ण पृथिवी का दान करने पर पाता है उतना या उसके अधिक स्वर्गफल व्यक्ति को ब्रह्मयज्ञ के द्वारा स्वत: ही प्राप्त हो जाता है। अत: व्यक्ति को स्वाध्याय करते रहना चाहिए। आपस्तम्ब के टीकाकार हरदत्त मिश्र का कथन है कि जो फल कृच्छ, अतिकृच्छ तथा चान्द्रायण आदि तपों का होता है वही फल स्वाध्याय का होता है।

शतपथ ब्राह्मण में स्वाध्याय के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा गया है कि स्वाध्याय और प्रवचन दोनों प्रियकर्म है। जो इनको करता है वह एकाग्रचित्त अर्थात् स्थिर मत वाला हो जाता है, वह कभी भी पराधीन नहीं होता, नित्य अपने इष्टकर्मों को सिद्ध

गृहस्थाश्रम के अन्तर्गत व्यक्ति का सर्वाधिक महत्वपूर्ण कर्त्तव्य पंचमहायज्ञों का सम्पादन माना जाता था। ये पंचमहायज्ञ थे-ब्रह्मयज्ञ, पितृयज्ञ, देवयज्ञ, भूतयज्ञ और मनुष्ययज्ञ। इन यज्ञों को सम्पन्न करने के लिए किसी विधि-विधान या पुरोहित की आवश्यकता नहीं होती थी।

करता है, सुख से सोता है, वह स्वयं अपना परम चिकित्सक बन जाता है, उसकी इन्द्रियां संयमित हो जाती हैं, वह सदा एक रस रहता है, उसकी बुद्धि में वृद्धि होती है, वह यश को प्राप्त करता है, उससे वह उस लोक को परिपक्व करता है अर्थात् स्वाध्याय शील अपने सम्पर्क में आने वाले व्यक्तियों के चरित्र का सुधार करता है तथा उन्हें सब कार्यों में निपुण बना देता है।

देवयज्ञ-बौधायन के अनुसार यह यज्ञ प्रतिदिन देवताओं को काष्ठ का एक टुकड़ा अग्नि में समर्पित करके 'स्वाहा' शब्द के उच्चारण के साथ किया जाता था। आपस्तम्ब के अनुसार भी इस यज्ञ में देवताओं को स्वाहा शब्द के उच्चारण के साथ काष्ठ की आहुति दी जाती थी। विष्णु ने भी इसका समर्थन किया है। गौतम के अनुसार विवाह की अग्नि में अग्नि, धन्वन्तरि, विश्वेदेवा, प्रजापति और स्विष्टकृत के साथ स्वाहा जोड़कर होम किया जाता था। सामान्यत: यह धारणा प्रचलित थी कि मनुष्य के पास जो कुछ भी है वह देवताओं की कृपा से ही है अत: प्रत्येक व्यक्ति का यह कर्त्तव्य है कि वह उसमें से कुछ अंश देवताओं को अर्पित करें। यह यज्ञ पति-पत्नी द्वारा जीवन पर्यन्त किया जाता था। एक प्रकार से यह यज्ञ विवाह के समय प्रज्जवलित अग्नि को निरन्तर प्रदीप्त करने का प्रतीक था। पति-पत्नी में से किसी एक की भी मृत्यु होने पर उसकी दाहक्रिया इसी अग्नि से की जाती थी। लेकिन कालान्तर में यज्ञ संबंधी प्राचीन विचार गौण हो गये और उसका स्थान देवपूजा अर्थात् घर में रखी मूर्तियों के पूजन की विस्तृत विधि ने ले लिया।

भूतयज्ञ-यह यज्ञ समस्त जीवधारियों को प्रतिदिन बलि प्रदान करने के उद्देश्य से किया जाता था। बौधायन के अनुसार इस यज्ञ में प्रतिदिन प्राणियों की पुष्पों आदि से पूजा करके आदर व्यक्ति किया जाता था। इस यज्ञ को बलि हरण भी कहा जाता था। इस यज्ञ में प्रेतात्माओं, पशु-पक्षियों, कीड़े-मकोड़ों, अपाहिज मनुष्यों और अस्पृश्य जातियों को भोजन दिया जाता था। इस यज्ञ में बलि में न देकर पृथिवी पर रखी जाती थी। आपस्तम्ब के अनुसार जिस-जिस स्थान पर बलि रखी जाती थी उस-उस स्थान को सबसे पहले हाथ से साफ किया जाता था और फिर हाथ को नीचे कर वहाँ जल छिड़क दिया जाता था। उनके अनुसार जो अन्न गृहस्थ और उसकी पत्नी को खाना होता है, उस अन्न से होम तथा बलि कर्म करने से गृहस्थ को स्वर्ग का सुख तथा समृद्धि प्राप्त होती है। वास्तव में इस यज्ञ के द्वारा मनीषियों ने समाज के समक्ष सार्वभौम एकता का उच्च आदर्श उपस्थित किया था। उनके अनुसार मनुष्य का मनुष्य के प्रति ही वरन समस्त जड़ चेतन जगत के निम्नातिनिम्न अंश के प्रति भी कर्त्तव्य है। इसी भावना से प्रेरित होकर व्यवस्थाकारों ने समस्त प्राणिमात्र को बलि देने की योजना बनाई थी।

-क्रमश:

गोल मेज सम्मेलन

नमक यात्रा के कारण ही अंग्रेजों को यह अहसास हुआ था कि अब उनका राज बहुत दिन नहीं टिक सकेगा और उन्हें भारतीयों को भी सत्ता में हिस्सा देना पड़ेगा। इस लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए ब्रिटिश सरकार ने लंदन में गोल मेज सम्मेलनों का आयोजन शुरू किया। पहला गोल मेज सम्मेलन नवम्बर 1930 में आयोजित किया गया जिसमें देश के प्रमुख नेता शामिल नहीं हुए। इसी कारण अंततः यह बैठक निरर्थक साबित हुई। जनवरी 1931 में गाँधी जी को जेल से रिहा किया गया। अगले ही महीने वायसराय के साथ उनकी कई लंबी बैठके हुईं। इन्हीं बैठकों के बाद गांधी–इर्विन समझौते पर सहमति बनी जिसकी शर्तो में सविनय अवज्ञा आंदोलन को वापस लेना, सारे कैदियों की रिहाई और तटीय इलाकों में नमक उत्पादन की अनुमति देना शामिल था। रैडिकल राष्ट्रवादियों ने इस समझौते की आलोचना की क्योंकि गाँधी जी वायसराय से भारतीयों के लिए राजनीतिक स्वतंत्रता का आश्वासन हासिल नहीं कर पाए थे। गाँधी जी को इस संभावित लक्ष्य की प्राप्ति के लिए केवल वार्ताओं का आश्वासन मिला था।

दूसरा गोल मेज सम्मेलन 1931 के आखिर में लंदन में आयोजित हुआ। उसमें गाँधी जी कांग्रेस का नेतृत्व कर रहे थे। गाँधी जी का कहना था कि उनकी पार्टी पूरे भारत का प्रतिनिधित्व करती है। इस दावे को तीन पार्टियों ने चुनौती दी। मुस्लिम लीग का कहना था कि वह मुस्लिम अल्पसंख्यकों के हित में काम करती है।

दूसरा गोल मेज सम्मेलन 1931 के आखिर में लंदन में आयोजित हुआ। उसमें गाँधी जी कांग्रेस का नेतृत्व कर रहे थे। गाँधी जी का कहना था कि उनकी पार्टी पूरे भारत का प्रतिनिधित्व करती है। इस दावे को तीन पार्टियों ने चुनौती दी। मुस्लिम लीग का कहना था कि वह मुस्लिम अल्पसंख्यकों के हित में काम करती है। राजे–रजवाड़ों का दावा था कि कांग्रेस का उनके नियंत्रण वाले भूभाग पर कोई अधिकार नहीं है। तीसरी चुनौती तेज–तर्रार वकील और विचारक बी.आर. अंबेडकर की तरफ से थी जिनका कहना था कि गाँधी जी और कांग्रेस पार्टी निचली जातियों का प्रतिनिधित्व नहीं करते। लंदन में हुआ यह सम्मेलन किसी नतीजे पर नहीं पहुँच सका इसलिए गाँधी जी को खाली हाथ लौटना पड़ा। भारत लौटने पर उन्होंने सविनय अवज्ञा ***आंदोलन शुरू कर दिया।***

नए वायसराय लॉर्ड विलिंग्डन को गाँधी जी से बिलकुल हमदर्दी नहीं थी। अपनी बहन को लिखे एक निजी खत में विलिंग्डन ने लिखा था कि अगर गाँधी न होता तो यह दुनिया वाकई बहुत खूबसूरत होती। वह जो भी कदम उठाता है उसे ईश्वर की प्रेरणा का परिणाम कहता है लेकिन असल में उसके पीछे एक गहरी राजनीतिक चाल होती है। देखता हूँ कि अमेरिकी प्रेस उसको गजब का आदमी बताती है। लेकिन सच यह है कि हम निहायत अव्यवहारिक, रहस्यवादी और अंधविश्वासी जनता के बीच रह रहे हैं जो गाँधी को भगवान मान बैठी है।

बहरहाल, 1935 में नए गवर्नमेंट ऑफ इंडिया एक्ट में सीमित प्रातिनिधिक शासन व्यवस्था का आश्वासन व्यक्त किया गया। दो साल बाद सीमित मताधिकार के आधिकार पर हुए चुनावों में कांग्रेस को जबर्दस्त सफलता मिली। 11 में से 8 प्रांतों में कांग्रेस के प्रतिनिधि सत्ता में आए जो ब्रिटिश गवर्नर की देखरेख में काम करते थे। कांग्रेस मंत्रिमंडलों के सत्ता में आने के दो साल बाद, सितंबर 1939 में दूसरा विश्व युद्ध शुरू हो गया। महात्मा गाँधी और जवाहरलाल नेहरू, दोनों ही हिटलर व नात्सियों के कड़े आलोचक थे। तदनुरूप, उन्होंने फैसला लिया कि अगर अंग्रेज युद्ध समाप्त होने के बाद भारत को स्वतंत्रता देने पर राजी हों तो कांग्रेस उनके युद्ध प्रयासों में सहायता दे सकती है। सरकार ने उनका प्रस्ताव खारिज कर दिया। इसके विरोध में कांग्रेसी मंत्रिमंडलों ने अक्टूबर 1939 में इस्तीफा दे दिया।

दूसरा गोल मेज सम्मेलन 1931 के आखिर में लंदन में आयोजित हुआ। उसमें गाँधी जी कांग्रेस का नेतृत्व कर रहे थे। गाँधी जी का कहना था कि उनकी पार्टी पूरे भारत का प्रतिनिधित्व करती है। इस दावे को तीन पार्टियों ने चुनौती दी। मुस्लिम लीग का कहना था कि वह मुस्लिम अल्पसंख्यकों के हित में काम करती है।

युद्ध समाप्त

मार्च 1940 में मुस्लिम लीग ने पाकिस्तान के नाम से एक पृथक राष्ट्र की स्थापना का प्रस्ताव पारित किया और उसे अपना लक्ष्य घोषित कर दिया। अब राजनीतिक भूदृश्य काफी जटिल हो गया था अब यह संघर्ष भारतीय बनाम ब्रिटिश नहीं रह गया था। अब यह कांग्रेस, मुस्लिम लीग और ब्रिटिश शासन, तीन धुरियों के बीच का संघर्ष था। इसी समय ब्रिटेन में एक सर्वदलीय सरकार सत्ता में थी जिसमें शामिल लेबर पार्टी के सदस्य भारतीय आकांक्षाओं के प्रति हमदर्दी का रवैया रखते थे लेकिन सरकार के मुखिया प्रधानमंत्री विंस्टन चर्चिल कट्टर साम्राज्यवादी थे। उनका कहना था कि उन्हें सम्राट का सर्वोच्च मंत्री इसलिए नहीं नियुक्त किया गया है कि वह ब्रिटिश साम्राज्य को टुकड़े–टुकड़े कर दें।

1942 के वसंत में चर्चिल ने गाँधी जी और कांग्रेस के साथ समझौते का रास्ता निकालने के लिए अपने एक मंत्री सर स्टेफार्ड क्रिप्स को भारत भेजा। क्रिप्स के साथ वार्ता में कांग्रेस ने इस बात पर जोर दिया कि अगर धुरी शक्तियों से भारत की रक्षा के लिए ब्रिटिश शासन कांग्रेस का समर्थन चाहता है तो वायसराय को सबसे पहले अपनी कार्यकारी परिषद् में किसी भारतीय को एक रक्षा सदस्य के रूप में नियुक्त करना चाहिए। इसी बात पर वार्ता टूट गई। ❑

स्वर्ग- नरक

शास्त्रों में निपुण, प्रसिद्ध ज्ञानी एवं प्रख्यात संत श्री देवाचार्य के शिष्य का नाम महेन्द्रनाथ था। एक शाम महेन्द्रनाथ अपने साथियों के साथ उद्यान में टहल रहे थे और आपस में वे किसी विषय पर चर्चा कर रहे थे। चर्चा का विषय था- स्वर्ग-नरक। किसी एक साथी ने महेन्द्रनाथ से पूछा- 'क्यों मित्र! क्या मैं स्वर्ग जाऊंगा?' महेन्द्रनाथ ने उत्तर देते हुए कहा- 'जब मैं जायेगा, तभी आप स्वर्ग जाओगे।' उसके मित्र ने सोचा कि महेन्द्रनाथ को अभिमान हो गया है और सारे मित्रों ने मिलकर महेन्द्रनाथ की शिकायत अपने गुरु श्री देवाचार्य से कर दी। गुरुदेव को पता था कि उनका शिष्य महेन्द्रनाथ न केवल निरहंकारी है बल्कि अल्प शब्दों में गंभीर ज्ञान की बातें बोलने वाला है। उन्होंने महेन्द्रनाथ को बुलाकर इस घटना के बारे में पूछा, और उसने अपना सिर हिलाकर इस बात की पुष्टि की। अन्य शिष्यों में इस घटना को देखने के बाद कानाफूसी शुरू हो गयी। श्री देवाचार्य ने मुस्कुराते हुए दोबारा वही प्रश्न पूछा-'अच्छा ये बताओ महेन्द्रनाथ! क्या तुम स्वर्ग जाओगे?' महेन्द्रनाथ ने कहा- 'गुरुदेव! जब मैं जायेगा, तभी तो मैं स्वर्ग जा पाउँगा। श्री देवाचार्य शिष्यों को समझाते हुए बोले-'शिष्यों, इनके कहने का मतलब है जब 'मैं' जाएगा यानि जब अहंकार जायेगा, तभी तो हम स्वर्ग के अधिकारी बन पाएंगे। जब-जब आपके मन में ये बातें आएंगी कि मैंने ऐसा किया, मैंने इतने पुण्य किये, मैंने सब किया। उस स्थिति में स्वर्ग के बारे में सोचना भी गलत है।

मुफ्त में ईमानदारी

दीपक भारतदीप

विद्यालय के संचालक ने प्राचार्य को बुलाकर कहा कि-''देखो मैंने भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन में भाग लेने का फैसला किया है। तुम अपने साथ शिक्षकों को मेरे साथ रैली में भाग लेने के लिये तैयार रहने के लिये कहो। विद्यालय के छात्रों के लिये देश में व्याप्त भ्रष्टाचार रोकने के संबंध में विशेष ज्ञान देने का प्रबंध करो। मैं चाहता हूं कि मेरे साथ मेरे विद्यालय का नाम भी प्रचार के शीर्ष पर पहुंचे।''

प्राचार्य ने कहा-''महाशय, आपका आदेश सिर आँखों पर! मगर इसी आंदोलन की वजह से हमारे विद्यालय के शिक्षक अब जागरुक हो गये हैं। आप जितने वेतन की रसीद पर हस्ताक्षर करते हो उसका चौथाई ही केवल भुगतान करते हैं। वह चाहते हैं कि कम से कम आधी रकम तो दें। विद्यार्थियों के पालक भी तयशुदा फीस से अलग चंदा या दान देकर नाराज होते हैं। ऐसे में आप स्वयं भले ही इस आंदोलन में सक्रियता दिखायें पर विद्यालय की सक्रियता पर विचार न करें, संभव है यह बातें आपके विरुद्ध प्रचार का कारण बने।''

संचालक ने कहा-''तुम कहना क्या चाहते हो, यह भ्रष्टाचार है! कतई नहीं, यह तो मेरा निजी प्रबंधन है। हम तो केवल सरकारी भ्रष्टाचार की बात कर रहे हैं!''

प्राचार्य ने कहा-'हमारे पास कुछ मदों मे सरकारी पैसा भी आता है।''

विद्यालय के संचालक ने प्राचार्य को बुलाकर कहा कि-''देखो मैंने भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन में भाग लेने का फैसला किया है। तुम अपने साथ शिक्षकों को मेरे साथ रैली में भाग लेने के लिये तैयार रहने के लिये कहो। विद्यालय के छात्रों के लिये देश में व्याप्त भ्रष्टाचार रोकने के संबंध में विशेष ज्ञान देने का प्रबंध करो।

संचालक ने कहा-''वह मेरा निजी प्रभाव है। ऐसा लगता है कि तुम देश का भ्रष्टाचार रोकने की बजाय उसकी आड़ में तुम मेरे साथ दाव खेलना चाहते हो! तुम मेरा आदेश मानो अन्यथा अपनी नौकरी खोने के लिये तैयार हो जाओ।''

आखिर प्राचार्य ने कहा-''आपका आदेश मानने पर मुझे क्या एतराज हो सकता है? पर संभव है कि छात्रों के पालक अपने बच्चों में भ्रष्टाचार के विरुद्ध तिरस्कार का भाव देखकर नाराज हो जायें। आप तो जानते हैं कि अधिकतर माता-पिता चाहते हैं कि उनका बच्चा पढ़ लिखकर बड़े पद पर पहुंचे। बड़ा पद भी वह जो मलाईदार हो। ऐसे में अगर उसकी निष्ठा कहीं ईमानदारी से हो गयी तो संभव है वह अधिक पैसा न कमा पाये। भला कौन माता-पिता चाहेगा कि उसका बेटा मलाई वाली जगह पर बैठकर माल न कमाये। सभी चाहते हैं कि देश में भ्रष्टाचार खत्म हो पर उनके घर में

ईमानदार पैदा हो यह कोई नहीं चाहता। कहीं ऐसा न हो कि हमारे इस प्रयास पर पालक नाराज न होकर अपने बच्चों को दूसरे स्कूल पर भेजना शुरु करें और आपकी प्रसिद्धि ही विद्यालय की बदनामी बन जाये।'' संचालक कुछ देर खामोश रहा और फिर बोला-''तुम क्या चाहते हो मैं भी वहाँ न जाऊं?' प्राचार्य ने कहा-''आप जाईये, पर अपने स्कूल का परिचय न दें। आप सारे देश में ईमानदारी लाने की बात अवश्य करें पर उसे अपने विद्यालय से दूर रखें।''

संचालक खुश हो गया। प्राचार्य बाहर आया तो एक अन्य शिक्षक जिसने दूसरे कमरे में यह वार्तालाप सुना था उससे कहा-''आपने मना किया तो अच्छा लगा। बेकार में हमारे हिस्से एक ऐसा काम आ जाता जिसमें हमें कुछ नहीं मिलता। यह संचालक वैसे ही छात्रों से फीस जमकर वसूल करता है पर हम शिक्षकों को देने के नाम पर इसकी हवा निकल जाती है।

प्राचार्य ने कहा-''अपनी जरूरतें जब पूरी न हों तो ईमानदारी की बात करना भी जहर जैसा लगता है। वैसे फोकट में भ्रष्टाचार का विरोध करना मैं भी ठीक नहीं समझता। खासतौर से जब इस आंदोलन को चलाने वाले घोषित रूप से चंदा लेने वाले हों। हमें अगर कोई पैसा दे तो एक बार क्या अनेक बार ऐसे आंदोलन में जाते।

वैसे आपके दिमाग में ऐसा बोलने का विचार कैसे आया?''

प्राचार्य ने कहा-''अपनी जरूरतें जब पूरी न हों तो ईमानदारी की बात करना भी जहर जैसा लगता है। वैसे फोकट में भ्रष्टाचार का विरोध करना मैं भी ठीक नहीं समझता। खासतौर से जब इस आंदोलन को चलाने वाले घोषित रूप से चंदा लेने वाले हों। हमें अगर कोई पैसा दे तो एक बार क्या अनेक बार ऐसे आंदोलन में जाते। फोकट में टांगें तोड़ना या भाषण देना तो तब और भी मुश्किल हो जब हमें यही अपनी मेहनत का पैसा कम मिलता है।'

❑

बरगद का पेड़

किसी गांव में बरगद का एक पेड़ बहुत वर्षों से खड़ा था। गांव के सभी लोग उसकी छाया में बैठते थे, गांव की महिलाएं त्यौहारों पर उस वृक्ष की पूजा किया करती थीं। ऐसे ही समय बीतता गया। और कई वर्षों बाद वृक्ष सूखने लगा। उसकी शाखाएं टूटकर गिरने लगीं और उसकी जड़ें भी अब कमजोर हो चुकी थीं। गांव वालों ने विचार किया कि अब इस पेड़ को काट दिया जाये और इसकी लकड़ियों से गृहविहीन लोगों के लिए झोपड़ियों का निर्माण किया जाये। गांव वालों को आरी-कुल्हाड़ी लाते देख, बरगद के पास खड़ा एक वृक्ष बोला-'दादा! आपको इन लोगों की प्रवृत्ति पर जरा भी क्रोध नहीं आता, ये कैसे स्वार्थी लोग हैं, जब इन्हें आपकी आवश्यकता थी तब ये आपकी पूजा किया करते थे, लेकिन आज आपको टूटते हुए देखकर काटने चले हैं।' बूढ़े बरगद ने जवाब दिया- 'नहीं बेटे! मैं तो यह सोचकर बहुत प्रसन्न हूँ कि मरने के बाद भी मैं आज किसी के काम आ सकूंगा। 'असल बात यह है कि परोपकारी व्यक्ति सदा दूसरों के प्रति करुणा का भाव रखते हैं और उनकी खुशी और उनके सुख में अपना सुख समझते हैं।

जीवन में लक्ष्य का होना जरूरी क्यों है?

निर्मल पाण्डेय

यदि आपसे पूछा जाये कि क्या आपने अपने लिए कुछ लक्ष्य निर्धारित कर रखे हैं तो आपके सिर्फ दो ही जवाब हो सकते हैं हाँ या ना।

लक्ष्य पर साधें निशाना!

अगर जवाब हाँ है तो ये बहुत ही अच्छी बात है क्योंकि ज्यादातर लोग तो बिना किसी निश्चित लक्ष्य के ही अपनी जिन्दगी बिताये जा रहे हैं और आप उनसे कहीं बेहतर स्थिति में हैं। पर यदि जवाब ना है तो ये थोड़ी चिंता का विषय है। थोड़ी इसलिए क्योंकि भले ही अभी आपका कोई लक्ष्य ना हो पर जल्द ही सोच-विचार कर के अपने लिए एक लक्ष्य निर्धारित कर सकते हैं।

लक्ष्य से होते क्या हैं?

लक्ष्य एक ऐसा कार्य है जिसे हम सिद्ध करने की मंशा रखते हैं।

कुछ examples लेते है एक student का लक्ष्य हो सकता है। Final Exams में 80% से ज्यादा mark's लाना। एक Employee का लक्ष्य हो सकता है अपनी performance के basis is promotion पाना। एक house-wife का लक्ष्य हो सकता है: Home based business की शुरुआत करना. एक blogger का लक्ष्य हो सकता है। अपने ब्लॉग की page rank शून्य से तीन तक ले जाना। एक समाजसेवी का लक्ष्य हो सकता है। किसी गाँव के सभी लोगों को साक्षर बनाना।

अपनी उर्जा का सही उपयोग करने के लिए भगवान ने इन्सान को सीमित उर्जा और सीमित समय दिया है। इसलिए जरूरी हो जाता है कि हम इसका उपयोग सही तरीके से करें. लक्ष्य हमें ठीक यही करने को प्रेरित करता है।

लक्ष्य का होना जरूरी क्यों है?

सही दिशा में आगे बढ़ने के लिए जब आप सुबह घर से निकलते हैं तो आपको पता होता है कि आपको कहाँ जाना है और आप वहां पहुँचते हैं, सोचिये अगर आपको यह नहीं पता हो कि आप को कहाँ जाना है तो भला आप क्या करेंगे? इधर-उधर भटकने में ही समय व्यर्थ हो जायेगा। इसी तरह इस जीवन में भी यदि आपने अपने लिए लक्ष्य नहीं बनाये हैं तो आपकी जिन्दगी तो चलती रहेगी पर जब बाद में आप पीछे मुड़ कर देखेंगे तो शायद आपको पछतावा हो कि आपने कुछ खास achieve नहीं किया!!

लक्ष्य व्यक्ति को एक सही दिशा देता है। उसे बताता है कि कौन सा काम उसके लिए जरूरी है और कौन सा नहीं। यदि goals clear हों तो हम उसके मुताबिक अपने आप को तैयार करते हैं। हमारा subconscious mind हमें उसी के अनुसार act करने के लिए प्रेरित करता है। दिमाग में लक्ष्य साफ हो तो उसे पाने के रास्ते भी साफ नजर आने लगते हैं और इंसान उसी दिशा में अपने कदम बढा देता है।

अपनी उर्जा का सही उपयोग करने के लिए भगवान ने इन्सान को सीमित उर्जा और सीमित समय दिया है। इसलिए जरूरी हो जाता है कि हम इसका उपयोग सही तरीके से करें। लक्ष्य हमें ठीक यही करने को प्रेरित करता है। अगर आप अपने end-goal को ध्यान में रख कर कोई काम करते हैं तो उसमें आपका concentration और energy का level कहीं अच्छा होता है। For Example: जब आप किसी library में बिना किसी खास किताब को पढ़ने के मकसद से जाते हैं तो आप यूँ ही कुछ किताबों को उठाते हैं और उनके पन्ने पलटते हैं और कुछ एक पन्ने पढ़ डालते हैं, पर वहीं अगर आप कसी Project Report को पूरा करने के मकसद से जाते हैं तो आप उसके मतलब की ही किताबें चुनते हैं और अपना काम पूरा करते हैं। दोनों ही case में आप समय उतना ही देते हैं पर आपकी efficiency में जमीन-आसमान का फर्क होता हैं। इसी तरह life में भी अगर हमारे सामने कोई निश्चित लक्ष्य नहीं है तो हम यूँ ही अपनी energy waste करते रहेंगे और नतीजा कुछ खास नहीं निकलेगा। लेकिन इसके विपरीत जब हम लक्ष्य को ध्यान में रखेंगे तो हमारी energy सही जगह उपयोग होगी और हमें सही results देखने को मिलेंगे।

सफल होने के लिए जिससे पूछिए वही

कहता है कि मैं एक सफल व्यक्ति बनना चाहता पर अगर ये पूछिए कि क्या हो जाने पर वह खुद को सफल व्यक्ति मानेगा तो इसका उत्तर कम ही लोग पूर विश्वास से दे पाएंगे। सबके लिए सफलता के मायने अलग-अलग होते हैं और यह मायने लक्ष्य द्वारा ही निर्धारित होते हैं। तो यदि आपका कोई लक्ष्य नहीं है तो आप एक बार को औरों कि नजर में सफल हो सकते हैं पर

फुटबाल कि तरह जिन्दगी में भी आप तब-तक आगे नहीं बढ़ सकते जब तक आपको अपने लक्ष्य का पता ना हो। मुझे बिलकुल उपयुक्त लगता है। तो यदि आपने अभी तक अपने लिए कोई लक्ष्य निर्धारित नहीं किया है तो इस दिशा में सोचना शुरू कीजिये। लक्ष्य बनाइये, बड़े लक्ष्य बनाइये, और उन्हें हासिल करके ही दम लीजिये!

खुद कि नजर में आप कैसे Decide करेंगे कि आप सफल हैं या नहीं? इसके लिए आपको अपने द्वारा ही तय किये हुए लक्ष्य को देखना होगा। अपने मन के विरोधाभाष को दूर करने के लिए- हमारी life में कई opportunitie's आती-जाती रहती हैं. कोई चाह कर भी सभी की सभी opportunities का फायदा नहीं उठा सकता. हमें अवसरों को कभी हाँ तो कभी ना करना होता है। ऐसे में ऐसी परिस्थितियां आना स्वाभाविक है जब हम decide नहीं कर पाते कि हमें क्या करना चाहिए। ऐसी situations में आपका लक्ष्य आपको guide कर सकता है। जैसे मेरा और मेरी wife का लक्ष्य एक Beauty Parlour खोलने का है, ऐसे में अगर आज उसे एक ही साथ दो job-offers मिलें, जिसमें से एक किसी पार्लर से हो तो वह बिना किसी confusion के उसे ज्वाइन कर लेगी, भले ही वहां उसे दूसरे offer के comparison में कम salary मिले। वहीं अगर सामने कोई लक्ष्य ना हो तो हम तमाम factor को evaluate करते रह जायें और अंत में शायद ज्यादा वेतन ही deciding factor बन जाये।

अर्नोल्ड एच ग्लासगो का कथन

फुटबाल कि तरह जिन्दगी में भी आप तब-तक आगे नहीं बढ़ सकते जब तक आपको अपने लक्ष्य का पता ना हो। मुझे बिलकुल उपयुक्त लगता है। तो यदि आपने अभी तक अपने लिए कोई लक्ष्य निर्धारित नहीं किया है तो इस दिशा में सोचना शुरू कीजिये। लक्ष्य बनाइये, बड़े लक्ष्य बनाइये, और उन्हें हासिल करके ही दम लीजिये! ❑

माँ की सीख

ईश्वरचंद विद्यासागर के बचपन की यह एक सच्ची घटना है। एक सवेरे उनके घर के द्वार पर एक भिखारी आया। उसको हाथ फैलाये देख उनके मन में करुणा उमड़ी। वे तुरंत घर के अंदर गए और उन्होंने अपनी माँ से कहा कि वे उस भिखारी को कुछ दे दें। माँ के पास उस समय कुछ भी नहीं था सिवाय उनके कंगन के। उन्होंने अपना कंगन उतारकर ईश्वरचंद विद्यासागर के हाथ में रख दिया और कहा- 'जिस दिन तुम बड़े हो जाओगे, उस दिन मेरे लिए दूसरा बनवा देना अभी इसे बेचकर जरूरतमंदों की सहायता कर दो।' बड़े होने पर ईश्वरचंद विद्यासागर ने अपनी पहली कमाई से अपनी माँ के लिए सोने के कंगन बनवाकर ले गए और उन्होंने माँ से कहा- माँ! आज मैंने बचपन का तुम्हारा कर्ज उतार दिया । उनकी माँ ने कहा-'बेटे! मेरा कर्ज तो उस दिन उतर पायेगा, जिस दिन किसी और जरूरतमंद के लिए मुझे ये कंगन दोबारा नहीं उतारने होंगे।' माँ की सीख ईश्वरचंद विद्यासागर के दिल को छू गयीं और उन्होंने प्रण किया कि वे अपना जीवन गरीब-दुखियों की सेवा करने और उनके कष्ट हरने में व्यतीत करेंगे और उन्होंने अपना सारा जीवन ऐसा ही किया। महापुरूषों के जीवन कभी भी एक दिन में तैयार नहीं होते। अपना व्यक्तित्व गढ़ने के लिए वे कई कष्ट और कठिनाइयों के दौर से गुजरते हैं और हर महापुरूष का जीवन कहीं न कहीं अपनी माँ की शिक्षाओं से बहुत प्रभावित रहता है।

रास्ना खाइये–दर्द भगाइये

दीपक वैद्य

प्रकृति ने मनुष्य का शरीर इस तरह बनाया है कि संतुलित आहार से शरीर के प्रत्येक अंग अवयवों को निरंतर पोषण मिलता रहता है। इसके अतिरिक्त भी मशीनों की तरह इस शरीर संस्थान को भी आइलिंग ग्रीसिंग की आवश्यकता पड़ती है। हमारे आयुर्वेदिक चिकित्सा शास्त्री नाड़ी देखकर केवल मात्र वनस्पति रस, भस्म आसव अवलेह और अरिष्ट आदि देकर ही विभिन्न रोगें का कष्ट कठिनाइयों का उपचार नहीं करते रहे, प्रत्युत उन्होंने देखा कि स्लीन में न केवल रक्त अपितु रक्त विकास सम्बन्धी उपचार सामग्री तथा शरीरस्थ प्रत्येक संधि में तेल और ग्रीस की इतनी मात्रा विद्यमान रहती है यदि उनका नियमित और प्राकृतिक स्राव होता रहे तो वृद्धावस्था तक जोड़ दर्द होने का कोई कारण नहीं बचता। पर या तो आलस्य और आराम तलबी या फिर अत्यधिक और

रास्ना का अंग्रेजी नाम प्लूचियाल सियोलेटा है। इसके पत्तों में क्वर्सिटीन आइजोरेमटीम नामक रसायन विशेष रूपेस पाया जाता है यह वही तत्व है जो जोड़ों में पहले ही प्राकृतिक रूप से पाया जाता है पर निष्क्रियता के कारण यह स्वतः सूख जाता है इस स्थिति में रास्ना के प्रयोग से जोड़ों में फिर सेस इसकी उपस्थिति जोड़ों को लचीला और सक्रिय बना देती है।

अप्राकृतिक व्यायाम के कारण यह संधि-स्थल अपनी प्राकृतिक क्षमता खो बैठते हैं या फिर उन्हें निष्क्रिय कर डालते हैं। इससे वृद्धावस्था जोड़ों के दर्द में बीतती। पहलवान लोग जंघाओं को मोटा और मजबूत बनाने के लिए अंधाधुंध दंड बैठके लगाते हैं इससे हाथ और जंघाओं की मांसपेशियाँ मोटी हो जाती हैं पर वृद्धावस्था में हाथ-पैर की हड्डियाँ और जोड़ बुरी तरह दर्द करने लगते हैं। बढ़ापा कराहते हुए बीतता है।

हस्तपादासन, चक्रासन, पद्मासन, सिद्धासन, बज्रासन, बद्धपद्मासन, सर्वांग आसन, मयूर आसन, आदि अनेक ऐसे आसन होते हैं जिनका प्रतिदिन एक-एक दो-दो बार आधा घंटा अभ्यास करते रहा जाये तो संधियों के स्राव शरीर को स्वतः शरीर में लुब्रीकेशन की क्रिया पूरी करते रहते हैं। इन आसनों से वृद्धावस्था में भी युवावस्था जैसी ताजगी और स्फूर्ति बनाये रखी जा सकती है। अधिकांश लोग इससे उदासीन रहते हैं सो ठंडक आते-आते तक 50 वर्ष की आयु या उससे अधिक आयु के लोग जोड़ों के दर्द से परेशान रहने लगते हैं।

इस स्थिति में वनौषधियों की शरण जाये बिना कोई उपाय शेष नहीं रहता। परम पूज्य गुरुदेव ने अपनी 27 वनौषधियों में इन तकलीफों को ध्यान में रखकर ''रास्ना'' नामक बूटी को एक उपयोगी औषधि का स्थान दिया। यूँ तो यह एक कायाकल्प और शक्तिवर्धक औषधि है रसों की वृद्धि होने के कारण ही इसे रास्ना नाम दिया गया है पर मूलतः रास्ना का प्रयोग जोड़ों के दर्द की दवा के रूप में किया जाता है। राजस्थान, गुजरात में इसे रूखड़ी, रायसन नाम से पुकारते हैं उत्तर भारत में इसे सुगंध और युक्ता के नाम से पुकारते और पहचानते हैं। आमतौर पर रास्ना पीली बलुई मिट्टी में उगता है। कहीं-कहीं यह भुरभुरी मिट्टी में उपलब्ध हो जाता है।

रास्ना का अंग्रेजी नाम प्लूचियाल सियोलेटा है। इसके पत्तों में क्वर्सिटीन आइजोरेमटीम नामक रसायन विशेष रूप से पाया जाता है यह वही तत्व है जो जोड़ों में पहले ही प्राकृतिक रूप से पाया जाता है पर निष्क्रियता

के कारण यह स्वतः सूख जाता है इस स्थिति में रास्ना के प्रयोग से जोड़ों में फिर से इसकी उपस्थिति जोड़ों को लचीला और सक्रिय बना देती है। इसके सेवन से तत्काल शरीर में गर्मी बढ़ती है। किसी के शरीर में सूजन आ जाये और साथ ही बुखार भी हो तो रास्ना के सेवन से पसीना आ जाता है इससे सूजन भी दूर होती है और बुखार भी यथाशीघ्र दूर हो जाता है। कभी-कभी जोड़ों में सूजन आ जाती है इस स्थिति में इसके पत्ते पीस कर दोनों में हल्का लेप कर देने से सूजन और दर्द दोनों दूर हो जाते हैं मूलतः इसका प्रयोग ही वात-नाशक के रूप में किया जाता है।

जोड़ों के अतिरिक्त उदर शूल, मांसपेशियों की सूजन तथा अपच आदि की स्थिति में रास्ना का पंचांग अर्थात्- जड़, तने, पत्ते, फूल और फल सभी को छाया में सुखा कर बारीक पीस कर इसका चूर्ण ही शुद्ध जल के साथ सेवन किया जाता है इससे शरीर की शोध और संधि दर्द दूर होने के साथ-साथ शक्ति भी प्रचुर मात्रा में मिलती है। चूर्ण की अपेक्षा आमतौर पर लोग इसका क्वाथ लेना अधिक पसंद करते हैं। पर क्वाथ बनाते समय यह सावधानी रखी जानी चाहिए कि

जोड़ों के अतिरिक्त उदर शूल, मांसपेशियों की सूजन तथा अपच आदि की स्थिति में रास्ना का पंचांग अर्थात्- जड़, तने, पत्ते, फूल और फल सभी को छाया में सुखा कर बारीक पीस कर इसका चूर्ण ही शुद्ध जल के साथ सेवन किया जाता है इससे शरीर की शोध और संधि दर्द दूर होने के साथ-साथ शक्ति भी प्रचुर मात्रा में मिलती है। चूर्ण की अपेक्षा आम तौर पर लोग इसका क्वाथ लेना अधिक पसंद करते हैं।

एक पूर्ण चाय-चम्मच औषधि दो कप पानी में पकायी जाये और एक कप रह जाने पर आधी प्रातःकाल आधी सायंकाल लेना चाहिए।

समेटिक अर्थराइटिस में भी इसका प्रयोग बहुत लाभकारी पाया गया है पर इस स्थिति में इसके साथ सूखी अदरक का चूर्ण अथवा निर्गुण्डी चूर्ण का योग बना लिया जाता है। अदरक भी वात रोग नाशक होती है साथ ही रक्त शोधक भी होती हे। इसलिए सामान्य स्थिति में भी यदि इसे रास्ना के साथ मिला लिया जाय तो इसकी रोगनाशक क्षमता बहुत अधिक बढ़ जाती है। आमतौर पर जिन्हें कम भूख लगती हो या मुँह से लार टपकती हो उन्हें तो सुण्ठी का प्रयोग अवश्य करते रहना चाहिए।

निर्गुण्डी भी कफ और वात दोनों का शमन करती है। इसलिए सुण्ठी के स्थान पर रास्ना और निर्गुण्डी का योग भी बनता है। यह सिरदर्द दूर करने के साथ-साथ शरीर के किसी भी अंग की सूजन उतारने की अचूक औषधि है।

प्रायः एक माह तक एक चम्मच प्रतिदिन औषधि सेवन से फिर आवश्यकता नहीं रह जाती। औषधि के कच्ची-पक्की होने का प्रभाव भी पड़ता है अतएव आवश्यक हो तो इसे और भी आगे तक सेवन किया जा सकता है यह पूर्ण तथा निरापद औषधि है किसी प्रकार की हानि की संभावना नहीं रहती और औषधि सेवन के साथ खट्टी, कसैली दही और मिर्च मसाले वाली सब्जी, दाल आदि से बचना चाहिए। उड़द की दाल-चावल जैसे खाद्यों से भी बचना चाहिए। ❑

सत्य बोलने का फल

एक बालक की माँ ने मरते समय अपने पुत्र से कहा—'पुत्र सदा सच बोलना। अन्तिम समय मेरे पास तेरे लिये यही धन है।' इतना कहकर माता सुरपुर को सिधार गई। बेटे ने माँ के शब्दों का आदर और पालन किया। एक दिन जब वह जंगल में से होकर कहीं जा रहा था। रास्ते में चार चोर मिले तो उन लोगों ने उससे पूछा—'तेरे पास क्या है?' बच्चे ने उत्तर दिया—'मेरे पास 20 रु. है।' चोरों ने उसकी सारी जेबें टटोलीं और क्रोध में आकर कहा—झूठा कहीं का हमें परेशान करता है, जा भाग यहाँ से। लड़का बोला—'मैंने झूठ कभी नहीं बोला है, 20 रु. मेरे कोट के अस्तर में सिले हुये है। जब चोरों ने यह रुपये देखे तो उन्होंने प्रसन्न होकर कहा—'अच्छा तुम यह 15 रु. और लो तुमने सच बोला है यह उसका इनाम है।' उसी दिन से चोरों ने भी सत्य बोलना शुरु कर दिया और चोरी करना छोड़ दिया।

जानिए कैसे? मणिबंध रेखाएं खोलती हैं आयु का राज

आचार्य कौशल पाण्डेय

संसार के प्रत्येक व्यक्ति के मन में कभी न कभी यह विचार आता ही है कि आखिर उसकी आयु कितनी है। वह कितने समय तक जीवित रहेगा। वह सोचता है कि काश यह पता चल जाए कि कितनी उम्र तक संसार में रहना है तो वह उसके अनुसार अपने भविष्य की योजनाओं का निर्धारण कर सके। कौन-सी बीमारी होगी आपको, हाथों की रेखाएं ये भी बताती हैं।

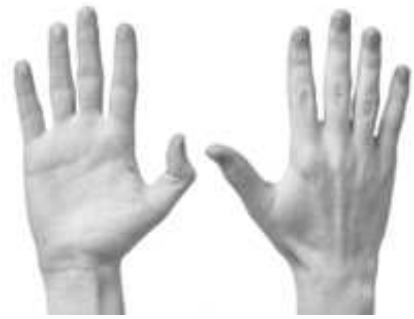

संसार के प्रत्येक व्यक्ति के मन में कभी न कभी यह विचार आता ही है कि आखिर उसकी आयु कितनी है। वह कितने समय तक जीवित रहेगा। वह सोचता है कि काश यह पता चल जाए कि कितनी उम्र तक संसार में रहना है तो वह उसके अनुसार अपने भविष्य की योजनाओं का निर्धारण कर सके। कौन–सी बीमारी होगी आपको, हाथों की रेखाएं ये भी बताती हैं। मेडिकल साइंस भी आज तक कोई ऐसी तकनीक नहीं बना पाया है जिससे व्यक्ति की कुल आयु पता की जा सके। लेकिन भारतीय मनीषियों को इस बात का पूर्ण ज्ञान था और वे किसी भी जातक को देखते ही उसकी आयु का पता लगा लेते थे। भारतीय ज्योतिष शास्त्र भारतीय ज्योतिष शास्त्र में अनेक विधाएं हैं जिनसे आयु का सटीक अनुमान लगाया जा सकता है। जन्म कुंडली देखकर आयु ज्ञात की जा सकती है, लेकिन जिन लोगों की जन्मकुंडली न हो उनकी आयु कैसे पता की जाए। इसका उत्तर सामुद्रिक शास्त्र देता है। व्यक्ति की हस्तरेखाओं में उसकी कुल आयु का राज छुपा हुआ है। हस्तरेखा की गणना को भी लगभग सभी विद्वानों ने एकमत से मान्यता दी है। जीवनरेखा के अलावा मणिबंध रेखा से भी आयु की गणना की जा सकती है। मणिबंध रेखा क्या होती है? हाथ से जिस जगह हथेली जुड़ती है उसे मणिबंध कहा जाता है। आप इसे कलाई भी कह सकते हैं। मणिबंध पर मौजूद रेखाओं को देखकर जातक की आयु ज्ञात की जा सकती है। मूलतः कलाई पर मौजूद तीन ही रेखाएं मणिबंध रेखाएं कहलाती हैं। कुछ लोगों के हाथ में दो मणिबंध रेखाएं होती हैं तो कुछ के हाथ में चार मणिबंध रेखाएं भी होती हैं। ये रेखाएं आयु, स्वास्थ्य, धन, प्रतिष्ठा एवं सम्मान की सूचक होती हैं। कई बार विदेश यात्राएं मणिबंध से यदि कोई रेखा निकलकर

ऊपर की ओर जाती हो तो उसके सोचे सभी कार्य उसके जीवनकाल में पूर्ण हो जाते हैं। यदि मणिबंध से कोई रेखा निकलकर चंद्र पर्वत की ओर जा रही हो तो वह व्यक्ति कई बार विदेश यात्राएं करता है। सामुद्रिक शास्त्र के अनुसार यदि कलाई पर चार मणिबंध रेखाएं हों तो उसकी पूर्ण आयु 100 वर्ष होती है। यदि तीन रेखाएं हों तो 75 वर्ष, दो रेखाएं हों तो 50 वर्ष और एक रेखा होने पर उसकी आयु 25 वर्ष मानी जाती है।

मणिबंध रेखाएं निर्दोष तथा स्पष्ट हों यदि मणिबंध रेखाएं टूटी हुई या कटी–फटी हो तो उस व्यक्ति के जीवन में लगातार बाधाएं और परेशानियां आती रहती हैं। उसका जीवन संकट और संघर्षों से घिरा रहता है। यदि मणिबंध रेखाएं निर्दोष तथा स्पष्ट हों तो व्यक्ति का प्रबल भाग्योदय होता है। मणिबंध रेखा जंजीरदार हो तो उसके जीवन में बराबर बाधाएं आती रहती हैं। इस रेखा पर स्वस्तिक का चिन्ह

सौभाग्य का सूचक है। मणिबंध रेखा पर बिंदु हों तो जीवनभर पेट के रोगों से परेशान रहता है। मणिबंध रेखा गहरी, लाल और स्पष्ट हो द्वीप का चिन्ह मणिबंध पर हो तो उसे बार–बार दुर्घटनाओं का सामना करना पड़ता है।

मणिबंध रेखा गहरी, लाल और स्पष्ट हो तो व्यक्ति की सर्वत्र रक्षा होती है। संकटों से बचाव होता है। यदि दो मणिबंध रेखाएं आपस में मिल जाती हों तो दुर्घटना में अंग–भंग होने का योग बनता है। इन रेखाओं का रंग नीलापन लिए हुए हो तो व्यक्ति रोगी होता है। पीली मणिबंध रेखाएं विश्वासघात की सूचक है।

❑

जब तक आप खुद पर विश्वास नहीं करते, तब तक आप भगवान पर भी भरोसा नहीं कर सकेंगे।

– स्वामी विवेकानंद

आँखों का मोह बुरा होता है

प्राचीनकाल में साधु पुरुष वनों में रहते और फल मूल खाते थे। किसी दिन अन्न की रुचि होती, तभी बस्ती में आते थे। आजकल के राजाओं ने तो जंगल बेचकर पेड़ कटवा डाले है, जो बाकी है, उन पर जबर्दस्त कर लगा हुआ है। इसलिए साधुओं की स्थिति में बहुत परिवर्तन हो गया है। उसी प्राचीन समय में एक विरक्त साधु अन्न की इच्छा से नगर में आया। एक स्त्री ने बड़े प्रेम से उसे भिक्षा दी और कहा—'आप यहाँ रोज भिक्षा लेने आये और दर्शन देकर हमें कृतार्थ करें।' साधु बिना कुछ कहे-सुने चुपचाप चला गया। दूसरे दिन वह फिर आया। स्त्री भिक्षा लिए खड़ी थी। आज इस स्त्री का शुद्ध प्रेम मिलन दिशा की ओर बढ़ रहा था। उसने साधु की झोली में भीख डालते हुए कहा—'मैं तो तुम्हारी राह देखती खड़ी थी। क्योंकि तुम्हारी चोर आँखों ने मेरा मन चुरा लिया है।' साधु चुपचाप चला गया। तीसरे दिन साधु ने आँख से दोनों कोये निकाल कर हाथ में ले लिये और उसी स्थान पर भिक्षा लेने जा पहुँचा। वह स्त्री भिक्षा देने आयी, तब साधु ने कहा—'जिन चोर आँखों ने तेरा मन चुरा लिया था, उन्हें लेती जा और अपने पास रख ले, इससे तू सुख पायेगी।' यह सुनकर उस स्त्री को बड़ा पछतावा हुआ। उसकी समझ में यह बात आ गयी कि आँखों का मोह बुरा होता है और वह तब से ईश्वर भक्ति करने लगी। ❑

स्वामी विवेकानंद के बताए इस फॉर्मूले से कोई भी पा सकता है जबरदस्त याददाश्त

म.मं. स्वामी डॉ. उमाकान्तानन्द सरस्वती जी महाराज

यह बात उन दिनों की है जब स्वामी विवेकानंद देश भ्रमण में थे। साथ में उनके एक गुरु भाई भी थे। स्वाध्याय, सत्संग और कठोर तप का अविराम सिलसिला चल रहा था। जहां कहीं अच्छे ग्रंथ मिलते, वे उनको पढ़ना नहीं भूलते थे। किसी नई जगह जाने पर उनकी सब से पहली तलाश किसी अच्छे पुस्तकालय की रहती। एक जगह एक पुस्तकालय ने उन्हें बहुत आकर्षित किया। उन्होंने सोचा, क्यों न यहां थोड़े दिनों तक डेरा जमाया जाए। उनके गुरुभाई उन्हें पुस्तकालय से संस्कृत और अंग्रेजी की नई-नई किताबें लाकर देते थे। स्वामीजी उन्हें पढ़कर अगले दिन वापस कर देते रोज नई किताबें वह भी पर्याप्त पृष्ठों वाली इस तरह से देते और वापस लेते हुए उस पुस्तकालय का अधीक्षक बड़ा हैरान हो गया। उसने स्वामी जी के गुरु भाई से कहा, क्या आप इतनी सारी नई-नई किताबें केवल देखने के लिए ले जाते हैं। यदि इन्हें देखना ही है, तो मैं यूं ही यहां पर दिखा देता हूं। रोज इतना वजन उठाने की क्या जरूरत है। लाइब्रेरियन की इस बात पर स्वामी जी के गुरु भाई ने गंभीरतापूर्वक कहा, जैसा आप समझ रहे हैं वैसा कुछ भी नहीं है। हमारे गुरु भाई इन सब पुस्तकों को पूरी गंभीरता से पढ़ते हैं। फिर वापस करते हैं। इस उत्तर से आश्चर्य चकित होते हुए लाइब्रेरियन ने कहा, यदि ऐसा है तो मैं उनसे जरूर मिलना चाहूंगा। अगले दिन स्वामी जी उससे मिले और कहा, महाशय, आप हैरान न हों। मैंने न केवल उन किताबों को पढ़ा है, बल्कि उनको याद भी कर लिया है। इतना कहते हुए उन्होंने वापस की गई। कुछ किताबें उसे थमायी और उनके कई महत्वपूर्ण अंशों को शब्द सहित सुना दिया। लाइब्रेरियन चकित रह गया। उसने उनकी याददाश्त का रहस्य पूछा। स्वामी जी बोले, अगर पूरी तरह एकाग्र होकर पढ़ा जाए, तो चीजें दिमाग में अंकित हो जाती हैं। मगर इसके लिए जरूरी है कि मन की धारणशक्ति अधिक से अधिक हो और वह शक्ति ध्यान और अभ्यास से आती है।

❑

यह बात उन दिनों की है जब स्वामी विवेकानंद देश भ्रमण में थे। साथ में उनके एक गुरु भाई भी थे। स्वाध्याय, सत्संग और कठोर तप का अविराम सिलसिला चल रहा था। जहां कहीं अच्छे ग्रंथ मिलते, वे उनको पढ़ना नहीं भूलते थे। किसी नई जगह जाने पर उनकी सब से पहली तलाश किसी अच्छे पुस्तकालय की रहती।

इसी जगह से रावण ने किया था देवी सीता का हरण, मौजूद हैं निशानियां

प्रो. वीरेन्द्र अग्रवाल

पंचवटी में बना एक दृश्य

त्र्यम्बकेश्वर ज्योतिर्लिंग के पास बसा पंचवटी रामायण से जुड़ी एक बहुत ही खास जगह है। रावण ने देवी सीता का हरण पंचवटी से ही किया था। इसी वजह से इस जगह को हिंदू धर्म में बहुत ही महत्वपूर्ण माना जाता है। आज हम आपको बताने जा रहे हैं पंचवटी से जुड़ी ऐसी 8 बातें, जो इसे और भी खास बनाती हैं-

इसलिए कहा जाता है इसे पंचवटी

इस जगह का नाम पंचवटी होने के पीछे एक खास कारण माना जाता है। कहते है इस जगह पर वट के पांच पेड़ थे, जिसके कारण इस जगह को पंचवटी कहा जाता है।

2. यहीं काटी थी लक्ष्मण ने शूर्पनखा की नाक

ग्रंथों के अनुसार, रावण की बहन शूर्पनखा ने इसी जगह पर राम-लक्ष्मण के सामने विवाह का प्रस्ताव रखा था और देवी सीता को मारने की कोशिश की थी। फलस्वरूप लक्ष्मण ने यहीं पर शूर्पनखा की नाक काट दी थी। इसी बात का बदला लेने के लिए रावण ने सीता का हरण कर लिया था।

3. इसलिए पड़ा इस जगह का नाम नासिक

इस क्षेत्र का नाम नासिक पड़ने के पीछे का कारण भी यहां घटी घटना ही मानी जाती है। इसी क्षेत्र में लक्ष्मण द्वारा शूर्पनखा की नासिका यानी नाक काटे जाने की वजह से यह क्षेत्र नासिक के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

4. ऐसा मंदिर जहां साल के एक दिन पड़ती हैं भगवान के चरणों पर सूर्य की किरणें

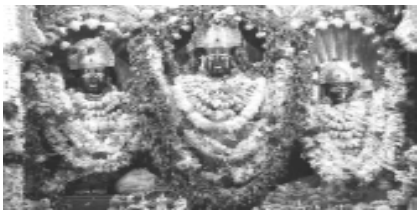

पंचवती में सुंदर नारायण नाम का एक मंदिर है। मंदिर के गर्भगृह में काले रंग की तीन मूर्तियां हैं, जिसमें बीच में भगवान नारायण और उनके आस-पास देवी लक्ष्मी की मूर्तियां हैं। यह मंदिर अपने आप में ही खास है क्योंकि इस मंदिर का निर्माण कुछ इस तरह किया गया है कि हर साल 20 या 21 मार्च को मूर्तियों के चरणों पर सूर्य की किरणें पड़ती हैं।

5. वे जगह जहां देवी सीता करती थीं आराम

पंचवटी में सुंदर-नारायण मंदिर से कुछ दूरी पर ही सीता गुफा है, जिसमें भगवान राम, लक्ष्मण और सीता की मूर्तियां हैं। कहते हैं कि दंडकारण्य क्षेत्र से गुजरने के दौरान देवी सीता इसी गुफा में ठहरी थीं।

6. खास है यहां का कालेराम मंदिर

पंचवटी के मंदिरों में कालेराम नामक मंदिर प्रमुख मंदिर माना जाता है। मान्यताओं के अनुसार, जहाँ श्रीराम पंचवटी आए थे, तब उन्होंने इसी जगह पर आराम किया था। मंदिर में भगवान

राम, लक्ष्मण और सीता की काले रंग की मूर्तियां स्थापित हैं।

वे जगह जहां श्रीराम ने किया था जटायु का अंतिम संस्कार

पंचवटी से कुछ कि.मी. की दूरी

पर जंगल में वो जगह है, जहां पर भगवान राम ने जटायु का अंतिम

संस्कार किया था। यहीं पर श्रीराम ने जटायु के तर्पण के लिए बाण मारकर धरती से जल निकाला था, जिसे सर्वतीर्थ कुंड कहा जाता है।

8. गोदावरी नदी का उद्‌गम स्थल

पंचवटी से लगभग 30 कि.मी. की दूरी पर ब्रह्मगिरि नाम का पर्वत है। इसी

पर्वत से गोदावरी नदी का उद्‌गम स्थान माना जाता है। गोदावरी नदी का वर्णन कई धर्म-ग्रंथों में पाया जाता है। कुंछ दूरी पर ब्रह्मगिरि नाम का पर्वत है। इसी पर्वत से गोदावरी नदी का उद्‌गम स्थान माना जाता है। गोदावरी नदी का वर्णन कई धर्म-ग्रंथों में पाया जाता है। ❑

दूसरों की रक्षा हेतु अपना बलिदान

एक समय की बात है। देवताओं ने आपस में परामर्श दिया कि पृथ्वी पर चलकर उशीनर के पुत्र राजा शिवि की साधुता की परीक्षा करें। यह निश्चय कर अग्निदेव ने कबूतर का रूप बनाया और आगे चल दिया उसके पीछे-पीछे इन्द्रदेव बाज का रूप बनाकर उसका माँस लेने के हेतु चल दिये। उस समय राजा शिवि यज्ञशाला में दिव्य सिंहासन पर बैठे हुए थे। कबूतर झट उनकी गोद में जा पड़ा। यह देखते ही पास बैठे हुए पुरोहित जी ने कहा—महाराज! यह कबूतर बाज के भय से प्राणों की रक्षा हेतु आपकी शरण में आया है। उसी समय कबूतर भी आर्त स्वर में बोला, राजा मेरी रक्षा कीजिये! यह बाज मेरा पीछा कर रहा है। इसके भय से मैं आपके शरण में आया हूँ। वास्तव में मैं कबूतर नहीं, ऋषि हूँ मैंने एक शरीर से दूसरा शरीर बदल लिया है। मैंने ब्रह्मचर्य का पालन किया है, वेदों का स्वाध्याय किया है। मैं तपस्वी हूँ, जितेन्द्रिय हूँ, मैं सर्वथा निष्पाप और निर्दोष हूँ। अतः मुझे बाज के हवाले न करें। इतने ही में बाज ने आकर राजा से कहा—राजन्! इस कबूतर को मुझे दे दीजिये। यह मेरा भोजन है। आप मेरे कार्य में विघ्न न डालें। राजा ने कहा, ये दोनों पक्षी जितनी शुद्ध संस्कृत भाषा बोलते हैं ऐसी कभी किसी पक्षी के मुख से नहीं सुनी। मैं इन दोनों का वास्तविक स्वरूप जानकर ही उचित न्याय करूँगा क्योंकि जो मनुष्य शरणागत प्राणी को उसके शत्रु के हवाले कर देता है। उसके राज्य में अच्छी वर्षा नहीं होती, बोये हुए बीज नहीं उगते, संकट के समय उसकी कोई रक्षा नहीं करता, स्वर्ग से उसे नीचे ढकेल दिया जाता है आदि-आदि बातों पर विचार करके राजा ने निश्चय कर लिया कि कबूतर नहीं दूँगा चाहे प्राण त्याग दूँगा। राजा ने बाज से कहा—तुम व्यर्थ कष्ट मत उठाओ, इस कबूतर को मैं तुम्हें कदापि नहीं दूँगा। इसके अतिरिक्त जिस प्रकार भी तुम्हारा प्रिय कार्य हो सकता हो बताओ। बाज बोला—राजन्! यदि यही बात है तो इस कबूतर के बराबर अपनी दाहिनी जाँघ से जितना माँस हो वह मुझे दे दो। यह सुनते ही राजा तत्काल तराजू मँगाकर एक तरफ कबूतर रक्खा और दूसरी तरफ अपनी जाँघ से माँस काट कर रख दिया। परन्तु वह कबूतर के बराबर नहीं हुआ। राजा ने फिर काट कर रख दिया फिर भी बराबर नहीं हुआ तो राजा ने क्रमशः अपने अंगों का माँस काट-काट कर चढ़ा दिया तो भी नहीं हुआ और उन्हें तनिक भी क्लेश नहीं हुआ। यह देखकर बाज बोला—राजन्! कबूतर के प्राणों की रक्षा हो गई और बाज उसी क्षण अन्तर्ध्यान हो गया। राजा ने कबूतर से पूछा—कपोत! वह बाज कौन था और आप कौन है? कबूतर बोला—महाराज! वे साक्षात् इन्द्रदेव थे और मैं अग्नि हूँ, हम दोनों आपकी परीक्षा करने आये थे। राजा ने अग्निदेव को प्रणाम किया। इसके बाद अग्निदेव राजा शिवि को वरदान देकर चले गये। कुछ समय के बाद उस वरदान से राजा को कपोतरोमा नाम का पुत्र उत्पन्न हुआ।

सन्यासी जी गृहस्थियों की सभा में

रितेश पाण्डेय

झूठा ज्ञान बघारते, घर त्यागी का भेष।
गंगा तरंग मन में बता, देते पापी ठेस॥

एक नगर में एक संन्यासी व्याख्यान दे रहे थे। उनके व्याख्यानों को सभी नरनारी सुन रहे थे। सन्यासी जी ने अपने व्याख्यान में कहा कि हरिद्वार, प्रयागराज नासिक, उज्जैन आदि-आदि स्थानों में जाकर और वहां गंगा, यमुना, गोदावरी में स्नान करने की कोई आवश्यकता नहीं है क्योंकि भाइयों तुम्हारे घर में ही गंगा, यमुना बह रही है। जब तुम्हारे इस शरीर में घट के अन्दर गंगा, यमुना ठाठें मार रही हैं तब तुम लोगों को भतल पर बहने वाली गंगा, यमुना आदि में स्नान करने की क्या आवश्यकता है? अपने मन की गंगा में ही रोज रोज खूब डुबकी लगा लगा कर स्नान करो। महात्माजी का व्याख्यान समाप्त हुआ लोग अपने-अपने घरों को चले गये। महात्माजी भी उसी नगर में अपने एक सेवक के यहाँ ठहरे हुए थे। सो वहाँ चले गए। जिस सेवक के यहाँ स्वामीजी ठहरे हुए थे उस सेवक को महात्माजी का आज का व्याख्यान अच्छा नहीं लगा उसने विचारा कि मन में गंगा, यमुना बह रही हैं इस बात की परीक्षा क्यों न स्वामी जी पर ही की जाय। निदान स्वामी जी भोजन आदि पाकर एक कोठरी में विश्राम करने को चले गये और स्वामी जी अन्दर से कोठरी का दरवाजा बन्द कर सो गए।

आधा घण्टे बाद सेवक ने दो-चार नगर के भले-भले गृहस्थियों को (जो कि स्वामी जी के आज के व्याख्यान में थे) बुलवाया और उनसे कुछ कानाफूसी करने के पश्चात् उस कोठरी का दरवाजा बाहर से बन्द कर ताला लगा दिया। जिसमें स्वामी जी सो रहे थे, गर्मी अधिक पड़ रही थी गर्म-गर्म लू चल रही थीं कि घरों से बाहर निकलना प्राणीमात्र को कठिन हो रहा था तीन चार घण्टे बाद अन्दर से स्वामी जी दरवाजा खोलो-दरवाजा खोलो करके चिल्लाने लगे, परन्तु दरवाजा किसी ने भी नहीं खोला। सब चुपचाप बैठे सुनते रहे। स्वामी ने फिर आवाज लगाई भाई दरवाजा खोलो, मेरा-मारे प्यास के दम निकला जा रहा है। लोग फिर भी चुपचाप बैठे रहे अब की बार तो स्वामी जी ने अन्दर से दरवाजे को लात घूंसे मारते हुए कहा अरे कोई है दरवाजा खोलो मूर्खो मेरा मारे प्यास के प्राण निकला जा रहा है।

आखिरकार बहुत से मनुष्यों के सामने उस सेवक ने दरवाजे का ताला खोल दिया। दरवाजा खुलते ही स्वामी जी कोठरी में से भयंकर क्रोध धारण किये हुए निकले और अपने उस सेवक पर बरसते हुए बोले जिस पाजी ने दरवाजा बन्द कर मेरे साथ मजाक किया है। उसको शर्म नहीं आई मैं मारे प्यास के मर गया। सेवक ने हाथ जोड़ते हुये कहा महाराज क्रोध न कीजिये आपके पास तो जल था पी क्यों नहीं लिया? स्वामीजी ने कहा अरे मूर्ख मेरे पास जल कहाँ था, क्या तेरा सिर पीता। सेवक ने कहा महाराजा प्रात:काल जब आपने स्वयं अपने व्याख्यान में कहा था कि घट में ही गंगा, यमुना आदि बह रही है उनमें स्नान करो, जब आपके घट में गंगा, यमुना, गोदावरी आदि बह रही हैं फिर प्यासे क्यों मरे? खूब पेट भर कर पानी पी लेते।

इसकी यह बात सुनकर स्वामी जी को लज्जा आई कि वह डण्ड-कमण्डल उठा चलते बने। बन्धुओं! प्राय: देखा जा रहा है कि आज कल अधिकतर नकली सन्यासी यत्रतत्र गृहस्थियों में बैठे वेदांत के गूढ़ विषयों पर लेक्चर झाड़ते हुये गृहस्थियों को उनके गृहस्थ धर्म से वंचित कर रहे हैं। मन में गंगा, यमुना उन परमहंस ज्ञानियों के लिये हैं जो कि कर्म उपासना से छुटकारा पाकर ज्ञान मार्ग में प्रवेश कर चुके हैं। हम गृहस्थियों के उद्धार के लिये भूतल पर बहने वाली गंगा, यमुना आदि ही है इन्हीं में स्नान करने से हम गृहस्थियों को ज्ञान मार्ग की प्राप्ति हो सकती है।

अस्तु हमारी सब गृहस्थियों से प्रार्थना है कि वे ऐसे मिथ्या व्याख्यानों को कदापि न सुनें और नाहीं ऐसे ढोंगी ज्ञानियों को अपने घरों में आश्रय दें।

हिन्दू धर्म में वृक्षों की पूजा-उपासना का विधान क्यों?

हिंदु संस्कृति में वृक्षों को पवित्र और देव स्वरूप माना गया है। **मनुस्मृति** के अनुसार वृक्ष योनि पूर्व जन्मों के कर्मो का परिणाम है। वृक्षों को जीवित और सुख-दुख का अनुभव करने वाला भी माना गया है। परमात्मा ने वृक्ष का सृजन संसार का कल्याण करने के लिए ही किया है, ताकि वह परोपकार के कार्यो में ही जुटे रहें।

वृक्ष भीषण गर्मी में तपते हुए भी अन्य प्राणियों को अपनी शीतल छाया प्रदान करते हैं। सद्पुरुष के समान आचरण करते हुए वृक्ष अपना सर्वस्व दूसरों के कल्याण के लिए अर्पित कर देते हैं। वृक्षों की घनी छाया तले बैठकर ही अनेक ऋषि-मुनियों और तपस्वियों

ने सर्दी, गर्मी और बरसात से बचते हुए तपस्या करके सिद्धियां हस्तगत की हैं।

विष्णु स्मृति के कूपतड़ाग खननं तदुत्सर्ग में कहा गया है कि– **वृक्षारोपयितुवर्वृक्षा परलोके पुत्रा भवन्ति वृक्षप्रदो।**

वृक्षप्रसूनैर्देवाहे प्रीणयित फलैश्चतिधीन्॥
छाययाचाम्भ्यागतान् देवे वर्षत्युदकेन।
पितृन् पुत्र प्रदानेन श्रीमान् भवति॥

अर्थात् जो व्यक्ति वृक्षों का आरोपण करते हैं, वे वृक्ष परलोक में उसके पुत्र के रूप में जन्म लेते हैं। जो व्यक्ति वृक्ष का दान करते है, वृक्ष के पुष्पों द्वारा देवताओं के पूजन से उन्हें प्रसन्न करते हैं और मेघ के बरसने पर छाता बनकर अभ्यागतों को और जल से पितरों को प्रसन्न करते हैं, वह समृद्धिशाली होते हैं। विविध वृक्षों की पूजा-उपासना भिन्न-भिन्न प्रकार से की जाती है। **अशोक-अष्टमी** के दिन अशोक वृक्ष की पूजा की जाती है। अशोक वृक्ष की पूजा करने से शोक नष्ट होते हैं और प्रसन्नता प्राप्त होती है। **वट-सावित्री** के अवसर पर वट (बरगद) वृक्ष की पूजा की जाती है। वट वृक्ष की पूजा करने से स्त्रियों को अचल सौभाग्य की प्राप्ति होती है। कार्तिक मास में आंवले के वृक्ष में भगवान विष्णु का निवास माना गया है। अत: आंवले के वृक्ष की पूजा एवं परिक्रमा करके स्त्रियां अपने सुहाग का वरदान मांगती हैं।

वास्तव में आंवले के वृक्ष में भगवान विष्णु का निवास माना गया है। अत: आंवले के वृक्ष की पूजा-परिक्रमा भगवान विष्णु को प्रसन्न करने के लिए की जाती है। तुलसी का प्रतिदिन पूजन करना और जल चढ़ाना स्त्रियों के लिए अनेक शुभकारी परिणाम देने वाला कहा गया है।

पीपल के वृक्ष में त्रिदेव (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) का निवास माना गया है। अत: पीपल के वृक्ष की पूजा-अर्चना करने से शुभत्व की प्राप्ति होती है। आम के वृक्ष के पत्ते, मंजरी, छाल और लकड़ी का उपयोग यज्ञ और अनुष्ठानों में किया जाता है। पारिजात वृक्ष को **कल्पतरु** मानकर पूजा-अर्चना की जाती है। अनावश्यक रूप से वृक्षों को काटना और उनकी शाखाएं, पत्तियां तोड़ना अधार्मिक माना गया है, क्योंकि वृक्षों में भी प्राण होते हैं। यह तथ्य अब वैज्ञानिक भी निर्विवाद रूप से सिद्ध कर चुके हैं कि वृक्ष भी सुख-दुख और गर्मी, सर्दी व बरसात जैसी सभी परिस्थितियों से प्रभावित होते हैं और इनका भली प्रकार अनुभव भी करते हैं। यही कारण है कि धर्मशास्त्रों में वृक्षों को नष्ट करने वाले की निन्दा की गई है। इस बारे में **ऋग्वेद (6/48/17)** में कहा गया है–

मा काकम्बीरमुद्वृहो वनस्पतिं शस्तीर्वि हि नीनशः।
मोत सूरो अह एवा चन ग्रीवा अदधते वेः॥

अर्थात दुष्ट बाज पक्षी जैसे अन्य निर्बल पक्षियों की गरदन मरोड़कर उन्हें दु:ख देता है और मार डालता है, तुम भी वैसे ही मत बनो। इन वृक्षों को दु:ख मत दो, इनको मत उखाड़ो। ये पशु-पक्षियों और जीव-जन्तुओं को शरण देते हैं।

❑

मोर का पंख छिपे हुए शत्रुओं से बचाता है ऐसे करें उपाय

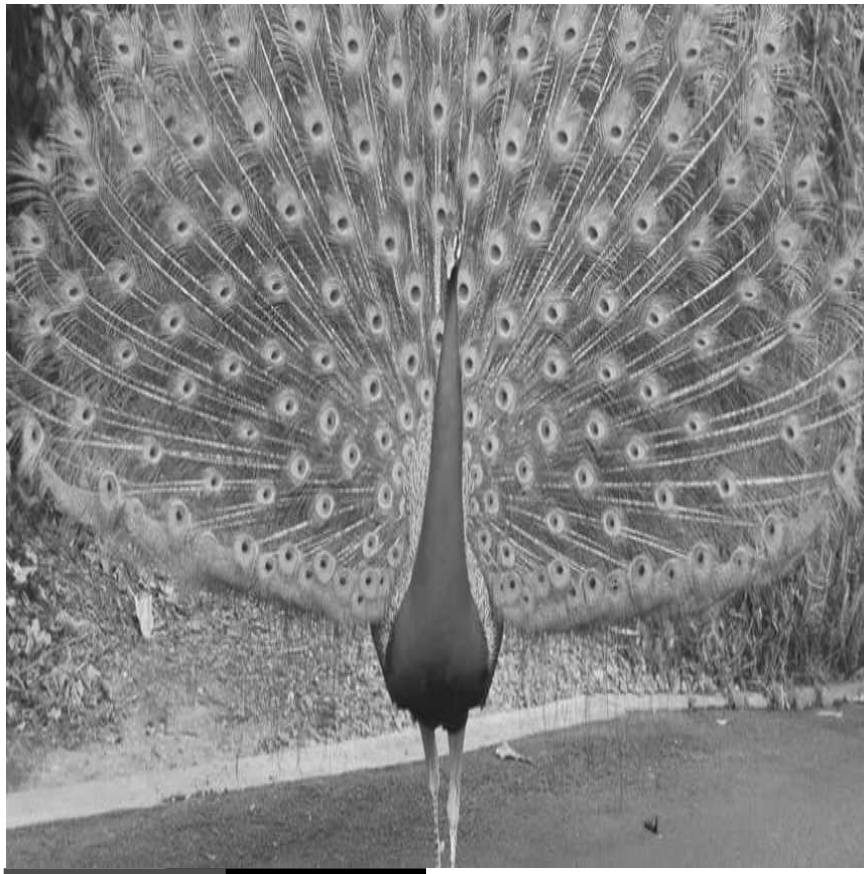

राष्ट्रीय पक्षी मोर को धार्मिक कथाओं में उच्च कोटि का दर्जा दिया गया है। भगवान श्रीकृष्ण के मुकुट में लगा मोर का पंख इस पक्षी के अहमियत को भी बताता है। वैसे मोर पंख व्यक्ति की जिंदगी में भी काफी मायने रखता है। मोर पंख में व्यक्ति की सारी परेशानियों को दूर करने की भी ताकत होती है।

लीलाशंकर पाण्डेय

राष्ट्रीय पक्षी मोर को धार्मिक कथाओं में उच्च कोटि का दर्जा दिया गया है। भगवान श्रीकृष्ण के मुकुट में लगा मोर का पंख इस पक्षी के अहमियत को भी बताता है। वैसे मोर पंख व्यक्ति की जिंदगी में भी काफी मायने रखता है। मोर पंख में व्यक्ति की सारी परेशानियों को दूर करने की भी ताकत होती है। जानिए एक मोर पंख कैसे दूर करता है व्यक्ति की परेशानियों को।

☞ घर के दक्षिण पूर्व कोण मोर पंख लगाने से अचानक कष्ट नहीं आता।

☞ मोर पंख काल सर्प दोष को भी दूर करता है। काल सर्प दोष से प्रभावित व्यक्ति सोमवार की रात को अपने तकिए में सात मोर पंख रखें और रोज इसी तकिए का प्रयोग करें।

☞ अगर आपका बच्चा जिद्दी है तो उसके कमरे के छत्त के पंखे में मोर पंख लगा दें। जिससे पंखा चलने पर मोर पंख की हवा धीरे-धीरे बच्चे को लगेगी तो उसका जिद्दीपन कम होगा।

☞ माना जाता है कि मोर और सांप में दुश्मनी है। सांप शनि व राहु के संयोग से बनता है। ऐसे में मोर पंख को घर के पूर्वी और उत्तर पश्चिम की दीवार पर लगाने से राहु दोष परेशान नहीं करता।

☞ नवजात बच्चे के सिर की तरफ दिन रात एक मोर का पंख चांदी के ताबीज में डाल कर रखने से बालक डरता नहीं है और हर नजर दोष से बचा रहता है।

☞ यदि आप शत्रु से अधिक परेशान हैं तो मोर पंख पर हनुमान जी के मस्तक के सिंदूर से मंगलवार या शनिवार की रात को शत्रु का नाम लिखकर घर के मंदिर में रख दें और सुबह बिना नहाए चलते पानी में बहा दें।

❑

❑ पंकज पाण्डेय

नागरिक का फर्ज

एक बार की बात है चीन के महान दार्शनिक कन्फ्यूशियस अपने चेलों के साथ एक पहाड़ी से गुजर रहे थे। थोड़ी दूर चलने के बाद वो एक जगह अचानक रुक गये और कन्फ्यूशियस बोले-कही कोई रो रहा है। वो आवाज को लक्ष्य करके उस ओर बढ़ने लगे। शिष्य भी पीछे हो लिए एक जगह उन्होंने देखा कि एक स्त्री रो रही है।

कन्फ्यूशियस ने उसके रोने का कारण पूछा तो स्त्री ने कहा इसी स्थान पर उसके पुत्र को चीते ने मार डाला। इस पर कन्फ्यूशियस ने उस स्त्री से कहा तो तुम तो यहां अकेली हो न तुम्हारा बाकि का परिवार कहां है? इस पर स्त्री ने जवाब दिया हमारा पूरा परिवार इसी पहाड़ी पर रहता था लेकिन अभी थोड़े दिन पहले ही मेरे पति और ससुर को भी इसी चीते ने मार दिया था। अब मेरा पुत्र और मैं यहाँ रहते थे और आज चीते ने मेरे पुत्र को भी मार दिया।

इस पर कन्फ्यूशियस हैरान हुए और बोले कि अगर ऐसा है तो तुम इस खतरनाक जगह को छोड़ क्यों नहीं देती। इस पर स्त्री ने कहा। इसलिए नहीं छोडती क्योंकि कम से कम यहाँ किसी अत्याचारी का शासन तो नहीं है और चीते का अंत तो किसी न किसी दिन हो ही जायेगा।

इस पर कन्फ्यूशियस ने अपने शिष्यों से कहा निश्चित ही यह स्त्री करूणा और सहानुभूति की पात्र है लेकिन फिर भी एक महत्वपूर्ण सत्य से इसने हमें अवगत करवाया है कि एक बुरे शासक के राज्य में रहने से अच्छा है किसी जंगल या पहाड़ी पर ही रह लिया जाये। जबकि मैं तो कहूँगा एक समुचित व्यवस्था यह है कि जनता को चाहिए कि ऐसे बुरे शासक का जनता पूर्ण विरोध करें और सत्ताधारी को सुधरने के लिए मजबूर करे और हर एक नागरिक इसे अपना फर्ज समझे।

❑

माता-पिता की सेवा न करने का फल

एक आदमी भयंकर कोढ़ से पीड़ित दुकान-दुकान और गली-गली घूम रहा था। जिस समय वह एक घर के द्वार पर भिक्षा के लिये पहुँचा, उस समय एक ज्योतिषी वहाँ बैठा हुआ। उसको देखकर घर के स्वामी ने पूछा ज्योतिषीजी! आप कहते हैं कि मैं प्रश्न के द्वारा तीनों जन्मों का हाल सही-सही बतलाता हूँ, सो क्या इस कोढ़ी के भाग्य का हाल बताने की कृपा करेंगे। यह सुनकर ज्योतिषी ने कहा—''क्यों नहीं? मैं अभी प्रश्न द्वारा इसके पूर्व जन्म का हाल बताता हूँ।'' तदनन्तर अपने गणित का हिसाब लगाकर जो फलादेश लिखकर बताया वह इस प्रकार था—इसने पूर्व जन्म में और इस जन्म में अपने माता-पिता की सेवा ही नहीं की, बल्कि उन्हें हर प्रकार दुख दिया। तू उनका न तो कहना मानता था और न उनकी शिक्षा पर ध्यान देता था परन्तु मोहवश फिर भी वे तेरी बुराइयों की ओर ध्यान न देकर तेरे शरीर को हर प्रकार सुख देने का यत्न करते थे। हे पापात्मा! जिन्होंने अपने शरीर के रक्त से तेरा शरीर बनाया उसे न केवल भोजन वस्त्र दिया बल्कि हर प्रकार के कष्ट से भी सुखी रक्खा। परन्तु फिर भी तैने उसके कर्म का बदला कुछ न चुकाया। बल्कि उन्हें दिन रात कष्ट देकर उनके शरीर को जलाता रहा। इसी कारण तुझे मर कर नरक भोगना पड़ेगा और आयु पर्यन्त इस भयंकर कोढ़ से पीड़ित रहना पड़ेगा।

ज्योतिषी की यह बात सुनकर सभी विस्मित हो गये और उन्होंने अपने-अपने माता-पिताओं की सदैव आज्ञा में रहकर तन-मन से सेवा करने की प्रतिज्ञा की।

❑

श्रीरामजी का बंधुप्रेम

महामंडलेश्वर डॉ स्वामी उमाकान्तानन्द सरस्वती जी महाराज

रामजी का बंधुप्रेम भी अलौकिक है ऐसा बंधुप्रेम आपको जगत में कही देखने को नहीं मिलेगा। जब दशरथ ने रामजी को राज्याभिषेक करने की सोची, तब रामजी लक्ष्मण से कहते हैं- लक्ष्मण, यह राज्य तेरा है, मैं तो निमित्त रूप हूं, तुम मेरे बाह्य प्राण हो, यह जीवन और राज्य तेरे लिए है।

रामजी वन में पधारे तो रामजी के पीछे-पीछे लक्ष्मण गये- इसमें क्या आश्चर्य है। कैकेयी ने वनवास तो रामचन्द्रजी को दिया, लक्ष्मण को नहीं। फिर भी रामजी वन जाते हैं, तब लक्ष्मण माता-पिता और पत्नी को छोड़कर बड़े भाई के पीछे जाते हैं। रामजी का प्रेम ऐसा है कि राम-वियोग से लक्ष्मण अयोध्या में रह नहीं सके। लक्ष्मण पत्नी और माता-पिता को छोड़ सकते हैं, किन्तु बड़े भाई को छोड़ नहीं सकते है। राम वियोग लक्ष्मण से सहन नहीं हुआ। जहां रामजी हैं, वही लक्ष्मण हैं।

ऐसा बंधुप्रेम आपको जगत में कही देखने को नहीं मिलेगा। जब दशरथ ने रामजी को राज्याभिषेक करने की सोची, तब रामजी लक्ष्मण से कहते हैं- लक्ष्मण, यह राज्य तेरा है, मैं तो निमित्त रूप हूं, तुम मेरे बाह्य प्राण हो, यह जीवन और राज्य तेरे लिए है।

रामजी ने खेल हारने में भी छोटे भाइयों के दिल को दुखाया नहीं। रामजी इस तरह खेलते हैं कि उनकी हार होती है और लक्ष्मण और भरत की जीत होती है। रामजी बोलते हैं कि मेरे भाई की जीत मेरी ही जीत होती है। रामजी कौशल्याजी से कहते हैं कि भरत मुझसे छोटा होते हुए भी वह जीत गया और मैं हार गया। भरत कौशल्याजी से कहता है माँ बड़े भाई का मेरे ऊपर बहुत प्रेम है। वह जान बुझकर हार जाते हैं। रामजी ने जगत को बन्धु-प्रेम का आदर्श दिखाया है। कैकेयी कहती हैं, ''मैंने भरत के राज्य दिया है।'' तब रामजी कहते हैं, माँ, मेरा छोटा भाई यदि राजा बनता है तो मैं सदा के लिए वन में रहने के लिए तैयार हूँ।

लोग तो कहते है कि भरत का प्रेम राम के प्रेम से श्रेष्ठ है। राज्य भरत ने नहीं किया। गद्दी पर रामजी की पादुका को प्रतिष्ठित करके भरत कहते हैं। रामजी तो वन में तप करते हैं। इसमें क्या आश्चर्य है? किन्तु भरत महल में तप करते हैं।

भरत का यह नियम था कि कोई साधु, ब्राह्मण, गरीब आये तो उनको प्रेम से आतिथ्य करते थे। भरत ने चौदह साल तक अन्न नहीं खाया। ''मेरे बड़े भाई कन्दमूल खाते हैं तो मैं भोजन कैसे करूं?'' यह भरत का कहना था। भरत का प्रेम अति दिव्य है। रामजी तो वन में शयन करते हैं, तो भरत लाल पृथ्वी पर शयन

करते हैं। भरत राम की पादुका पर नजर रखकर सतत! 'राम! राम!' जप करते हैं।

आप छोटे भाई को प्रेम करेंगे तो वह आप से प्रेम करेगा। जगत में राम-राज्य कब होगा, भगवान जाने। मनुष्य की छाती पर काम और स्वार्थ चढ़ बैठे है, तब तक रामराज्य की सम्भावना नहीं है। किन्तु आप के घर में आप ऐसा राम-राज्य कर सकते हैं। जो व्यक्ति शुद्ध भाव से अपने भाई को प्रेम करेगा, वह भी उतने ही शुद्ध भाव से आपके प्रति प्रेम करेगा। कुछ लोग ऐसे होते हैं जो भाई से तो कपट करते हैं दूसरों से प्रेम करते हैं।

यह कलियुग की महिमा है। इसको बताने के लिए भाई-भाई में बैर होता है। एक गांव में हमको अनुभव हुआ। एक सेठ आये वे कहते हैं, ''महाराज, हमको ऐसा मंत्र दीजिए जिससे हम जीत जाएं।'' मैंने पूछा, ''आपकी क्या इच्छा है?'' सेठ कहते हैं कि मैंने दावा किया है, उसमें जीत जाने की इच्छा हैं। मैंने पूछा कि किसके ऊपर किया है? सेठ कहते हैं कि मेरे भाई के ऊपर। मुझे कहना पड़ा, ''आपकी बुद्धि बहुत बिगड़ी है।'' मेरे पास ऐसा कोई मन्त्र नहीं है। जो भाई से कपट करता है, जिसको भाई में भगवान नहीं दिखता, वह भगवान की भक्ति क्या करेगा?

आप छोटे भाई को प्रेम करेंगे तो वह आप से प्रेम करेगा। जगत में राम-राज्य कब होगा, भगवान जाने। मनुष्य की छाती पर काम और स्वार्थ चढ़ बैठे है, तब तक रामराज्य की सम्भावना नहीं है। किन्तु आप के घर में आप ऐसा राम-राज्य कर सकते हैं।

भगवान तो प्रत्यक्ष दिखते नहीं हैं। मूर्ति में भगवान की भावना करनी पड़ती है। किन्तु भाई तो प्रत्यक्ष दिखता है। उससे यदि कपट करे, तो उस कपटी की भक्ति को भगवान कैसे स्वीकार करेंगे? जिनको घर में रहकर भक्ति करनी है, उनको घर के प्रत्येक व्यक्ति में ईश्वर का भाव रखना चाहिए। सनातन धर्म तो यहां तक कहता है कि आपके आंगन में भिखारी आवे तो उस समय भी भगवान के दर्शन करें। कुछ लोग ऐसे होते हैं कि घर में कोई चीज खराब हो जाए, तभी भिखारी को बुलाकर दे देते हैं। भिखारी भी भगवान का अंश है। दान लेने वाला हल्का है, ऐसा समझकर दान करे तब तक दान सफल नहीं होगा।

भिखारी यह उपदेश देने आता है कि गत जन्म में मैंने किसी को कुछ दान नहीं दिया, इसीलिए मैं दरिद्र बना हूं। आप भी दान-पुण्य न करेंगे तो मेरे-जैसे बनेंगे। आज भी भगवान हमारे पास कभी दरिद्र नारायण के रूप में, कभी साधु के रूप में कभी ब्राह्मण के रूप में आते हैं। जब जीवन के सामने भगवान नहीं दिखता है तो भगवान को बुरा लगता है।

ज्ञानी कहता है कि ईश्वर का कोई रूप नहीं। वैष्णव मानते हैं कि जगत में जितने लोग होते हैं, सब भगवान के स्वरूप हैं। ईश्वर अनेक रूप धारण करते हैं। किसी का तिरस्कार मत करो, किसी के प्रति बुरा भाव मत रखो, तब घर में रहकर भक्ति कर सकोगे। उपेक्षा रखे बिना सबसे प्रेम करो, स्वार्थ भाव से प्रेम मत करो। सब में मेरे भगवान हैं- इस भाव के साथ सबसे प्रेम करो।

मनुष्य का जन्म दूसरो को सुखी करने के लिए हैं। बहुत दफा मनुष्य परोपकार में शरीर घिसता है, तब उसको दु:ख होता है कि लोगों ने मेरी कुछ कदर नहीं की। किन्तु रामजी की भी लोगों ने निन्दा की है। इसलिए सत्कर्मों की कदर भगवान के दरबार में ही होगी। मान-दान सबसे श्रेष्ठ है। आप सबसे प्रेमपूर्वक बर्ताव करेंगे तो सब आप से प्रेम करेंगे।

जो कपट खेलता है उसका मन सदा अशान्त रहता है। जिनका व्यवहार अतिशुद्ध होता है, उनके पास कुछ न होने पर भी उनको शांति मिलती है। पाप सदा के लिए छिपता नहीं है, एक न एक दिन वह जाहिर जरूर होगा। इसलिए यदि शांति चाहिए तो धर्म की मर्यादा का पालन कीजिए। श्रीरामजी ने जगत में धर्म का आचरण सिखाया हैं। श्रीरामजी कर्म का प्रकाश देने वाले सूर्य हैं। ❑

मंदिर का निर्माण क्यों?

एक बार जगद्गुरु शंकराचार्य से एक व्यक्ति ने पूछा, ''आचार्यवर! आप तो वेदांत के ज्ञाता हैं। भगवान् को आप निराकार व सर्वव्यापी मानते हैं, फिर मंदिरों की प्रदर्शनात्मक मूर्तिपूजा का समर्थन क्यों करते हैं ?''

बृजेश ओझा

मंदिर एक ऐसा स्थल होता है, जहां आध्यात्मिक और धार्मिक वातावरण मिलता है तथा देवपूजा उसका लक्ष्य होता है। यहां अकेले या अन्य व्यक्तियों की उपस्थिति में भी बैठकर शांत मन से जाप, पूजा-पाठ, आरती, भजन, मंत्र पाठ, ध्यान आदि किए जा सकते हैं। ऐसे धूप-दीप आदि सुगंधित द्रव्यों के कारण मंदिर के चारों ओर दिव्य शक्ति का संचार रहता है, जिसके कारण भूत-प्रेत और विषाणुयुक्त कीटाणुओं की शक्ति क्षीण होती है। मंदिर के वातावरण में मन की भाव-दशा प्रभु की भक्ति, पूजा, प्रार्थना उपासना के अनुकूल होती है, जिससे इन कर्म-कांडों को पूरा करने से अभीष्ट फल की प्राप्ति होती है।

एक बार जगद्गुरु शंकराचार्य से एक व्यक्ति ने पूछा, ''आचार्यवर! आप तो वेदांत के ज्ञाता हैं। भगवान् को आप निराकार व सर्वव्यापी मानते हैं, फिर मंदिरों की प्रदर्शनात्मक मूर्तिपूजा का समर्थन क्यों करते हैं ?''

आचार्य बोले, ''वत्स! उस दिव्य, सर्वव्यापी चेतना का बोध सबको नहीं होता। मंदिरों में प्रातः-संध्या शंख-घंटों के नाद से दूर-दूर तक उपासना के समय का बोध कराया जाता है। घर-घर उपासना के योग्य उपयुक्त स्थल नहीं मिलते, मंदिर के संस्कारित वातावरण में कोई भी उपासना कर सकता है। नैतिकता, सदाचार और श्रद्धा के निर्झरों के रूप में मंदिर अत्यंत उपयोगी हैं। जनसाधारण के लिए ये अत्यावश्यक हैं।''

इसी तरह मंदिर के ऊपर गुंबद बनाना ध्वनि सिद्धांत और वास्तुकला की दृष्टि से अति महत्त्वपूर्ण है। साधक देव प्रतिमाओं के सामने बैठकर पूजा-अर्चन में जो मंत्र जाप करते हैं, उनकी ध्वनि मंदिर के गुंबद से टकराकर घूमती है और ऊपर की ओर गुंबद के संकरे होते जाने के कारण केंद्रीभूत हो जाती है। गुंबद का सबसे ऊपर का मध्य भाग जहां कलश-त्रिशूल आदि लगे होते है। वह अत्यंत संकरा और बिंदु रूप होता है। यह स्थान इस प्रकार बनाया जाता है कि देव प्रतिमा का सहस्रार स्थान और गुंबद का बिंदु स्थान एक सीध में रहें।

मंत्र शाश्वत शब्द ब्रह्म हैं और उनमें सभी प्रकार की ईश्वरीय शक्ति होती है। अतः गुंबद से टकराकर जब मंत्र ध्वनि देवता के सहस्रार से टकराती है, तो देव प्रतिमाएं चेतन हो जाती हैं और साधक को मनोनुकूल फल प्रदान करती हैं। गुंबद हमारे ऋषि-मुनियों द्वारा खोजे गए पिरामिड संबंधी ज्ञान के प्रतिरूप भी हैं। पिरामिड सिद्धांत के गुंबद के रूप में एक ऐसे शक्ति क्षेत्र का निर्माण किया जाता है जहां रखी वस्तुएं बहुत समय तक पृथ्वी के बाहरी प्रभाव से मुक्त होकर सुरक्षित रहती हैं। ❑

धर्मकृत्यों में पुष्पार्पण क्यों?

नरेश चौहान

हिंदू संस्कृति में पुष्पार्पण, माल्यार्पण आदि का बड़ा महत्त्व है। पुष्प के सौन्दर्य और उसकी सुगंध से देवी-देवता प्रसन्न होते हैं और मनोवांछित फल प्रदान करते हैं। इसी कारण देवी-देवता और भगवान की आरती के समय, व्रतः उपवास या विभिन्न पर्वों पर पुष्प अर्पित करने का प्रचलन है।

हिंदू संस्कृति में पुष्पार्पण, माल्यार्पण आदि का बड़ा महत्त्व है। पुष्प के सौन्दर्य और उसकी सुगंध से देवी-देवता प्रसन्न होते हैं और मनोवांछित फल प्रदान करते हैं। इसी कारण देवी-देवता और भगवान की आरती के समय, व्रतः उपवास या विभिन्न पर्वों पर पुष्प अर्पित करने का प्रचलन है।

कुलार्णव तन्त्र में कहा गया है–
पुण्य संवर्धनाच्चापि पापौघपरिहारतः।
पुष्कलार्थप्रदानार्थं पुष्पमित्यभिधीयते॥

अर्थात् पुण्य वृद्धि करने, पापों को नष्ट करने और श्रेष्ठ फल प्रदान करने के कारण ही पुष्प को पुष्प कहा जाता है। **विष्णु-नारदीय व धर्मोत्तर पुराण** में कहा गया है–
पुष्पैर्देवां प्रसीदंति पुष्पैः देवाश्च संस्थिताः
न रत्नैर्न सुवर्णेन न वित्तेन च भूरिणा तथा
प्रसादमायाति यथा पुष्पैर्जनार्दन।

अर्थात् देवता रत्न, सुवर्ण, भूरिद्रव्य, व्रत, तप और अन्य किसी भी साधन से उतने प्रसन्न नहीं होते, जितने कि पुष्प अर्पित करने से होते हैं।

शारदा तिलक में कहा गया है–**दैवस्य मस्तकं कुर्यात्कुसुमोपहितं सदा।** अर्थात् देवता का मस्तक सदा पुष्पों से शोभित रहना चाहिए। पुष्पों को श्रृंखलाबद्ध करके माला बनाई जाती है और पुष्पों की यह माला जब देवताओं के कंठ में डाली जाती है तो वे अति प्रसन्न होते हैं। माला के बारे में ***ललिता सहस्रनाम*** में कहा गया है–**मां शोभा लातीति माला** अर्थात् जो शोभा देती है, वही माला है।

प्रायः देवताओं को भिन्न-भिन्न प्रकार के पुष्प अर्पित किए जाते हैं। यथा–गणेशजी को तुलसीदल के अतिरिक्त सभी पुष्प अर्पित किए जा सकते हैं। शिव की पूजा में धतूरा, मौलसिरी, जवा, कनेर, आक, कुश, निर्गुंडी के पुष्प, हारसिंगार और नागकेसर के सफेद फूल और सूखे कमलगट्टे आदि अर्पित किए जाते हैं। सूर्यदेव की उपासना कुटज पुष्पों से किए जाने का विधान है। इसके अतिरिक्त कमल, कनेर, मौलसिरी, चम्पा, पलाश, आक और अशोक के पुष्प भी सूर्यदेव को अर्पित किए जाते हैं, किन्तु तगर पुष्प सूर्यदेव को अर्पित किया जाना वर्जित है।

गौरी को महादेव शिव पर अर्पित किए जाने वाले पुष्प अति प्रिय हैं, किन्तु कुछ शास्त्रों के अनुसार आक और मदार के पुष्प इन्हें अर्पित नहीं किए जाते। इनके अतिरिक्त कनेर, बेला, अपामार्ग, पलाश, चम्पा, चमेली और श्वेत कमल के पुष्प भी अर्पित किए जाते हैं।

भगवान श्रीकृष्ण को अर्पित किए जाने वाले पुष्पों के सम्बन्ध में वे स्वयं धर्मराज युधिष्ठिर से इस प्रकार कहते हैं, ''राजन्! मुझे कुमुद, करवरी, चणक, मालती, नंदिक, पलाश और वनमाला के पुष्प अति प्रिय हैं।'' लक्ष्मी जी को कमल-पुष्प सर्वाधिक प्रिय है। भगवान श्री विष्णु को कमल, मौलसिरी, जूही, कदंब, केवड़ा, चमेली, अशोक, मालती, वैजयंती, चम्पा और बसंती के पुष्प विशेष रूप से प्रिय हैं।

कालिका पुराण के अनुसार कभी भी किसी भी देवता को बासी, कटा-फटा, धरती पर गिरा हुआ, गंदा, कीड़ा लगा, मांगा हुआ और चोरी किया हुआ पुष्प नहीं चढ़ाना चाहिए। इस बारे में एक बात विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि कमल और कुमुद के पुष्प ग्यारह से पन्द्रह दिन तक बासी नहीं होते तथा अगस्त्य के पुष्प कभी भी बासी नहीं होते। चम्पा की कली के अलावा किसी भी पुष्प की कली देवताओं को अर्पित नहीं की जाती। केतकी के पुष्प किसी भी पूजन में अर्पित नहीं किए जाते। शास्त्रों के अनुसार मध्याह्न स्नान के बाद पुष्प तोड़ना वर्जित है। ❑

भारतीय विद्यार्थी

एक बार एक भारतीय विद्यार्थी ने अमेरिका के एक स्कूल में दाखिला लिया, स्कूल का पहला दिन था, अध्यापिका बच्चों से सवाल कर रही थी।

अध्यापिका: आईये अमेरिका के इतिहास पर नजर डालकर पढ़ाई शुरु करते हैं। बताओ किसने कहा था। मुझे आजादी दो या मौत दे दो।

पूरी क्लास खामोश रही सिर्फ भारतीय ने

जवाब दिया: पेट्रिक हैनरी 1775।

अध्यापिका: बहुत अच्छे, अब बताओ ये वाक्य किसका है, धरती से जनता के लिए, जनता द्वारा, जनता की सरकार नहीं समाप्त होनी चाहिए।

इस बार भी पूरी क्लॉस खामोश रही सिर्फ भारतीय ने जवाब दिया: अब्राहम लिंकन 1863।

अध्यापिका: पूरी क्लॉस को शर्म आनी चाहिए, एक भारतीय छात्र को अमेरिका का इतिहास ज्यादा मालूम है।

इस पर एक छात्र पीछे से बोला: इस को मारो।

अध्यापिका (गुस्से में)-ये किसने कहा?

भारतीय जनरल क्लस्टर 1862।

भारतीय के इस एक और जवाब पर एक और बच्चा बोला, मैं उल्टी कर दूंगा।

अध्यापिका (झल्लाते हुए)- अब ये किसने कहा?

भारतीय- जार्ज बुश ने

जापानी प्रधानमंत्री से 1991 में।

भारतीय के इस एक और जवाब पर पूरी क्लास का दिमाग खराब हो गया, किसी ने चिल्लाते हुए कहा, अगर अब तुमने एक शब्द भी बोला तो मैं तुम्हारी जान ले लूंगा।

यह सुनकर भारतीय पूरे जोश के साथ चिल्लाया: माईकल जैक्सन, अपने खिलाफ गवाही दे रहे बच्चे से, 2004 में। भारतीय के इस जवाब पर अध्यापिका बेहोश हो गई, सारे बच्चे उसके चारों और इकट्ठा हो गए। किसी एक ने कहा, ओह शिट, हम बुरी तरह फंस गए हैं। इस पर भारतीय बोला: जार्ज बुश, इराक युद्ध के दौरान 2007। भारतीय के इस जवाब से सारे बच्चे बेहोश हो गये।

एलोरा का 10 रोचक तथ्य

1. स्थानीय स्तर पर एलोरा की गुफाओं को 'वेरुल लेणी' के नाम से जाना जाता है।
2. यह सम्पूर्ण विश्व में चट्टान को काट कर बनाए गए सबसे बड़े मठ-मंदिर परिसरों में से एक है।
3. एलोरा की गफुाएँ भारत के शैल-कृत्य स्थापत्य का अद्‌भुत नमूना हैं।
4. एलोरा, विश्व में सबसे बड़े एकल एकाश्म उत्खनन विशाल कैलाश (गुफा 16) के लिए विख्यात है।
5. अजंता की गुफाओं से भिन्न, एलोरा की गुफाओं की विशेषता यह है कि व्यापार मार्ग के अत्यंत निकट स्थित होने के कारण इनकी कभी भी उपेक्षा नहीं हुई।
6. 19वीं सदी के दौरान इन गुफाओं पर इंदौर के होल्करों का नियंत्रण हो गया था, जिन्होनें पूजा के अधिकार के लिए इनकी नीलामी की तथा धार्मिक और प्रवेश शुल्क के लिए पट्टे पर दे दिया। होल्करों के बाद इनका नियंत्रण हैदराबाद के निजाम को अंतरित कर दिया गया, जिसने भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के मार्गदर्शन में अपने विभाग के माध्यम से गुफाओं की व्यापक मरम्मत एवं रख-रखाव करवाया गया।
7. एक बड़े पठार की कगार में इन गुफाओं का उत्खनन किया गया है, जो उत्तर-पश्चिम दिशा में लगभग 2 किलोमीटर तक फैला हुआ है। कगार अर्ध-वृत्ताकार रूप में होने से, दक्षिण में दाएं वृत्तांश पर बौद्ध धर्म समूह, जबकि उत्तर में बाएं वृत्तांश पर जैन धर्म समूह एवं केंद्र में हिन्दू धर्म समूह की गुफाएँ हैं।
8. दशावतार गुफा (गुफा संख्या 15) में भगवान विष्णु के दस अवतारों को दर्शाया गया है।
9. ये गुफाएं महाराष्ट्र की ज्वालामुखीय बसाल्टी संरचनाओं को काट कर बनाई गई हैं, जिन्हें 'दक्कन ट्रेप' कहा जाता है।
10. यहाँ स्थित सबसे प्रसिद्ध बौद्ध गुफा 'विश्वकर्मा गुफा' (गुफा संख्या 10) है, जो कि एक चौत्यगृह है।

मानव जीवन का लक्ष्य

महामंडलेश्वर डॉ. स्वामी उमाकान्तानन्द सरस्वती जी महाराज

परमात्मा श्रीराम का दर्शन करने से मनुष्य-जीवन सफल होता है। श्रीराम सब सद्‌गुणों के भण्डार हैं। जो जीव श्रीरामजी की सेवा करते हैं, जो श्रीरामजी के सद्‌गुणों को जीवन में उतारते हैं, जिनका जीवन श्रीरामजी जैसा बनता है, वे जीव रामजी का दर्शन कर सकते हैं। बिना सेवा के श्रीरामजीके दर्शन नहीं हो सकते। परमात्मा के दर्शन, परमात्माकी प्राप्ति, यही मानव जीवन का लक्ष्य है। इसी में मानव-जीवनकी सफलता है।

मनुष्य को जीवन के लक्ष्य का पता नहीं है। मानव को ज्ञान नहीं है कि इस जीवनमें मेरा क्या कर्त्तव्य है, मुझे क्या करना चाहिये और मैं क्या कर रहा हूँ? मेरे जीवन का लक्ष्य क्या है और मैं कहाँ जा रहा हूँ?

खाना-पीना, खेलना और वंश-वृद्धि करना, क्या यही मानव जीवन का लक्ष्य है? ये सब तो पशु भी करते हैं। आहार-विहार का ज्ञान पशुओंको भी होता है। पशु भी भोग भोगते हैं। मानव केवल भोगों के पीछे पागल बनकर तो पशु और मानव में भेद क्या है? मानवका एक विशिष्ट लक्ष्य है- प्रभु को प्राप्त करना, आत्मा को परमात्मा में लीन कर देना।

जीवन में मनुष्यों को कोई लक्ष्य अवश्य निश्चित करना चाहिये। जिसके जीवनमें कोई ध्येय नहीं, वह जीवन बिना नाविक की नाव के जैसा है। जो ध्येय निश्चित किया है, उस ध्येय को सिद्ध करनेके लिए साधन करो। मानव शरीर भोगों के लिए नहीं, भजन द्वारा परमात्माको प्राप्त करनेके लिए मिला है। मनुष्य का अवतार परमात्माकी आराधना करने के लिए है, तप करने के लिए है। मानव-देह श्रीरामके दर्शन प्राप्त करानेका साधन है। परमात्मा के दर्शन के लिए जो साधन नहीं करता, मानव-शरीर के प्राप्त होने पर भी जो परमात्मा की भक्ति नहीं करता, वह मनुष्य नहीं, अपितु पशु के समान है।

अरे, जिसे हम 'बन्दर' कहकर निकृष्ट समझते हैं, उस बानरमें जितना सद्‌गुण, संयम और नियम है, उतना मनुष्यमें कहाँ है? बानर चाहे कितना भी भूखा रहे, तो भी रामफल अथवा सीताफल नहीं खाएगा। कारण, इन फलों के साथ उसके आराध्यदेव का नाम जुड़ा हुआ है। अपने आराध्यदेवके प्रति ऐसी भक्ति और जिह्वा पर इतना संयम पशुकी गिनतीमें आने वाले बानर में है। जिसके जीवन में संयम

अरे, जिसे हम 'बन्दर' कहकर निकृष्ट समझते हैं, उस बानरमें जितना सद्‌गुण, संयम और नियम है, उतना मनुष्यमें कहाँ है? बानर चाहे कितना भी भूखा रहे, तो भी रामफल अथवा सीताफल नहीं खाएगा। कारण, इन फलों के साथ उसके आराध्यदेव का नाम जुड़ा हुआ है। अपने आराध्यदेव के प्रति ऐसी भक्ति और जिह्वा पर इतना संयम पशुकी गिनतीमें आने वाले बानर में है। जिसके जीवन में संयम नहीं, जिसके जीवन में प्रभु-भक्ति का कोई नियम नहीं, उसका जीवन निरर्थक है।

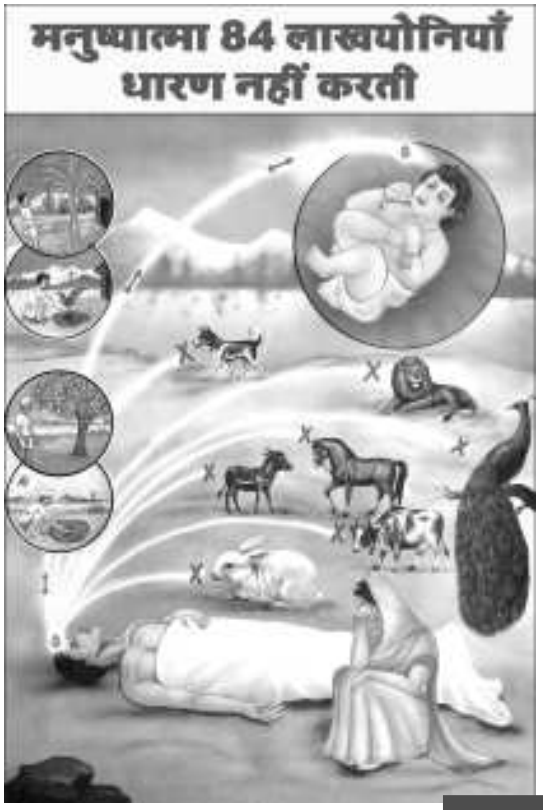

नहीं, जिसके जीवन में प्रभु-भक्ति का कोई नियम नहीं, उसका जीवन निरर्थक है।

जीव अनेक जन्मों से संसार में भ्रमण करता चला आ रहा है। अनेक जन्मों में इसने संसार के सम्पूर्ण भोग भोगे हैं। ये भोग तो पशु-पक्षी भी भोगते है। इन्द्रियजन्य सुख पशु-पक्षी का और मनुष्य का एक-सा ही है। मनुष्य को श्रीखण्ड खाने में जो सुख मिलता है, वही सूअर को विष्ठा खाने में मिलता है। मनुष्य को गद्दे पर लोटने में जो सुख मिलता है, वही सुख गधे को धूल में लोटने में मिलता है। पशु-पक्षी भी बालकों को जन्म देते हैं। गौरय्या चिड़िया भी (अपने जोड़े के साथ मिलकर) घर बनाकर रहती है। कबूतर-कबूतरी भी घूमने-फिरने जाते हैं। संसार का बहुत-सा व्यवहार मानव से इतर जीव भी भोगते हैं।

केवल मनुष्य में ही ऐसी विशिष्टता है कि यदि वह निश्चय करे, तो मन का, बुद्धि का सदुपयोग करके निरन्तर परमात्मा की भक्ति कर सकता है। मनुष्यके सिवाय भक्ति अन्य कोई नहीं कर सकता। मनुष्य-शरीर में ही भक्ति सम्भव है। भगवानके नाम जप का आनन्द केवल मनुष्य को ही मिलता है ये कबूतर अथवा बिल्ली को मिलना सम्भव नहीं। पशुओं को अपने स्वरूप की खबर नहीं। जब वे अपने स्वरूप को नहीं जानते, तो भगवान को कैसे जान सकते है? मनुष्य ही भगवान को जान सकता है।

मानव समझ सकता है कि यह पाप है और यह पुण्य है। पाप छोड़ना तथा निरन्तर भक्ति करना, यह बुद्धि मनुष्य में ही है। पशु पाप नहीं छोड़ सकता। पशु-योनि पाप का फल भोगने के लिए ही है। बिल्ली अनेक चूहों को मारती है, परन्तु उसको पाप लगता नहीं। बाघ-सिंह अनेक जीवों की हिंसा करते है, फिर भी इनके माथे पाप नहीं लगता। ये तो पापका फल, दुःख भोगते हैं। परन्तु कोई मनुष्य यदि जीव-हिंसा करे तो उसको पाप लगता है। पशु-पक्षी हिंसा करे, वह पाप की गिनती में नहीं। कारण पशु-योनि में अतिशय अज्ञानता है। पशुओंमें इतनी बड़ी अज्ञानता होती है कि तीन वर्ष बाद वह माता को भी भूल जाते हैं। उन्हें याद नहीं रहता कि यह हमारी माँ है अथवा यह हमारे पिता है।

मनुष्य-शरीर द्वारा ही पाप और पुण्य होते हैं। पाप छोड़ना और सतत् पुण्य करने की बुद्धि परमात्माने मनुष्यको दी है। मानव सावधान रहे, तो पाप छोड़ सकता है। मानव निश्चय करे तो सतत भक्ति भी कर सकता है। प्रभु ने मनुष्यों को जो ज्ञान और बुद्धि दी है, वह पशुओं को नहीं दी। आने वाले कल की चिन्ता मनुष्य करता है, पशु नहीं करता, न कर ही सकता है।

परमात्मा ने अत्यन्त कृपा करके मनुष्य-शरीर दिया है। इसे प्राप्त करके जो मनुष्य अपनी इन्द्रियों को वश में नहीं रखता, उसका जीवन अत्यन्त शोचनीय है। संसार के विषय-भोगों को भोगने के लिए यह शरीर नहीं मिला है। यह शरीर परमात्मा के कार्य के लिए मिला है। यह अनित्य शरीर भी नित्य परमात्मा की प्राप्ति करा सकता है।

भगवान ने कहा है कि मैंने अनेक प्रकार के शरीरों का निर्माण किया है, परन्तु उन सबमें मनुष्य शरीर मुझको अत्यन्त प्रिय है। इस शरीर में बुद्धिमान एकाग्रचित्त होकर ईश्वर का साक्षात् अनुभव कर सकता है। मनुष्य-शरीर ज्ञान तथा भक्ति प्राप्त करने का साधन होने से सर्वश्रेष्ठ है। मनुष्य-शरीर सब फलों का मूल है तथा सब पुरुषार्थोका साधन है। करोड़ों उपायों से भी इसको प्राप्त करना दुर्लभ है।

नौकारूपी इस उत्तम शरीर के कर्णधार गुरु हैं तथा परमात्माकी कृपारूपी अनुकूल वायु द्वारा ही इसको गति प्राप्त होती है। इतना साधन होने पर भी इस मनुष्यदेहरूपी नौका को प्राप्त करके जो मनुष्य भवसागरसे नहीं तर पाता, वह निश्चय ही आत्महत्या करता है।

रामचरितमानसमें रामजीने जगत को ज्ञान दिया है कि-

बड़े भाग मानुष तनु पावा। सुर दुर्लभ सद ग्रन्थन्हि गावा।।
साधन धाम मोच्छ कर द्वारा। पाइ न जेहि परलोक सँवारा।।
सो परत्र दुख पावइ, सिर धुनि धुनि पछिताइ।

जीव अनेक जन्मों से संसार में भ्रमण करता चला आ रहा है। अनेक जन्मों में इसने संसार के सम्पूर्ण भोग भोगे हैं। ये भोग तो पशु-पक्षी भी भोगते है। इन्द्रियजन्य सुख पशु-पक्षी का और मनुष्य का एक-सा ही है। मनुष्य को श्रीखण्ड खाने में जो सुख मिलता है, वही सूअर को विष्ठा खाने में मिलता है। मनुष्य को गद्दे पर लोटने में जो सुख मिलता है, वही सुख गधे को धूल में लोटने में मिलता है।

कालहि कर्महि ईस्वरहि, मिथ्या दोस लगाइ।।
आकर चारि लाख चौरासी। जोनि भ्रमत यह जिव अबिनासी।।
फिरत सदा माया कर प्रेरा। काल कर्म सुभाव गुन घेरा।।
कबहुँक करि करुना नर देही। देत ईस बिनु हेतु सनेही।।
नर तनु भव वारिधि कहुँ बेरो। सन्मुख मरुत अनुग्रह मेरो।।
करन धार सद्गुरु दृढ़ नावा। दुर्लभ साज सुलभ करि पावा।।
जो न तरै भवसागर, नर समाज अस पाइ।
सो कृत निन्दक मन्दमति, आत्माहन गति जाइ।।

मनुष्य-देह देकर तो परमात्माजीवके ऊपर ही की है। अब जीवको स्वयं अपने ऊपर कृपा करनी बाकी है।

आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः।

मानव स्वयं अपना मित्र भी हो सकता है अथवा शत्रु भी हो सकता है। जिसके जीवन में कोई लक्ष्य नहीं, अथवा लक्ष्य का ज्ञान होने पर भी जो उसको प्राप्त करने का साधन नहीं करता, वह स्वयं अपना नाश करता है। उसका पतन हो जाता है। श्रीराम के दर्शन के लिए जो साधन नहीं करता उसे अन्तकालमें बहुत पश्चाताप होता है। श्रीराम भगवान के दर्शन से ही शान्ति प्राप्त होती है। श्रीराम के बिना आराम मिलता नहीं।

मनुष्य शरीरमें ही परमात्मा के दर्शन का प्राप्त होना सम्भव है। मनुष्यों से इतर किसी को श्रीराम-दर्शन होता नहीं। स्वर्गमें स्थित देवगण बहुत सुख भोगते हैं, परन्तु उनको भी श्रीरामके दर्शन नहीं होते। इसलिए अत्यन्त सुख भोगने पर भी उनको शान्ति नहीं मिलती। स्वर्ग में धीरे-धीरे पुण्यों का नाश होता है।

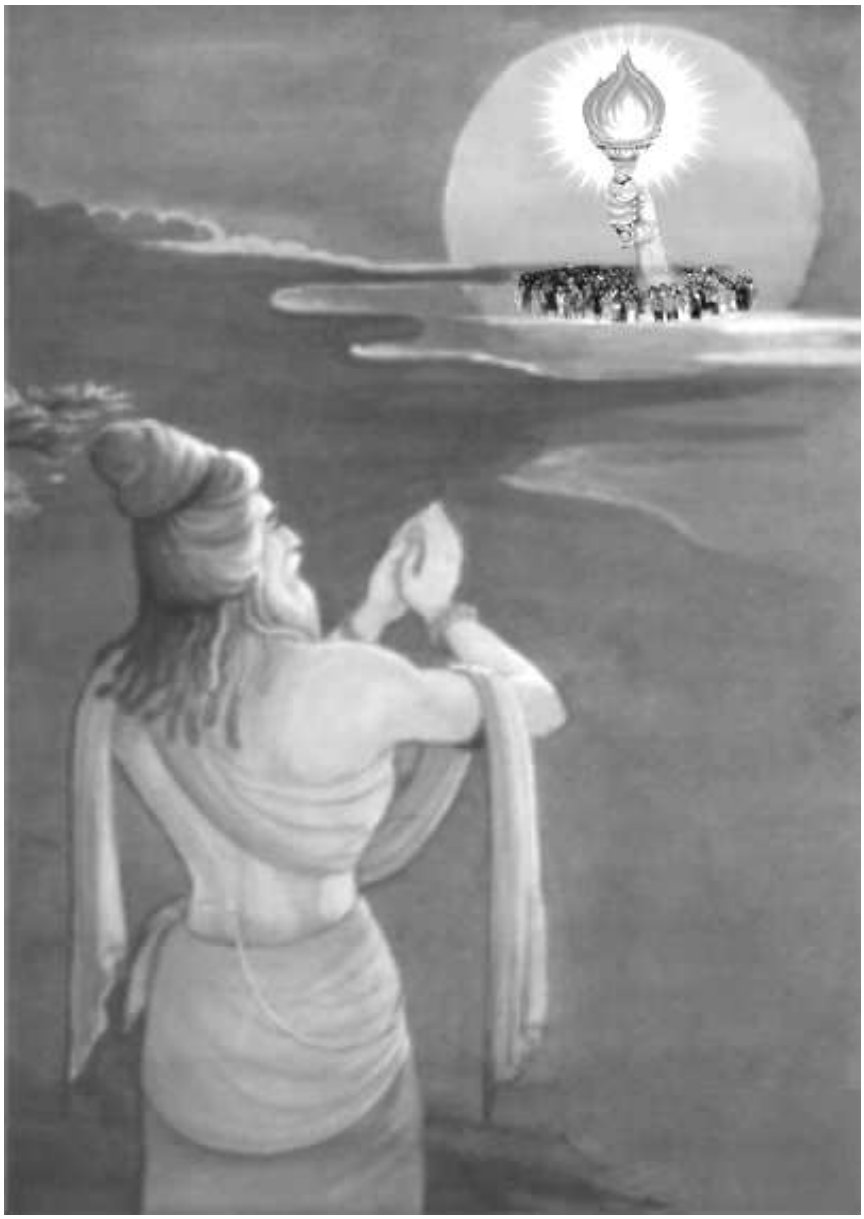

मनुष्य शरीरमें ही परमात्मा के दर्शन का प्राप्त होना सम्भव है। मनुष्यों से इतर किसी को श्रीराम-दर्शन होता नहीं। स्वर्ग में स्थित देवगण बहुत सुख भोगते हैं, परन्तु उनको भी श्रीरामके दर्शन नहीं होते। इसलिए अत्यन्त सुख भोगने पर भी उनको शान्ति नहीं मिलती। स्वर्ग में धीरे-धीरे पुण्यों का नाश होता है।

देवता पिछले जन्मों में किये हुए अपने पुण्योंका फल अर्थात् सुख भोगते हैं परन्तु देवता तप नहीं कर सकते। पशु भी तप नहीं कर सकते। केवल मनुष्य ही ऐसा भाग्यशाली प्राणी है, जो विवेकपूर्वक भोगों को भी भोग सकता है एवं भक्तिमय जीवन यापन के द्वारा भगवान को भी प्राप्त कर सकता है।

स्वर्ग में देवगण एक ओर तो सुख भोगमें अपने संचित पुण्यों का नाश करते हैं और दूसरी ओर किसी पुण्यका संचय भी नहीं कर सकते। आमदनी एक पैसे की न हो, अपितु रोजका खर्चा ही होवे तो घर में शान्ति रहती नहीं।

स्वर्ग में नया पुण्य प्राप्त नहीं होता, कारण कि स्वर्ग में देवता भक्ति नहीं कर सकते। भक्ति तो भारतवर्ष में तथा मनुष्य-शरीर में ही सम्भव है। भारतभूमि भक्तिभूमि है। भारतीय वही है, जिसका मन भक्तिमें रमण करता है, जिसको भक्ति में आनन्द आता है। 'भा' शब्द

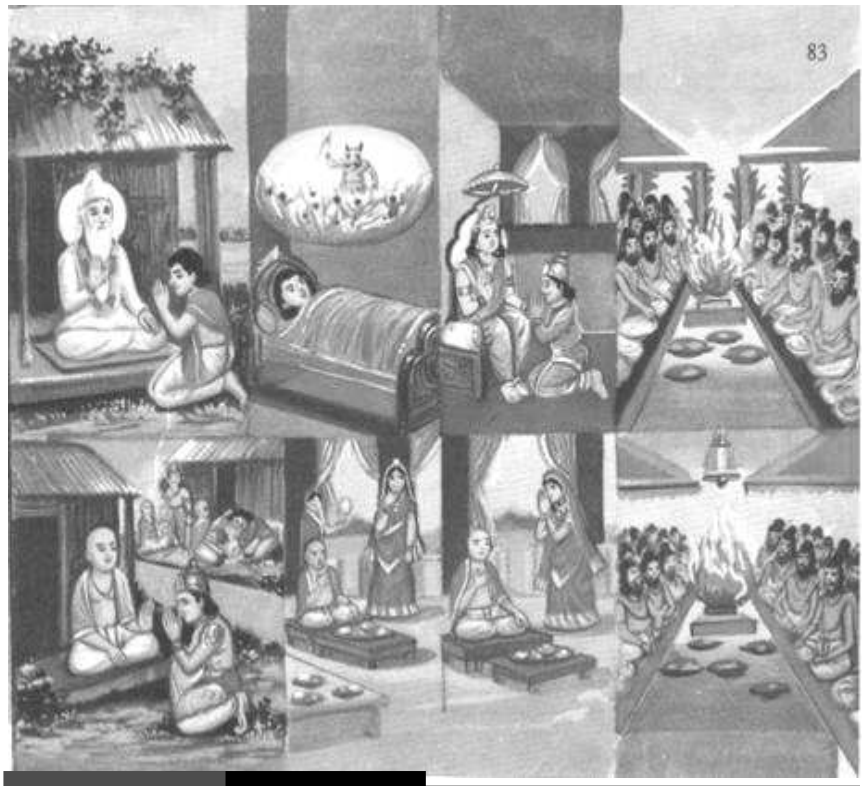

इस भूमण्डलपर भक्ति में भारत देश श्रेष्ठ है। भारत अध्यात्मवादी देश है, ब्रह्मविद्या की भूमि है, भक्ति की भूमि है। भारत में भगवान के जितने अवतार हुए, उतने किसी अन्य देश में नहीं हुए। इसी कारण से देवतागण भी भारत देशमें उत्पन्न मनुष्यों की महिमा गाते हुए भागवत में एक स्थान पर कहते हैं-

का अर्थ है ज्ञान। ज्ञान-भक्ति में रमण करनेवाला जो देश है, उसको भारत कहा गया है। स्वर्ग तो भोगभूमि है। वहाँ भक्ति सम्भव नहीं।

इस भूमण्डलपर भक्ति में भारत देश श्रेष्ठ है। भारत अध्यात्मवादी देश है, ब्रह्मविद्या की भूमि है, भक्ति की भूमि है। भारत में भगवान के जितने अवतार हुए, उतने किसी अन्य देश में नहीं हुए। इसी कारण से देवतागण भी भारत देशमें उत्पन्न मनुष्यों की महिमा गाते हुए भागवत में एक स्थान पर कहते हैं-

अहो अमीषां किमकारिशोभनं प्रसन्न एषां स्विदुत स्वयं हरिः।
यैर्जन्म लब्धं नृषु भारताजिरे मुकुन्दसेवौपयिकं स्पृहा हि नः।।

ओह! इन मनुष्यों ने क्या पुण्य किया है कि इनके ऊपर हरि प्रसन्न हुए हैं, जिससे हरि-सेवा में समर्थ मनुष्य जन्म इनको भारतभूमि में प्राप्त हुआ है। हम भी इसकी अभिलाषा करते हैं।

देवताओं की भी ऐसी इच्छा होती है कि भगवान कृपा करके हमको भारत में जन्म दें। स्वर्ग में सबको एक समान सुख नहीं मिलता। स्वर्ग में पुण्यों की न्यूनाधिकता के अनुसार सुखमें विषमता रहती है। विषमता बड़ा दुःख है। स्वर्गमें स्थित देवताओंको भय रहता है कि एक दिन हमारा पतन होनेवाला है। जब देवताओं के पुण्य भोगोंकी समाप्ति होती है तब वे मनुष्य योनि में जन्म लेते हैं। मनुष्य जब पाप करता है तो पशु बनता है। इसलिए देवता ऐसी इच्छा रखते हैं कि हमारे पुण्यों का जब क्षय होवे तो कृपा करके भगवान हमें भारतभूमि में किसी वैष्णवके घर में जन्म दें, तो हम उस जन्म में प्रभु की सेवा, स्मरण और भक्तिमय जीवन व्यतीत करें श्रीराम तथा श्रीकृष्ण का दर्शन करके कृतार्थ होवें :-

मानव समाज को श्रीरामजी ने ज्ञान दिया है।

एहि तन कर फल विषय न भाई।
स्वर्गउ स्वल्प अन्त दुखदाई।।
नर तनु पाइ विषय मन देहीं।
पलटि सुधा ते सठ विष लेहीं।।

यह मनुष्य-शरीर विषय भोगों के लिए नहीं मिला है। विषय सुख तो पलमात्रके लिए ही स्वर्ग सुख जैसा है। अन्त में तो इसमें दुःख ही दुःख है। मनुष्य-शरीर प्राप्त करके भी जो मनुष्य विषय-भोगों में लगा रहता है, वह मानो अमृत देकर बदले में विष ले रहा है।

मनुष्य शरीर पुण्य करने के लिए मिला है। यह परमात्माकी आराधना करनेके लिए है, परमात्मा के दर्शन करने के लिए है परमात्माके दर्शन से बहुत शान्ति प्राप्त होती है। परमात्माके दर्शन का आनन्द जिसको मिला है उसके मन के ऊपर सांसारिक दुःखों का बहुत असर नहीं होता। इसलिए तुम भी नित्य नियम से दर्शन करते रहो।

❑

हकलाते हैं तो तेजपत्ते का सेवन कीजिये

अल्का सर्वत मिश्रा

अक्सर हमें पुलाव बिरयानी की प्लेट में तेजपात नजर आता है जिसे हम बड़े करीने से किनारे कर देते हैं। आपको पता है कि ये बहुत चमत्कारी औषधि है!

इसका पेड़ पचीस फुट तक ऊँचा होता है और इस पर पीले रंग के फूल लगते हैं। इसमें रासायनिक खोज करने पर तीन तरह के तेल पाए गए हैं। उतपत्त तेल, यूजीनाल और आइसो यूजीनाल। इसे हिन्दी में तेजपात और संस्कृत में तमालपत्र कहते हैं। इसे वैज्ञानिक भाषा में Cinnamomum Tamala कहते हैं।

आइये इसके औषधीय गुणों पर दृष्टिपात करें-

हकलाना-तेजपात के टुकड़ों को जीभ के नीचे रखा रहने दें, चूसते रहे। एक माह में हकलाना खत्म हो जाएगा।

दमा में-तेजपात, पीपल, अदरक, मिश्री सभी को बराबर मात्रा में लेकर चटनी पीस लीजिए। 1-1 चम्मच चटनी रोज खाएं 40 दिनों तक, फायदा सुनिश्चित है।

दांतों के लिए-सप्ताह में तीन दिन तेजपात के बारीक चूर्ण से मंजन कीजिए। दांत मजबूत होंगे, दांतों में कीड़ा नहीं लगेगा, ठंडा गरम पानी नहीं लगेगा, दांत मोतियों की तरह चमकेंगे।

कीड़े से बचाने के लिए-कपड़ों के बीच में तेजपात के पत्ते रख दीजिए, ऊनी, सूती, रेशमी कपडे कीड़ों से बचे रहेंगे। अनाजों के बीच में 4-5 पत्ते डाल दीजिए तो अनाज में भी कीड़े नहीं लगेंगे। उनमें एक दिव्य सुगंध जरूर बस जायेगी।

शारीरिक दुर्गन्ध-अनेक लोगों के मोजों से दुर्गन्ध आती है ,वे लोग तेजपात का चूर्ण पैर के तलुवों में मल कर मोजे पहना करें। पर इसका मतलब ये नहीं कि आपके मोजे महीनों तक धुलें ही न। वैसे भी अंदरूनी कपड़े और मोजे तो रोज धुलने चाहिए। मुंह से दुर्गन्ध आती है तो तेजपात का टुकड़ा चबाया करें। बगल के पसीने से दुर्गन्धआती है तो तेजपात का चूर्ण पाउडर की तरह बगलों में लगाया करें।

आँखों की रोशनी-अगर अचानक आँखों कि रोशनी कुछ कम होने लगी है तो तेजपात के बारीक चूर्ण को सुरमे की तरह आँखों में लगाएं। इससे आँखों की सफाई हो जायेगी और नसों में ताजगी आ जायेगी जिससे आपकी दृष्टि तेज हो जायेगी। इस प्रयोग को लगातार करने से चश्मा भी उतर सकता है।

गैस-पेट में गैस की वजह से तकलीफ महसूस हो रही हो तो 3-4 चुटकी या 4 मिली ग्राम तेजपात का चूर्ण पानी से निगल लीजिए। एसीडिटी की तकलीफ में इसका लगातार सेवन बहुत फायदा करता है और पेट को आराम मिलता है।

हार्ट प्राब्लम-तेजपात का अपने भोजन में लगातार प्रयोग कीजिए, आपका हृदय मजबूत बना रहेगा, कभी हृदय रोग नहीं होंगे।

पागलपन-एक एक ग्राम तेजपात का चूर्ण सुबह शाम रोगी को पानी या शहद से खिलाएं।या तेजपात के चूर्ण का हलुआ बनाकर खिलाएं। सूजी के हलवे में एक चम्मच तेजपात का चूर्ण डाल दीजिए और बन गया तेजपात का हलवा।

जुकाम-दिन में चार बार चाय में तेजपत्ता उबाल कर पीजिए ,जुकाम-जनित सभी कष्टों में आराम मिलेगा या चाय में चायपत्ती की जगह तेजपत्ता डालिए। खूब उबालिए, फिर दूध और चीनी डालिए।

❑

सपने भी कुछ कहते हैं जानें सपनों का मतलब

कौशल पाण्डेय (ज्योतिष)

विज्ञान के अनुसार रोजमर्रा की जिंदगी में हमारी कुछ इच्छाएं अधूरी रह जाती हैं। यही इच्छाएं हमें अकसर सपने के रूप में दिखती हैं। लेकिन ज्योतिष शास्त्र मानता है कि सपने हमारे भविष्य का आइना होते हैं। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार हर सपने का मतलब या अर्थ होता है। कुछ सपनें हमारे भविष्य से तो कुछ बीते हुए पल की कहानी कहते हैं। सपनों की व्याख्या या स्वप्न फल के बारें में मत्स्य पुराण में विस्तार से बताया गया है।

कब और कौन से सपने होते हैं पूरे

मत्स्य पुराण के अनुसार स्वप्न फल से जुड़ी अहम जानकारी निम्न है।

माना जाता है कि अगर अच्छा सपना देखें तो उसके बाद सोना नहीं चाहिए। अच्छे सपने के बाद उठकर भजन या चिंतन करना चाहिए और सबसे जरूरी अच्छे सपने किसी को नहीं बताना चाहिए।

सूरज उगने से कुछ पहले अर्थात ब्रह्म मुहूर्त में देखे गए सपने का फल 10 दिनों में सामने आ जाता है।

माना जाता है कि रात के पहले पहर में देखे गए सपने का फल एक साल बाद, दूसरे पहर में देखे सपने का फल 6 महीने बाद आता है।

तीसरे पहर में देखे सपने का फल 3 महीने बाद और आखिरी पहर के सपने का फल एक महीने में सामने आता है।

दिन के सपनों पर ध्यान नहीं देना चाहिए।

क्या करें जब बुरा सपना आए?

मत्स्य पुराण के अनुसार बुरा सपना आए तो निम्न उपाय करने चाहिए।

सबसे पहले तो बुरा सपना आए तो सुबह उठते ही किसी को जरूर बता देना चाहिए।

इसके बाद स्नान कर के शिवजी का ध्यान करते हुए तुलसी के पौधे को पानी देना चाहिए। पानी देते समय तुलसी के पौधे के सामने अपना सपना कह देना चाहिए।

❑

सद्विचार

- ☞ हम अनित्य पदार्थों को नित्य समझ बैठे हैं।
- ☞ यह हम भारी भूल कर रहे हैं।
- ☞ क्या यह शरीर हमारा है?
- ☞ इस पर क्या भरोसा?
- ☞ इस पर इतना गर्व किसलिए?
- ☞ हम अस्थिर पदार्थों की कितनी न चिन्ता करते हैं?
- ☞ स्वयं क्या है, वह हम स्वयं सोचते ही नहीं।
- ☞ हम हैं सेठ, किन्तु स्वयं को मोटर समझ बैठे हैं,
- ☞ हम मकान के मालिक हैं।
- ☞ परन्तु स्वयं को मकान समझ बैठे हैं।
- ☞ हम अजर, अमर आत्मा हैं किन्तु स्वयं को शरीर समझ बैठे है।
- ☞ कैसी न शोक की बात।
- ☞ वह कुछ करो, जो रोते हुए आए थे और हंसते हुए जाओ।
- ☞ भलाई के काम करके भुला दो।
- ☞ हम रोते हुए आए हैं और हंसते हुए जाएं और हमारे लिए भले ही लोग रोते रहें।

दिन और रात

शैल अग्रवाल

बहुत समय पहले की बात है जब सृष्टि की शुरुआत ही हुई थी। दिन और रात-नाम के दो प्रेमी थे। दोनों में खूब गहरी पटती पर दोनों का स्वभाव बिल्कुल ही अलग-अलग था। रात सौंदर्य-प्रिय और आराम-पसंद थी तो दिन कर्मठ और व्यावहारिक, रात को ज्यादा काम करने से सख्त नफरत थी और दिन काम करते न थकता था। रात आराम करना, सजना- सँवरना पसंद करती थी तो दिन हरदम दौड़ते भागते रहना। रात आराम से धीरे-धीरे बादलों की लटों को कभी मुँह पर से हटाती तो कभी वापस उन्हें फिर से अपने चेहरे पर डाल लेती। कभी आसमान के सारे तारों को पिरोकर अपनी पायल बना लेती तो कभी उन्हें वापस अपनी चूनर पर टाँक लेती। लेटी-लेटी घंटों बहती नदी में चुपचाप अपनी परछाई देखती रहती। कभी चंदा-सी पूरी खिल जाती तो कभी सिकुड़कर आधी हो जाती। दूसरी तरफ बौखलाया दिन लाल चेहरा लिए हाँफता पसीना बहाता, हर काम जल्दी-जल्दी निपटाने की फिक्र में लगा रहता।

आमने-सामने पड़ते ही दिन और रात में हमेशा बहस शुरू हो जाती। दिन कहता काम ज्यादा जरूरी है और रात कहती आराम। दोनों अपनी-अपनी दलीलें रखते, समझने और समझाने की कोशिश करते पर किसी भी नतीजे पर न पहुँच पाते। जान नहीं पाते कि उन दोनों में आखिर कौन बड़ा है, गुणी है...सही है या ज्यादा महत्वपूर्ण है। हारकर दोनों अपने रचयिता के पास पहुँचे। भगवान ने दोनों की बातें बड़े ध्यान से सुनीं और कहा कि मुझे तो तुम दोनों का महत्व बिल्कुल बराबर का लगता है तभी तो मैंने तुम दोनों को ही बनाया और अपनी सृष्टि में बराबर का आधा-आधा समय दिया। गुण-अवगुण कुछ नहीं, एक ही पहलू के दो दृष्टिकोण हैं। हर अवगुण में गुण बनने की क्षमता होती है। पर रात और दिन को उनकी बात समझ में न आई और वहीं पर फिर से उनमें वही तू-तू, मैं-मैं शुरू हो गई।

हारकर भगवान ने समझाने की बजाय, थोड़े समय के लिए रात को दिन के उजाले वाली चादर दे दी और दिन को रात की अँधेरे वाली, ताकि दोनों रात और दिन बनकर खुद ही फैसला कर सकें। एक दूसरे के मन में जाकर दूसरे का स्वभाव और जरूरतें समझ सकें। तकलीफ और खुशियाँ महसूस कर पाएँ। और उस दिन से आज तक सुबह बनी रात जल्दी-जल्दी अपने सारे काम निपटाती है और रात बने दिन को आराम का महत्व समझ में आने लगा है। अब वह रात को निठल्ली और आलसी नहीं कहता बल्कि थकने पर खुद भी आराम करता है। सुनते हैं अब तो दोनों में कोई बहस भी नहीं होती। दोनों ही जान जो गए हैं कि अपनों में छोटा या बड़ा कुछ नहीं होता।

इस दुनिया में कोई भी व्यक्ति कम या ज्यादा महत्वपूर्ण नहीं। सबके अपने-अपने काम हैं, अपनी-अपनी योग्यता और जरूरतें हैं। जीवन सुचारु और शांतिमय हो इसके लिए काम और आराम, दोनों का ही होना जरूरी है। आराम के बिना काम थक जाएगा और काम के बिना आराम परेशान हो जाएगा। अब दिन खुश-खुश सूरज के संग आराम से कर्मठता का संदेश देता है। जीवन पथ को उजागर करता है और रात चंदा की चाँदनी लेकर घर-घर जाती है, थकी-हारी दुनिया को सुख-शांति की नींद सुलाती है। हर शाम-सुबह वे दोनों आज भी अपनी-अपनी चादर बदल लेते हैं. . .प्यार से गले मिलते हैं इसीलिए तो शायद दिन और रात के वह संधि-पल जिन्हें हम सुबह और शाम के नाम से जानते हैं आज भी सबसे ज्यादा सुखद और सुहाने लगते हैं।

कौन जाने यह विवेक का जादू है या संधि और सद्भाव का...या फिर उस संयम का जिसे हम प्यार से परिवार कहते है। शायद सच में अच्छा बुरा कुछ नहीं होता प्यार और नफरत बस हमारी निजी जरूरतों का ही नाम है... बस हमारी अपनी परछाइयाँ हैं। पर अगर कोण बदल लो तो परछाइयाँ भी तो घट और बढ़ जाती हैं। तभी तो हम आप उनके बच्चे, जो यह मर्म समझ पाए, अपने पूर्वजों की बनाई राह पर आज तक खुशी-खुशी चलते हैं।

❑

चिन्तन

किसी की मजबूरियों
पर मत हंसिए।
कोई मजबूरियाँ खरीद
कर नहीं लाता।

डरिए वक्त की मार से
क्योंकि।
बुरा वक्त किसी को
बताकर नहीं आता।

महामंडलेश्वर
डॉ. स्वामी उमाकान्तानंद
सरस्वती जी महाराज

पीढ़ियों में अन्तर

❑ रमन शर्मा

यह अन्तर उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि देश, भाषा, संस्कृति एवं भारतवर्ष में तो जाति का भी, अन्तर है। इतिहास गवाह है कि पीढ़ियों के इस अंतर ने अनेक ऐतिहासिक संघर्षों को जन्म दिया है। प्रहलाद का अपने पिता के विरुद्ध विद्रोह से लेकर मुगल शाहज़ादों का अपने वृद्ध पिताओं के खिलाफ़ बग़ावत इस पीढ़ी के अन्तर की ही गाथा है।

'पापा, आप भी किस पुराने जमाने की बात लेकर बैठ गए। अब वक्त बदल गया है।' 'पापा भी वही दकियानूसी बातें करते रहते हैं। समय कहां से कहां पहुंच गया और ये हैं कि कहते हैं कि उनके समय में यह होता था और वह होता था।' ये डायलॉग केवल टी.वी. सीरियलों में ही नहीं अपितु वास्तविक जीवन में भी सुनाई पड़ जाते हैं। सोच के इस अन्तर को ही पीढ़ियों का अन्तर कहते हैं। यह अन्तर उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि देश, भाषा, संस्कृति एवं भारतवर्ष में तो जाति का भी, अन्तर है। इतिहास गवाह है कि पीढ़ियों के इस अंतर ने अनेक ऐतिहासिक संघर्षों को जन्म दिया है। प्रहलाद का अपने पिता के विरुद्ध विद्रोह से लेकर मुगल शाहज़ादों का अपने वृद्ध पिताओं के खिलाफ़ बग़ावत इस पीढ़ी के अन्तर की ही गाथा है। आज भी औद्योगिक घरानों में पिता पुत्र के बीच चलने वाले मुकद्दमें पुराने इतिहास को दुहराते हुए से लगते हैं। संसार की प्रगति की कहानी वास्तव में पीढ़ियों के अन्तर की ही कहानी है। यदि नई पीढ़ी पुरानी पीढ़ी की चाल ढाल एवं तौर तरीकों से असंतुष्ट न होती तो संसार में आज कुछ भी नया नहीं होता। कोलिन्स के अंग्रेजी शब्द कोष में पीढ़ी उन लोगों के समूह को कहा गया है जो लगभग एक ही समय में उत्पन्न हुए हों। लगभग 30 वर्ष के पश्चात् ये लोग अपने से पूर्व की पीढ़ी का स्थान लेने के लिये तैयार हो जाते हैं। क्योंकि कोई भी अपना स्थान खोना पसंद नहीं करता। अत: इनमें तथा पूर्व की पीढ़ी में मतभेद एवं यहां तक की संघर्ष की स्थिति उत्पन्न होने लगती है। औसत आयु बढ़ने के कारण अब एक समय में दो नहीं चार पीढ़ियें अस्तित्व में रहती हैं। प्रथम पुरानी पीढ़ी के वे लोग जिनका समय अब बीत चुका है एवं समय की मुख्य धारा से अलग होकर जो एक ओर बैठे हुए हैं। दूसरे वे लोग जो राजनीति, उद्योग, व्यापार, शासन इत्यादि हर क्षेत्र में कब्जा जमाये हुए हैं। एक और पीढ़ी इनका स्थान लेने के लिये संघर्षरत हैं किन्तु अभी कामयाब नहीं हो सकी है। नवयुवकों की एक और खेप भी तैयार हो रही हैं जो दूर क्षितिज पर इस आशा से नजरें गड़ाये हैं कि समय बदलेगा एवं उन्हें भी कुछ कर दिखाने का अवसर प्राप्त होगा। पीढ़ियों के मध्य में जो अंतर होता है उसे हम तीन श्रेणियों में विभाजित कर सकते हैं-शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक। शारीरिक अन्तर अत्यंत स्पष्ट होता है। बच्चा जब छोटा है तो माता-पिता युवा होते हैं। उसके किशोर होने तक वे प्रौढ़ हो जाते हैं एवं जब वह पूर्ण युवा होता है तो उनकी शारीरिक शक्तियां ढलान की ओर बढ़ने लगती हैं। मानसिक विचारों एव जीवनादर्शों में भी अन्तर आने लगता है। मनोवैज्ञानिक रूप से भी युवाओं एवं प्रौढ़ों में पर्याप्त अन्तर होता है एवं कभी-कभी संघर्ष की स्थिति आ जाती है। युवा आदर्शवादी होते हैं जब कि प्रौढ़ अपने अनुभवों के बल पर दावा करते हैं कि उन्होंने दुनिया देखी है एवं वे कल्पना लोक में रहना पसंद नहीं करते। युवा प्रौढ़ों को रुढ़िवादी करार देते हैं एवं उनके कार्यकलापों से उभरा असंतोष युवाओं में कुंठा का कारण बनता है।

पीढ़ियों का अन्तर सबसे अधिक परिवार तथा समाज में दृष्टिगोचर होता है। जब तक बच्चा छोटा होता है, वह माता-पिता के अधिकार एवं अनुशासन को सहन करता है क्योंकि वह शारीरिक एवं आर्थिक रूप से उन पर निर्भर रहता है। किन्तु जैसे ही वह युवावस्था को प्राप्त होता है एवं घर के बाहर निकलता है माता-पिता का यही अधिकार आपसी संबंधों में तनाव का कारण बन जाता है। प्राय: ही युवा अपने भविष्य का जो खाका खींचते हैं उसमें माता-पिता का कोई स्थान नहीं होता। माता-पिता ने पुत्र का लालन-पालन किया है अत: वे उससे बहुत सी आशायें लगाये होते हैं। किन्तु प्राय: ही ये आशायें धूल धूसरित हो जाती हैं। आधुनिक युग में

यह समस्या और भी विकट हो गई है। आज के शिक्षा संस्थान केवल आधुनिक शिक्षा ही नहीं देते, वे नवयुवकों के मस्तिष्क को आधुनिक विचारों से भी परिपूर्ण कर देते हैं। संयुक्त परिवार प्रणाली धीरे-धीरे टूट रही है। परिवार भी छोटे-छोटे होते जा रहे हैं। माता-पिता दोनों की ही महत्वाकाक्षाएं आकाश को छूने लगती हैं: संतान की अपने कैरियर को लेकर एवं माता-पिता की संतान को लेकर। भारतीय समाज संक्रांति काल से गुजर रहा है। कभी इस समाज के आदर्श दशरथ के पुत्र राम एवं ययाति के पुत्र यदु एवं पुरु हुआ करते थे। जहां पिता की आज्ञा का पालन बिना एक क्षण सोचे विचारे किया जाता था। दूसरी ओर आज का युवक उस पाश्चात्य समाज को आदर्श बनाये हुए हैं जहां संतान के युवा होते ही माता-पिता उनके जीवन से दूर हो जाते हैं। आधुनिक भारतीय युवा पीढ़ी इन दोनों अतिवादी प्रणालियों के मध्य में कहीं झूल रही है अत: संघर्ष और भी बढ़ गया है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् युवा वर्ग में असंतोष कुछ अधिक ही बढ़ा है। ऊपर हमने दो कारण, आधुनिक शिक्षा एवं पाश्चात्यीकरण गिनाये थे। किन्तु 1947 से अब तक कुछ और भी परिवर्तन हुए हैं। आजादी के पूर्व के राजनैतिक दल एवं राजनेता तथा उसके पश्चात् अस्तित्व में आये दलों एवं नेताओं में एक मौलिक अंतर है। यद्यपि उन पुराने पीढ़ी के बहुत कम व्यक्ति आज जीवित हैं। किन्तु जहां इन दलों एवं नेताओं ने आज़ादी की लड़ाई लड़ी थी, वहीं वे सत्ता को अपनी बपौती भी समझते थे। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् जो दूसरे राजनैतिक दल बने एवं विशेष रूप से उन नये दलों की युवा पीढ़ी उनके इस दावे को स्वीकार करने को तैयार नहीं थी। परिणाम स्वरूप लगभग सभी दलों में यूथ विंग बन गये जिन्होंने पुराने नेताओं के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। प्राचीन समय से ही हमारे देश की अर्थ व्यवस्था कृषि पर आधारित थी। यह व्यवस्था न केवल पितृ सत्तात्मक समाज को जन्म देती है अपितु उसका पोषण करके उसे सुदृढ़ भी करती है। कारण यह है खेती का कार्य पुत्र अपने पिता से सीखता है अत: पिता केवल पिता नहीं अपितु शिक्षक भी होता है। उसका अधिकार केवल पुत्र के शरीर पर ही नहीं अपितु मन एवं मस्तिष्क पर भी होता है। किन्तु जैसे-जैसे औद्योगिकीकरण होता है संतान पर पिता की यह पकड़ ढीली पड़ती जाती है। पिता खेती का कार्य तो सिखा सकता है किन्तु इंजिनियरिंग एवं विज्ञान की शिक्षा तो नहीं दे सकता। उसके लिये विशेषज्ञों की आवश्यकता होती है। पुत्र को नौकरी भी कहीं दूर स्थान पर मिलती है। फलस्वरूप पिता पुत्र के मध्य दूरियां बढ़ जाती हैं एवं पीढ़ियों का अन्तर जो केवल मानसिक स्तर तक सीमित था भौतिक रूप में भी प्रकट होने लगता है।

आधुनिक भारत में पीढ़ियों का यह अन्तर केवल व्यक्तिगत एवं पारिवारिक स्तर तक ही सीमित नहीं है अपितु राष्ट्रीय स्तर पर भी प्रकट होने लगता है। नवयुवकों को जहां भी ऐसा लगता है कि उन्हें वह सब कुछ नहीं मिल रहा है जिसके वे हकदार हैं, पुरानी पीढ़ी उनकी भावनाओं एवं कठिनाईयों को नहीं समझ पा रही है या समझकर भी अनदेखा कर रही है तो वहीं असंतोष का लावा फूट पड़ता है एवं युवा आन्दोलन हिंसक हो उठते हैं। इन आन्दोलनों को केवल अनुशासनहीनता या पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव का परिणाम कहने मात्र से काम चलने वाला नहीं है। इन आन्दोलनों के कारणों का गहराई से विश्लेषण करके उनका निराकरण करना होगा एवं युवा पीढ़ी की आकांक्षा के रास्ते में जो बाधाएं हैं उन्हें यथाशक्ति दूर करना होगा। परिवर्तन प्रकृति का नियम है। चिर पुरातन, चिर नवीन यह सृष्टि इसी आधार पर चलती है। समाज, राष्ट्र एवं समस्त मानवता के हित के लिये यही श्रेयस्कर है कि पुराने में जो कुछ उत्तम उसका नवीन के साथ समन्वय हो एवं इस प्रकार 'सर्वे भवन्तु सुखिन:' का मूल मंत्र चरितार्थ हो। परिवर्तन कभी-कभी असुविधाजनक होता है, किन्तु पुरानी पीढ़ी को उसे स्वीकार करना ही होगा। नई पीढ़ी को भी यह समझना होगा कि पुराने में बहुत कुछ अच्छा है एवं उसे स्वीकार किया जाना चाहिए।

एक हिन्दी कवि ने भी इन्हीं भावों को इस प्रकार व्यक्त किया है-

बगिया की शोभा को बढ़ाते थे जो फूल कभी,
पतझड़ में झड़ के माटी में मिल जाते हैं।
विनाश के बाद होता दुनिया में सृजन सदा,
बसन्त के आगमन पर गुंचे खिल जाते हैं।
परिवर्तन तो शाश्वत नियम रुक ना पाएगा कभी,
दु:ख के साथ में सुख यूं ही मिल जाते हैं।
गुजरा हुआ ज़माना कितना भी अच्छा लगे,
आने वाले समय में सब हिल मिल जाते हैं।

❑

पत्रिका संबंधी किसी भी शिकायत के लिए सम्पर्क करें। हरिद्वार

बृजेश उपाध्याय
08630937659
09557509556
08882763352

विजेता हर काम को सही तरह से करते हैं

ज्ञानी पंडित

एक समय की बात है, एक लकडहारा एक लकड़ी के व्यापारी से कोई काम मांगने आया और उसे वहाँ काम मिल भी गया। वे उसे अच्छे खासे पैसे देते थे इसी वजह से उस लकडहारे ने अपनी तरफ से सबसे अच्छा काम करने का निश्चय किया। उसके मालिक ने उसे एक कुल्हाड़ी दी और जिससे उसे लकड़ी काटनी थी।

पहले ही दिन उस लकडहारे ने 18 पेड़ काटे। मालिक ने खुश होकर कहा, बहुत अच्छे, बधाई हो!, इसी तरह आगे बढ़ते जाओ! अपने मालिक के इन शब्दों से उसे बहुत प्रेरणा मिली, लकडहारे ने अगले दिन और अधिक मेहनत से काम किया, लेकिन उस दिन वह केवल 15 पेड़ ही ला पाया। तीसरे दिन उसने और ज्यादा कोशिश की, लेकिन तीसरे दिन भी वह केवल 10 पेड़ ही ला पाया और जैसे-जैसे दिन बीतते गये पेड़ो की संख्या कम होते गयी।

ये सब देखते हुए उस लकडहारे ने सोचा की, मैं अपनी ताकत खोता जा रहा हूँ। तभी वो अपने मालिक के पास गया और उससे क्षमा मांगने लगा और कहने लगा की उसे कुछ समझ नहीं आ रहा है की उसके साथ क्या हो रहा है।

तभी मालिक ने पूछा की, तुमने पिछली बार कब अपनी कुल्हाड़ी को तेज (धार देना) किया था?

लकडहारे ने कहा की तेज? मुझे कुल्हाड़ी तेज करने का समय ही नहीं मिलता। मैं पेड़ों को काटने में ही व्यस्त रहता हूँ। तब मालिक ने कहा की बराबर हैं जब तुम्हें पहली बार कुल्हाड़ी दी थी तब वो बहुत तेज थी लेकिन जैसे-जैसे उस कुल्हाड़ी से तुम पेड़ काट रहें हो तो उसकी धार दिन-ब-दिन कम हो रही हैं और इसलिए तुम पहले जितनी ही मेहनत करके कम पेड़ काट पा रहें हो। हमारा जीवन भी इसी तरह का है। हम जीवन में इस कदर व्यस्त हो जाते है की हमारे पास कुल्हाड़ी तेज करने का समय ही नहीं होता है। आज की दुनिया में, हर कोई अपने-अपने कामों में पहले की तुलना में ज्यादा व्यस्त है, लेकिन फिर भी कम खुश है।

ये सब क्यों? क्या ये सब इस वजह है की हम कैसे रहना ये भूल गये है? निश्चित ही हमारे जीवन में बहुत से काम हमें करने होते है। लेकिन इन सब कामों में व्यस्त होते हुए हम हमारे जीवन के सबसे महत्वपूर्ण कामों जैसे अपना व्यक्तित्व जीवन, अपने सह-मित्रों को समय देना, अपने परिवार को समय देना, खुद को समय देना इन सभी को भूल जाते है।

❑

ऋषि चिन्तन के सान्निध्य में

बुरा जो देखन मैं चला

पुराने जमाने की बात है। एक गुरुकुल के आचार्य अपने शिष्य की सेवा भावना से बहुत प्रभावित हुए। विद्या पूरी होने के बाद शिष्य को विदा करते समय उन्होंने आशीर्वाद के रूप में उसे एक ऐसा दिव्य दर्पण भेंट किया, जिसमें व्यक्ति के मन के भाव को दर्शाने की क्षमता थी। शिष्य उस दिव्य दर्पण को पाकर प्रसन्न हो उठा। उसने परीक्षा लेने की जल्दबाजी में दर्पण का मुंह सबसे पहले गुरुजी के सामने कर दिया। वह यह देखकर आश्चर्यचकित हो गया कि गुरुजी के हृदय में मोह, अहंकार, क्रोध आदि दुर्गुण परिलक्षित हो रहे थे। इससे उसे बड़ा दुख हुआ। वह तो अपने गुरुजी को समस्त दुर्गुणों से रहित सत्पुरुष समझता था। दर्पण लेकर वह गुरुकूल से रवाना हो गया। उसने अपने कई मित्रों तथा अन्य परिचितों के सामने दर्पण रखकर परीक्षा ली। सब के हृदय में कोई न कोई दुर्गुण अवश्य दिखाई दिया। और तो और अपने माता वपिता की भी वह दर्पण से परीक्षा करने से नहीं चूका। उनके हृदय में भी कोई न कोई दुर्गुण देखा, तो वह हतप्रभ हो उठा। एक दिन वह दर्पण लेकर फिर गुरुकुल पहुंचा। उसने गुरुजी से विनम्रतापूर्वक कहा, 'गुरुदेव, मैंने आपके दिए दर्पण की मदद से देखा कि सबके दिलों में नाना प्रकार के दोष हैं।' तब गुरु जी ने दर्पण का रुख शिष्य की ओर कर दिया। शिष्य दंग रह गया. क्योंकि उसके मन के प्रत्येक कोने में राग, द्वेष, अहंकार, क्रोध जैसे दुर्गुण विद्यमान थे। गुरुजी बोले, 'वत्स यह दर्पण मैंने तुम्हें अपने दुर्गुण देखकर जीवन में सुधार लाने के लिए दिया था दूसरों के दुर्गुण देखने के लिए नहीं। जितना समय तुमने दूसरों के दुर्गुण देखने में लगाया उतना समय यदि तुमने स्वयं को सुधारने में लगाया होता तो अब तक तुम्हारा व्यक्तित्व बदल चुका होता। मनुष्य की सबसे बड़ी कमजोरी यही है कि वह दूसरों के दुर्गुण जानने में ज्यादा रुचि रखता है। वह स्वयं को सुधारने के बारे में नहीं सोचता। इस दर्पण की यही सीख है जो तुम नहीं समझ सके।'

-पं. श्रीराम शर्मा, आचार्य

आजादी कितनी प्यारी है
एक ऊँट

साभार

एक बार एक ऊँट अपने मालिक की नकेल से भाग खड़ा हुआ। भागते-भागते उसके रास्ते में एक नदी आ गयी। अब आगे भागने का रास्ता बंद हो गया था उसने गौर किया कि भागते-भागते उसने रास्ते में हरे -भरे पेड़-पौधे और खेत छोड़ दिए थे अगर वो चाहता तो बड़े अच्छे से भागते हुए पेड़ों से पत्तियों को खाकर अपना पेट भर सकता था लेकिन उसने ऐसा नहीं किया क्योंकि उसे जल्दी से जल्दी बहुत दूर भाग लेना था।

लेकिन अब नदी आ जाने से उसके आगे जाने का रास्ता बंद हो गया था और वह थककर वहीं बैठ गया और वह थकान के मारे बिलबिला भी नहीं सकता था क्योंकि उसे डर था कहीं शोर को सुनकर उसका मालिक उसे यहाँ आकर फिर से नहीं पकड़ ले और जबकि उसने आसपास नजर उठाकर देखा तो सिवाय रेत के टीलों के उसे कुछ नहीं दिखाई दिया। उसे खूब भूख लगी लेकिन वहाँ पानी के सिवाय कुछ नहीं था इसलिए ऊँट लाचार था दो-तीन दिन बीत गये। एक दिन एक कौवे को उसकी लाचारी देख कर दया आई।

वो ऊँट के पास आया और उससे बोला की ऊँट भाई मैं उड़ता हूँ तुम मेरे पीछे-पीछे चलो मैं तुम्हें किसी हरे-भरे खेत की ओर ले चलता हूँ तुम अपना पेट भर लेना वहाँ से ऊँट बड़ा प्रसन्न हुआ लेकिन चलने को

लेकिन अब नदी आ जाने से उसके आगे जाने का रास्ता बंद हो गया था और वह थककर वंही बैठ गया और वह थकान के मारे बिलबिला भी नहीं सकता था क्योंकि उसे डर था कंही शोर को सुनकर उसका मालिक उसे यंहा आकर फिर से नहीं पकड़ ले और जबकि उसने आस पास नजर उठाकर देखा तो सिवाय रेत के टीलों के उसे कुछ नहीं दिखाई दिया।

तैयार जैसे ही हुआ उसे एक बात याद आई और उसने कौवे से पूछा कि भाई चल तो मैं लूँगा लेकिन ये बताओ क्या वहाँ के खेतों में कोई आदमी तो नहीं होगा न इस पर कौवा हँस दिया और बोला भला हर खेत आदमी के बिना कैसा होगा। तब ऊँट ने कहा तब तो मैं यही अच्छा हूँ और खिन्न हो गया। कौवे ने कहा भाई तुम यहाँ तो भूखो मर जाओगे न लेकिन यहाँ दिन-रात नकेल डाल कर कोई सताया तो नहीं करेगा न ऊँट ने बड़ी सतोष भरे स्वर में जवाब दिया।

❑

इन भारतीय वीरांगनाओं को सलाम,

जिनके आगे अंग्रेजी हुकूमत ने घुटने टेके

प्रो. वीरेन्द्र अग्रवाल

ब्रिटिश हुकूमत को जड़ से उखाड़ फेकने के लिए देश में कई आंदोलन हुए, कुछ उग्र और कुछ शांति के साथ। अहिंसा के पुजारी महात्मा गांधी हों या सिंह, सुखदेव, राजगुरु या फिर नेताजी, हिंदुस्तान को गुलामी की बेडियों से भारतीय स्वतंत्र राष्ट्र में आजादी की अपनी अहमियत पहचाने और एक बार चिडिया बनाए, विश्व गुरु की पहचान में और दुश्मनों से लोहा लेने में न रही बल्कि महिलाओं ने भी कंधे से

फिर युवाओं के प्रेरणा भगत सबका एक ही मकसद था आजाद कराना। ताकि हर महक से सराबोर होकर फिर भारत को सोने की दिलाए। देश को स्वतंत्र कराने केवल पुरुषों की हिस्सेदारी कंधा मिलाकर दुश्मनों के दांत खट्टे कर दिए, किसी ने जंग के मैदान में तो किसी ने अपने आंदोलन से। 69वें स्वतंत्रता दिवस पर आज हम उन महिलाओं को सलाम कर रहे हैं, जिनके आगे अंग्रेजी हुकूमत ने घुटने टेक दिए।

रानी लक्ष्मीबाई

खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी वाली रानी थी। ये कविता किस भारतीय ने नहीं सुनी होगी। हर कोई इसे अपनी जुबां पर रखता है। लक्ष्मीबाई ने साल 1857 मे पुरुषों के वक्त पहन कर अंग्रेजों के विरुद्ध अपनी सेना का नेतृत्व किया था। उनके साहस और बहादुरी की प्रशंसा दुश्मनों ने भी की थी। हालांकि वे युद्ध में हार गई थीं लेकिन आत्म समर्पण करने से इनकार कर दिया था और दुश्मनों से लड़ते हुए शहीद हो गई थीं।

कस्तूरबा गांधी

महात्मा गांधी की पत्नी कस्तूरबा गांधी ने दृढ़ता और साहस से आजादी की लड़ाई में अपना अहम रोल अदा किया। उनकी पहचान केवल महात्मा गांधी की आजीवन संगिनी के रूप में ही नहीं रही है बल्कि उन्होंने आजादी की लड़ाई में कदम से कदम मिलाकर गांधीजी का साथ दिया। साथ ही कई बार स्वतंत्र रूप से और गांधीजी के मना करने के बावजूद उन्होंने जेल जाने और आंदोलनों में शिरकत करने का निर्णय लिया।

कमला नेहरू

कमला नेहरू एक सामान्य परिवार से थीं। वे स्वभाव से सरल व सीधी

थीं। शादी होने के बाद इलाहाबाद आ गई थीं। सीधी-सादी हिंदुस्तानी लड़की होने के वाबजूद जब मौका आया तो अंग्रेंजो से लोहा लेने के लिए खड़ी हो गईं। उन्होंने भूख हड़ताल की और जेल भी गईं। कमला नेहरू की सभी प्रेरणाओं में देश की आजादी ही सर्वोपरि थी। असहयोग आंदोलन और सविनय अवज्ञा आंदोलन में उन्होंने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया था। उनका निधन स्विटजरलैंड में टीबी के चलते हो गया था।

विजयलक्ष्मी पंडित

जवाहरलाल नेहरू की बहन विजयलक्ष्मी पंडित आजादी की लड़ाई में शामिल थीं। उन्होंने सविनय अवज्ञा आंदोलन में भाग लिया था, जिसके लिए उन्हें जेल जाना पड़ा। वे एक पढ़ी-लिखी और प्रबुद्ध महिला थीं। विजयलक्ष्मी ने देश के बाहर आयोजित सम्मेलनों का भारत की ओर से कई बार प्रतिनिधित्व किया। वे भारत की पहली महिला मंत्री थीं। साथ ही संयुक्त राष्ट्र की पहली भारतीय महिला अध्यक्ष भी थीं।

सरोजिनी नायडू

भारत कोकिला सरोजिनी नायडू एक स्वतंत्रता संग्राम सेनानी हैं। उन्होंने साल1905 में बंगाल विभाजन के दौरान वह भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में शामिल हो गईं। गोपालकृष्ण गोखले से एक ऐतिहासिक मुलाकात ने उनके जीवन की दिशा बदल दी थी। उन्होंने महिला सशक्तिकरण और महिला अधिकारों के लिए आवाज उठाई। वे सविनय अवज्ञा आंदोलन में गांधी जी के साथ जेल गईं। साथ ही उन्हें 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन में भी 21 महीने के लिए जेल जाना पड़ा था। स्वतंत्रता के पश्चात सरोजिनी भारत की पहली महिला राज्यपाल बनीं। उन्हें उत्तर प्रदेश का राज्यपाल बनाया गया। वे एक अच्छी कवियत्री भी थीं।

सुचेता कृपलानी

स्वतंत्रता आंदोलन के साथ सुचेता कृपलानी का भी नाम आता है। सुचेता ने आंदोलन के हर चरण में बढ़-चढ़कर

हिस्सा लिया और कई बार जेल गईं। उन्होंने भारत छोड़ो आंदोलन में योगदान दिया और नोआखली में महात्मा गांधी के साथ दंगा पीडित इलाकों में साथ चलते हुए पीडित महिलाओं की मदद की। साल 1946 में उन्हें असेंबली का अध्यक्ष चुना गया और 15 अगस्त 1947 को संविधान सभा में वंदेमातरम् भी गाया। 1958 से लेकर 1960 तक वह भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की जनरल सेक्रेटरी रहीं और 1963 में उत्तर प्रदेश की पहली मुख्यमंत्री बनीं। ❑

सूचना

समस्त पाठकों/ लेखकों, विचारकों तथा चिन्तकों से प्रस्तुत पत्रिका में प्रकाशनार्थ लेख आमंत्रित हैं। लेख, कविता, लघुकथा, आलेख, लघु-नाटिका, आध्यात्मिक प्रसंग, उवाच, समीक्षा, इतिहास-प्रमाण रचना, आधुनिक विज्ञानबद्ध, मानव धर्म एवं शुद्ध स्वच्छ रमणीय/ मानव धर्मी, प्रशासन-व्यवस्था, ज्योतिष विज्ञान, स्वास्थ संबंधी, योगदर्शन, भारतविद्या (इंडोलॉजी) आदि विषयों पर होने चाहिए। रचना साफ़ व लिखाई में फुल-स्केप काग़ज पर एक जैसी लिखी होनी चाहिए। लेख पूर्व-प्रकाशित नहीं होने चाहिए। लेख के साथ अपना नाम, शाखा सदस्यता, फोन-नंबर अवश्य दें।

व्रत त्योहार

ता.	व्रत एवं त्योहार

अप्रैल- 2017

1. श्री पंचमी
2. श्री यमुना ज., मेला यमुना छठ (मथुरा),स्कंद षष्ठी
4. श्री दुर्गाष्टमी, मेला नरी सेमरी देवी (मथुरा)
5. श्री दुर्गा नवमी, नवरात्र समाप्त, श्री रामनवमी, लट्ठ पूजा, नरी सेमरी देवी (मथुरा)
7. कामदा एकादशी व्रत, फूल डोलोत्सव ग्यारस (वृंदा.), फूल बंगला प्रा., श्री बांके बिहारी जी
8. प्रदोष व्रत, ता.10-पूर्णिमा व्रत
11. चैत्री पूर्णिमा, वैशाख स्नान प्रा., श्री हनुमान जयंती
13. मेष संक्रान्ति, वैशाखी पर्व (दिल्ली, पंजाब)
14. चतुर्थी व्रत चन्द्रोदय 21/40
22. वरुथनी एका.व्रत (सर्वे.), श्री बल्लभचार्य जयंती
24. प्रदोष व्रत, मासिक शिवरात्रि व्रत
26. देवपितृकार्ये अमावस्या
27. ऋषि पाराशर जयंती, देव दामोदर तिथि (आसाम)
28. शिवाजी जयन्ती, परशुराम जयन्ती
29. अक्षय तृतीया, श्री बांके बिहारी चरण दर्शन (वृंदा.), श्री बद्रीनाथ, श्री केदारनाथ दर्शन प्रा., (चारों धाम)
30. आद्य शंकराचार्य जयन्ती, श्री सूरदास जयंती

मई- 2017

2. श्री गंगा सप्तमी
3. श्री बगलामुखी जयन्ती, दुर्गाष्टमी
4. श्री जानकी नवमी
6. मोहनी एकादशी व्रत (सर्वे.)
7. टैगोर जयन्ती, ता. 8-प्रदोष व्रत
9. श्री नृसिंह जयन्ती
10. वैशाख पूर्णिमा, पूर्णिमा व्रत, कूर्म ज., बुद्ध पूर्णिमा
12. श्री नारद जयंती, शब्बेरात (मु.), वन विहार परिक्रमा (वृंदा.)
14. चतुर्थी व्रत चन्द्रो. रा.22/4, वृष संक्रांति
22. अपरा एकादशी व्रत (सर्वे.)
23. प्रदोष व्रत, ता.24-मासिक शिवरात्रि व्रत
25. देवपितृकार्य अमा., शनि जयंती, वट सावित्री वट, भावुका अमा.
26. करबीर व्रत, श्री गंगा स्नान प्रारंभ
28. रंभा तीज, पाक रोजे प्रा. (मु.)
29. शहीदी गुरु अर्जुनदेव दिवस
31. अरण्य षष्ठी, विन्ध्यवासिनी पूजा, साई टेऊ राम पुण्य तिथि (हरिद्वार)

सदस्यता फार्म

(यह फार्म भरकर डी.डी./मनी ऑर्डर के साथ भिजवाएं)

हां, मैं 'शाश्वत ज्योति' पत्रिका का सदस्य बनना चाहता/ चाहती हूं।

1 वर्ष 150 रुपये ☐

5 वर्ष 750 रुपये ☐

आजीवन 3000 रुपये ☐

रुपये (शब्दों में).....

.....

रुपये के लिए 'डिवाईन श्रीराम इण्टरनेशनल चेरीटेबल ट्रस्ट, हरिद्वार (हेतु शाश्वत ज्योति)' के नाम से डी.डी./मनी ऑर्डर नम्बर .....

दिनांक ..... बैंक .....

..... संलग्न है।

नाम .....

पता .....

.....

शहर ..... राज्य .....

पिन कोड ..... फोन .....

फैक्स ..... मोबाइल .....

ई-मेल .....

नोट : एक से अधिक सदस्यता लेने के लिए आप इस फार्म की फोटो कॉपी करवा सकते हैं।

आदर्श आयुर्वेदिक फार्मेसी, कनखल, हरिद्वार (उत्तराखंड)
फोन- 01334-262600, मोबाइल-09897034165
E-mail: Umakantmaharaj@hotmail.com

यहाँ से काटिये